are dying due to gastro-enteritis, etc. That is always being repeated. The Government said that they would be giving some wheat, but that also is not being distributed to the ration shops. A very serious situation is prevailing in Kerala. All the political parties and the Government itself have stated that the Central Government has not done justice to the people of Kerala and to the Government of Kerala. Therefore, I once again bring to the notice of this House and to the notice of the Government that urgent steps should be taken to send rice to Kerala. The people are once again engaged in this struggle. On the 7th of this month they conducted huge demonstrations. All the parties in Kerala and the people of Kerala have decided to conduct a one-day strike on the 21st instant. Almost all the political parties are united in this. People cannot be allowed to die for want of food. They want food and the Government must take serious steps to send food to Kerala. Otherwise, the situation will become very serious. I am bringing this matter to the notice of the Government.

THE TELEGRAPH WIRES (UNLAWFULPOSSESSION) AMENDMENTBILL,1974

THE MINISTER OF COMMUNICATIONS (SHRI S. D. SHARMA): Sir, I beg to move for leave to introduce a Bill further to amend the Telegraph Wires (Unlawful Possession) Act, 1950.

The question was proposed.

SHRI KALYAN ROY (West Bengal) : Sir, the telegraphic and postal services have practically collapsed in Calcutta and Madras. And 10 lakhs of mail have got accumulated in Calcutta and Madras. We are not getting any letters or telegrams from there. They are refusing to accept telegrams. That is a deplorable condition. The Minister has to say something about it.

MR. CHAIRMAN : The question is:

"That leave be granted to introduce a Bill further to amend the Telegraph Wires (Unlawful Possession) Act, 1950." *The motion was adopted.* SHRI S. D. SHARMA : Sir, I introduce the Bill. 5—645RSS/74

SHRI KALYAN ROY : Sir, he should say something about it.

THE EAST PUNJAB URBAN RENTRESTRICTION ACT (EXTENSION TOCHANDIGARH) BILL, 1974

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF HOME AFFAIRS, DEPARTMENT OF PERSONNEL AND ADMINISTRATIVE REFORMS AND DEPARTMENT OF PARLIAMENTARY AFFAIRS (SHRI OM MEHTA) : Sir, I beg to move for leave to introduce a Bill to extend the East Punjab Urban Restriction Act, 1949, to the Union Territory of Chandigarh.

The question was put and the motion was adopted.

SHRI OM MEHTA : Sir, I introduce the Bill.

DISCUSSION UNDER RULE 176 *RE* PRESENT SITUATION IN BIHAR.

MR. CHAIRMAN : Now, the discussion on Bihar situation will start. But before we start the discussion, I would request Shri Advani to complete his speech within 25 minutes so that others may have an opportunity.

SHRI LAL K. ADVANI (Delhi) : I expected to speak from twelve. I hope that I will be able to complete my speech by lunch. Otherwise, I will not be able to do justice. [The Vice-Chairman (Shrimati Purabi Mukhopadhyay] in the Chair.]

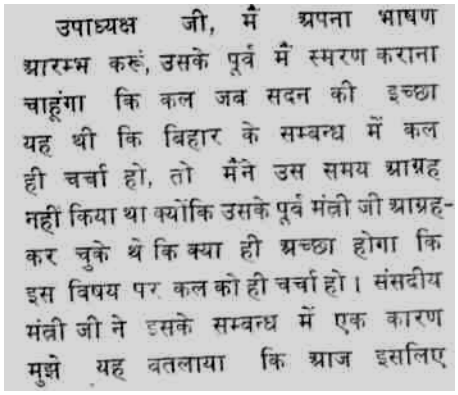

उपाध्यक्ष जी, मैं अपना भाषण आरम्भ करूं, उसके पूर्व मैं स्मरण कराना चाहूंगा कि कल जब सदन की इच्छा यह थी कि बिहार के सम्बन्ध में कल ही चर्चा हो, तो मैंने उस समय आग्रह नहीं किया था क्योंकि उसके पूर्व मंत्री जी आग्रह-कर चुके थे कि क्या ही अच्छा होगा कि इस विषय पर कल को ही चर्चा हो। संसदीय मंत्री जी ने इसके सम्बन्ध में एक कारण मुझे यह बतलाया कि आज इसलिए

[Shri Lal K. Advani]

चर्चा सम्भव नहीं है; क्योंकि गृह मंत्री जी दोनों सदन में एक साथ नहीं बैठ सकते हैं। क्योंकि लोक सभा में स्थगन प्रस्ताव आ रहा है, इसलिए गृह मंत्री जी वहां पर व्यस्त रहेंगे। यही कारण है कि आज इस विषय पर चर्चा हो रही है। लेकिन मुझे इस बात पर आपत्ति है और मैं आपत्ति उठाना चाहता हूं, लेकिन मैं विरोधी दल की ओर से यह आपत्ति नहीं उठा रहा हूं, बल्कि मैं सदन के समक्ष यह बात नोटिस में लाना चाहता हूं। यह सदन अपर हाउस है, लेकिन अपर हाउस होने के कारण, वह कोई जूनियर हाउस नहीं है।

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF HOME AFFAIRS, DEPARTMENT OF PERSONNEL AND ADMINISTRATIVE REFORMS AND DEPARTMENT OF PARLIAMENTARY AFFAIRS (SHRI OM MEHTA): I want to clarify that due to something going on in the other House, he could not come. In a minute he will be here. As soon as he is free, he will be here. You must know that I am also in the Ministry of Home Affairs.

श्री लाल आडवाणी : क्योंकि सदन में श्री ब्रह्मानन्द रेड्डी उपस्थित नहीं हैं, इसलिए मैंने अपना कर्त्तव्य समझा कि सदन का ध्यान इस बात की ओर दिला दूं ताकि सरकार कम से कम इस बात को तो स्पष्ट करे कि वे क्यों उपस्थित नहीं हैं?

श्री ओम मेहता : वे आयेंगे।

श्री लाल आडवाणी : उपसभाध्यक्ष महोदया, इसलिए जब बिहार की परिस्थिति पर चर्चा करने की मांग यहां पर उठी तो किसी ने इस बात पर आपत्ति नहीं उठाई कि बिहार तो इस देश का राज्य है, बिहार में कोई राष्ट्रपति शासन लागू नहीं है, यह कोई केन्द्र का विषय नहीं है, इस पर चर्चा नहीं होनी चाहिए, नहीं तो कभी भी किसी प्रदेश की परिस्थिति पर बहस की मांग की जाती है तो पहले पहल यही आपत्ति स्वाभाविक रूप से उठाई जाती है।

श्री ओम मेहता : हमने तो आपकी बात को मान लिया।

श्री लाल आडवाणी : यह जो उदारता आपने दिखाई, वह इसी कारण कि बिहार की परिस्थिति को सब लोग असाधारण मानते हैं, आप भी, हम भी। बिहार की परिस्थिति केवल बिहार की सीमाओं तक सीमित नहीं है। वहां पर जो कुछ हो रहा है वह सम्पूर्ण देश के वर्तमान और भविष्य को छूता है। यह बात भी इस में से निकलती है। मैं कोशिश करूंगा—यद्यपि मुश्किल है—कि अपनी बात को भावना से ऊपर रखूं; क्योंकि भावनाएं जुड़ी हुई हैं। हो सकता है कि आपकी भावना भी कहीं जुड़ी हुई हो। मेरी दाहिनी तरफ बैठे लोगों की भावना तो बहुत उग्र रूप से जुड़ी हुई है। मैं कोशिश करूंगा कि तर्क के स्तर पर अपनी बात रखूं और मैं अपेक्षा करता हूं—उनसे नहीं—आपसे कि आप तर्क के स्तर पर मुझे उत्तर दें।

बिहार की परिस्थिति को मैं दो परिप्रेक्ष्य में रखना चाहता हूं। एक व्यापक परिप्रेक्ष्य है जिसके अन्तर्गत 9 महीने से आन्दोलन चल रहा है। एक दूसरा सीमित परिप्रेक्ष्य है जब इस महीने में 4 नवम्बर को प्रदर्शन हुआ, बन्द हुआ तो उस बन्द का मुकाबला करने के लिए पटने में और दिल्ली में जो घटना हुई में उनका जिक्र करूंगा और आखिर में मैं अपने कुछ रचनात्मक सुझाव रखना चाहूंगा कि इस परिस्थिति से निकलने का क्या रास्ता हो सकता है।

उपसभाध्यक्ष महोदया, व्यापक परिप्रेक्ष्य में एक मोटा प्रश्न उठाया जाता है। प्रधान मंत्री जी ने अभी पिछले दिनों संसदीय दल के सामने बोलते हुए लोकतंत्र के अन्दर बिहार के आन्दोलन की वैधता को चुनौती दी।

She questioned the legitimacy of the movement because she described it as an extra constitutional movement. यह एक गैर-संवैधानिक आन्दोलन है जिसके लिए संविधान में कोई मान्यता नहीं है। लोकतंत्र संविधान के आधार पर चलता है और संविधान में जिन उपकरणों को मान्यता है उनका उपयोग करके आप सरकार को प्रभावित करिए, परिवर्तित करिए, बदलिए, यह तर्क दिया जाता है। मोटे तौर पर पहली बार देखने पर ही इस तर्क में काफी वजन दिखाई दे सकता है ,लेकिन आप विश्लेषण करेंगे तो मालूम होगा कि यह बिलकुल थोथला तर्क है। कहा जाता है कि हिन्दुस्तान में एक बार जनता ने किसी प्रतिनिधि को चुन लिया, किसी सरकार को चुन लिया, उसको पूरे कार्यकाल तक कार्य करने का अवसर देना चाहिए और जब उसका कार्यकाल समाप्त हो, तब सरकार ने काम ठीक नहीं किया, वह सरकार निकम्मी साबित हुई है, वह सरकार भ्रष्ट साबित हुई तो अपने वोट का उपयोग करके जनता उस सरकार को बदल दे, उस सरकार को परिवर्तित कर दे, प्रभावित कर दे, उसकी संख्या कम कर दे। इस तर्क के आधार पर श्री जयप्रकाश के नेतृत्व में चल रहे बिहार के आंदोलन की निन्दा की जाती है कि यह बिलकुल लोकतंत्र के खिलाफ है, अगर यह आंदोलन सफल हुआ तो हिंदुस्तान में लोकतंत्र का विनाश हो जायगा। यहां पर सबसे बड़ी चिल्लाहट इनकी तरफ से की जाती है। लोकतंत्र की दुहाई इनकी तरफ से सुनते हैं तो बड़ा आश्चर्य होता है। इसलिये मेरा कहना यह है कि क्या यह तर्क सही है कि लोकतंत्र के अन्दर जो सरकार एक बार चुनी जाती है या जो प्रतिनिधि एक बार चुने जाते हैं, उनको पूरे कार्यकाल तक काम करने का निर्बाध अधिकार है Unquestioned right, untrammelled right to rule for the entire term of five years ? मैं लोकतंत्र की जो व्याख्या पढ़ा हूं उसमें यह नहीं आता। बहुत सारे कारण होते हैं जिनके दबाव में वोट का उपयोग किये बिना सरकार को हटाना पड़ता है, सरकार को वहां से निकलना पड़ता है। वोट उनके खिलाफ न हो, न संसद् के अन्दर हो, न संसद् के बाहर, फिर भी सरकारें हटी हैं। ऐतिहासिक उदाहरण देने के लिये कहें तो चैम्बरलेन का उदाहरण है। उसके खिलाफ संसद् के अन्दर भी वोट नहीं हुआ, यह बात अलग है कि वोट होता तो वह हार जाता। वहां कंजर्वेटिव पार्टी का बहुमत था हाउस आफ कामंस में, लेकिन उसने इस्तीफा दे दिया। लोकतंत्र में उन्होंने लोकमत जो कि अभिव्यक्त नहीं हुआ था लेकिन उस लोकमत को पहचान कर उसके सामने झुक गया और त्यागपत्र दिया। 1939 का उदाहरण दिया और अब 1974 चल रहा है। इस वर्ष हमने अपनी आंखों से देखा है कि ऐसा व्यक्ति जिसको ऐतिहासिक जन समर्थन प्राप्त था, 1972 में राष्ट्रपति के चुनाव में श्री निक्सन को मैसिव मैन्डेट मिला था। आपको तो मैसिव मैन्डेट मिला है वह 43 परसेंट है। Forty-three per cent is your massive mandate. लेकिन निक्सन का 60 परसेंट से ज्यादा था। 60 प्रतिशत मैन्डेट प्राप्त करने के बाद भी अमरीका के जनमत ने यह ठीक नहीं समझा कि उसको 4 साल तक निर्बाध अधिकार राज करने का नहीं है। वह कोई भी पापाचार करे, कोई भी भ्रष्टाचार करे, उसको चलने नहीं देना चाहिये। किसी ने नहीं कहा कि उसको चलने देना चाहिये। आखिर में जब उन्होंने त्यागपत्र दिया तो किसी ने नहीं कहा कि उनका त्यागपत्र गलत है। उनको जनमत के सामने झुकना नहीं चाहिये था किसी ने भी नहीं कहा कि चाहे जो प्रेस कहे, जो जुडिशियरी कहे, किसी की परवा नहीं करनी चाहिये। मैं इसको मानता हूं कि लोकतंत्र अगर ठीक चल रहा है तो वहां पर मतदान हो कि न हो, संसद् के अन्दर मतदान हो कि न हो, विधान सभा के अन्दर मतदान हो कि न हो, अगर जनमत बहुत स्पष्ट रूप से प्रकट हुआ है और जनमत

[श्री लाल आडवाणी]

इस सरकार को नहीं चाहता, किसी विधायक को नहीं चाहता तो लोकमत अपेक्षा करता है कि वह त्यागपत्र दे दे। अगर वह त्यागपत्र नहीं देता जैसे कि निक्सन भी देना नहीं चाहता था, उसने कहा कि मेरे पास जितनी ताकत है उसका पूरा-पूरा उपयोग करके मैं वाशिंगटन पोस्ट को समाप्त कर दूंगा। आखिर उसके खिलाफ अभियान शुरू करने वाला वाशिंगटन पोस्ट का अखबार था, कोई बी० जी० वर्गीज जैसा बड़ा सम्पादक नहीं था, केवल दो साधारण रिपोर्टर कनिष्ठ पत्रकार वुडवर्ड और बर्न स्टीन थे। जब उनको पता लगा कि हाईयेस्ट एक्जीक्युटिव इस प्रकार का पापाचार कर रहा है तो उन्होंने छानबीन की और छानबीन करके इस बात को प्रमाणित किया कि राष्ट्रपति निक्सन का इस वाटरगेट कांड में हाथ है। वह प्रमाणित हो गया और प्रेस सारा का सारा वहां पर एक्टिव था। उसको इस बात की परवाह नहीं थी कि हमारे खिलाफ क्या कार्यवाही होगी ? हम लिखेंगे तो क्या होगा। अमरीका में प्रेस स्वतंत्र रूप से काम करता रहा। फिर जब मामला अदालत में गया, सुप्रीम कोर्ट में नहीं गया, मामूली अदालत में गया, जज सिरिका के पास जब मामला गया, उन्होंने कहा कि इसकी छानबीन होनी चाहिये और उनको लगा कि जब तक ह्वाइट हाउस के टेप्स यहां पर नहीं आयेंगे तब तक पता नहीं लगेगा। तो ह्वाइट हाउस के टेप्स लाने का आदेश दिया गया। वहां पर भी राष्ट्रपति निक्सन ने बहुत रिसिस्ट किया। यह जानते हुए भी कि जनमत मेरे खिलाफ है उन्होंने बहुत रिसिस्ट किया और चाहा कि मैं' 76 तक चलूं। लेकिन वहां पर जो लोकतंत्र है, जो उसका उपांग है, जुडिशियरी, प्रेस, न्यायपालिका यह सब सशक्त थे, ये सब स्वस्थ रूप से काम कर रहे थे। धन से काम कर रहे थे जनमत को प्रभावित करने के लिए और उसका प्रभाव सरकार पर डालने के लिये सक्रिय थे। इसलिये राष्ट्रपति निक्सन को दो साल के अंदर इस्तीफा देना पड़ा। मेरा प्रश्न आपसे यह है कि क्या हिंदुस्तान में ऐसी परिस्थिति आपने रहने दी है ? आज मैं एक क्षण के लिये मान लेता हूं कि बिहार में जनमत जो है उसको जयप्रकाश जी ने, भारतीय जनसंघ ने, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ ने, सोशलिस्ट पार्टी ने और सर्वोदय नेताओं ने भ्रष्ट किया है। एज्यूम करके चलता हूं कि हमने उनको गुमराह किया है, लेकिन गुमराह होने के बाद, जिस तरह राष्ट्रपति निक्सन का उसमें हाथ नहीं था, तब भी वहां की जनता इस नतीजे पर पहुंची कि राष्ट्रपति निक्सन का वाटरगेट कांड में हाथ है। इस के बाद भी हिंदुस्तान में कोई परिवर्तन नहीं हो रहा है। एक समय था जब कि 1959 में हमारे मित्र जो इधर बैठे हैं उनकी सरकार केरल में थी। यह लोक लोकतंत्र में विश्वास नहीं करते हैं, इसलिये इन्होंने ऐसी व्यवस्था की कि वहां पर लोकतंत्र चल ही न पाये। लोकतंत्र का गला घोंटने की इन्होंने व्यवस्था की। उस समय प्रधान मंत्री पंडित नेहरू थे और कांग्रेस की अध्यक्षता श्रीमती गांधी थीं। उन्होंने यह नहीं कहा था कि आंदोलन के द्वारा सरकार को नहीं बदलना चाहिये। एक्स्ट्रा कांस्टीट्यूशनल मीज का उपयोग लोकतंत्र के लिये नहीं होना चाहिये ऐसी बात उन्होंने नहीं कही। अभी पिछले दिनों बिहार के संदर्भ में प्रधान मंत्री ने यह वक्तव्य दिया कि गुजरात में हमने जो कुछ किया वह गलत था और हम वह गलती बिहार में नहीं दोहराना चाहते। मैं उस समय यह देख रहा था कि केरल के बारे में क्या कहती हैं, क्या केरल में 1959 में जो किया गया था, वह भी गलत था ? अगर गलत नहीं था, मैं भी मानता हूं कि वह गलत नहीं था, मैं चाहूंगा कि यहां पर जो कांग्रेस के मित्र बैठे हैं वे एक बार इसी राज्य सभा में 25 अगस्त, 1959 को प्रधान मन्त्री पंडित नेहरू ने जो भाषण दिया था उसको पूरा पढ़ें। उस समय हमारे भूपेश गुप्त ने काफी टीका-टिप्पणी की थी और जिस दृष्टिकोण का प्रतिपादन उस समय कर रहे थे, मुझे दुःख है आज आप लोग उसी का प्रतिपादन कर रहे हैं। उस समय

पंडित नेहरू ने जब राष्ट्रपति शासन लागू किया था, उन्होंने कहा था मुझे दुःख होता है ऐसा करते हुए लेकिन इसके अलावा वहां कोई चारा नहीं है । अगर ऐसा नहीं करेंगे तो यह एक प्रकार से वहां की जनता की इच्छा की अवमानना करना होगा और फिर घोषणा की कि यह रिबैलियन है, विद्रोह है । मैं कहना चाहता हूं कि पंडित नेहरू ने इसी राज्य सभा में कहा था कि यह एक प्रकार से जनता का मौलिक अधिकारों के खिलाफ विद्रोह है ।

"It is just like the basic right of the people to rebel. It is a basic right to rebel and you can do it, if a man rebels and faces the consequences of that rebellion. That is a different matter. Such basic rights everybody possesses, facing the consequences of the rebellion."

यह उन्होंने नहीं कहा कि अब केरल वालों को रोका जाना चाहिये, वहीं के कांग्रेस के लोग गलत बात कर रहे हैं । कम्युनिस्ट सरकार, नम्बूदरीपाद की सरकार को हटा देंगे; क्योंकि उनको समाज के अंदर इस सरकार के चलते लोकतंत्र नहीं बच सकता है । और इसी कारण उन्होंने इस बात की उपयुक्तता समझी कि वहां पर जन आंदोलन के द्वारा जब प्रैस कमजोर हो जाय, न्यायपालिका कमजोर हो जाए, जब विधान पालिका कमजोर हो जाय उसका कोई महत्व न रहे, हम विधान पालिका के सदस्य हैं, हम लेजिस्लेचर के सदस्य हैं, हम जानते हैं कि पिछले तीन सालों में क्या होता रहा है । हर सैशन में शुरू में पहले दिन एक लम्बी लिस्ट हमारे सामने अध्यादेशों की रखी जाती है । Often it becomes a Government by Ordinances. इस बार गनीमत है कि तीन ही थे वरन् 8—10 से कम नहीं होते हैं । यह तरीका मूलत: लेजिस्लेचर को डिक्लाइन कर चुका है । न्यायपालिका फैसला करती है, बहुत अच्छा फैसला करती है । सुप्रीम कोर्ट ने फैसला किया कि इलैक्शन्स के अंदर बिग मनी, ब्लैक मनी का जितना उपयोग हो रहा है, उसको समाप्त कया जाना चाहिये । न्यायपालिका ने कहा कि दल का खर्च प्रत्याशी के खर्च में नहीं जोड़ा जाना चाहिये । जो सीधे-सीधे उसके लिये खर्च किया गया है तो फिर प्रत्याशी के खर्च पर लिमिट रखने का महत्व नहीं रहता । हम तो यह जानते हैं कि आज जितना खर्चा पार्टी करती है उसके ऊपर भी कानून के द्वारा कोई प्रतिबन्ध लगना चाहिये, कोई अंकुश लगना चाहिये ।

न्यायपालिका ने कोई नेक सलाह दी तो उसके ऊपर निर्णय को निरस्त करने के लिये अध्यादेश जारी कर दिया । यह न्यायपालिका को कमजोर कर देगा । प्रैस के अंदर थोड़ी सी भी बात लिखी जाए बी० जी० वर्गीज के द्वारा तो उसको नाराजगी प्रगट करके हटा देंगे और फिर कहते हैं कि प्रधान मंत्री का इसमें कोई हाथ नहीं है । एक क्षण के लिए इसको मान भी लिया जाय, लेकिन लोगों ने इस बात को देखा है कि इतनी बड़ी कांग्रेस पार्टी और इतनी बड़ी कम्युनिस्ट पार्टी जो आय दिन बिरलाओं के बारे में पचासों बातें कहते हैं, इन्होंने एक दिन भी खड़े होकर नहीं कहा कि इतने बड़े सम्मानित पत्रकार को, इतने बड़े सम्मानित सम्पादक को बिना कारण बताये क्यों बर्खास्त कर दिया गया ? यह भी नहीं कहा कि यह बहुत गलत हुआ है । प्रधान मंत्री ने जिस दिन इस बात को इंकार किया था कि इसमें उनका हाथ है, लेकिन उस दिन उनकी ओर से कन्डेमनेशन का एक शब्द भी नहीं कहा गया और न ही इस बात को डिसएप्रूव किया गया । श्री बी० जी० वर्गीज को मालिकों की ओर से निकाला गया है, इसलिये यह नहीं कहा गया कि यह बहुत गलत काम हुआ है । यह भी नहीं कहा गया कि इसके ऊपर कार्यवाही होनी चाहिये या प्रेस कौंसिल को नोटिस देना चाहिये । *Interruption* मैं समझता हूं कि सचमुच में अब यह विषय प्रोपराइटर्स और सम्पादक के बीच का विषय नहीं रह गया है । यह अब राष्ट्रीय महत्व का विषय बन गया है । हिंदुस्तान में प्रैस की स्वाधीनता का यह प्रश्न हो गया है । ऐसी स्थिति में जनता की जानकारी के लिये श्री बी० जी० वर्गीज और

[श्री लाल आडवाणी]

मालिकों के बीच में जो पत्र-व्यवहार हुआ है वह प्रकाशित होना चाहिये।

मैंने यहां पर प्रेस का उल्लेख किया है, न्यायपालिका का उल्लेख किया है और विधान-पालिका का उल्लेख किया है। लोकतंत्र के ये खंबे जब कमजोर होते हैं तो जन-आंदोलन के स्वर उभड़ते हैं। यह स्वाभाविक है और इसको रोका नहीं जा सकता है। मेरे मित्र भी जो मेरी आलोचना करते हैं, वे भी कहते हैं कि राइट आफ रिकाल होना चाहिये।

SHRI BHUPESH GUPTA (West Bengal) : No. This is not our version of the right of recall.

SHRI LAL K. ADVANI : Yes, it is also a part of your programme.

SHRI BHUPESH GUPTA : Right of recall goes to the constituency. It does not go from Delhi to Patna. That is not the right of recall.

SHRI LAL K. ADVANI : That is all right. I am not yielding the floor to you.

AN HON. MEMBER : Don't yield.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI PURABI MUKHOPADHYAY) : Please do not interrupt.

श्री लाल आडवाणी : मैं एक मुद्दा बता रहा हूं। यह सवाल किया जाता है कि गुजरात की विधान सभा भंग हो गई, लेकिन क्या भ्रष्टाचार खत्म हो गया? क्या मंहगाई खत्म हो गई? मैं यह मानता हूं कि विधान सभा को भंग करने से भ्रष्टाचार खत्म नहीं हो जाता है। बिहार के आन्दोलन में जो लोग भाग ले रहे हैं, बहुत सारे लोग भाग ले रहे हैं और उनमें ऐसे लोग भी हैं जिन्होंने कभी राजनीति में भाग नहीं लिया। उनमें साहित्यकार, पत्रकार और बुद्धिजीवी हैं और युनिवर्सिटीज के प्राध्यापक भी आन्दोलन में भाग ले रहे हैं। क्या लोग बिना सोचे-समझे भाग ले रहे हैं? यह ठीक है कि विधान-सभा को भंग करने से भ्रष्टाचार खत्म नहीं हो जाता है, लेकिन लोकतंत्र में जनता की भावनाएं प्रतिस्थापित हो जाती हैं और जनता अपनी शक्ति को प्राप्त करती है और यह बात भी प्रमाणित होती है कि जनता में लोकतंत्र सर्वोपरि है। आज आप लोकतंत्र को सर्वोपरि मानते हैं। यहां पर हमारे सी० पी० आई० के मित्र बैठे हैं। मैं बार-बार सी० पी० आई० का नाम ले रहा हूं। बिहार में जो आन्दोलन हो रहा है, उसके पहले गुजरात में आन्दोलन हो चुका है। लेकिन बिहार आन्दोलन की भूमिका के रूप में पहली घटना क्या है, यह सवाल हमारे सामने है। यह घटना थी मधुबनी का चुनाव। मधुबनी के चुनाव में सब प्रकार के तरीकों से विरोधी दलों को और जनता को कुण्ठित करने की कोशिश की गई। उसमें गफ्फूर साहब चुने गए। इस चुनाव के बारे में कम्युनिस्ट पार्टी आफ इंडिया ने क्या कहा है, यह भी देखिये—

"What has happened in Madhubani has made it clear that if the ruling party is determined to win an election, it can achieve it even without the consent of the electorate. The Bihar Chief Minister can ill afford to flatter himself for his victory by a large margin in Madhubani because the margin was the creation of fraud, forgery, bribery, gangsterism and misuse of official machinery on a vast scale." SHRI MAHAVIR TYAGI (Uttar Pradesh) : Who said so ?

SHRI LAL K. ADVANI : CPI Reso- . lution—

"How long would the people put up with such rigged elections ? Can the artificial majority created by such widespread corrupt practices and distortion of parliamentary democracy stem the tide of seething discontent among the people ?..."

यह प्रश्न उन्होंने तब पूछा। मैं समझता हूं, यह प्रश्न आज हम पूछ रहे हैं कि आप जनता के आन्दोलन को डंडे के बलबूते पर, गोली के बल पर, बैरीकेड्स के आधार पर कब तक रोक सकते हैं, कैसे रोक सकते हैं? आखिर

सी० पी० आई० के सहारे और सी० पी० आई० के बल्लम, बर्छियों और भालों के सहारे कब तक रोकेंगे? कल जो वहां प्रदर्शन हुआ था वह कैसा प्रदर्शन था? आप अपने डी० सी० से, डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट से पूछ लीजिए, वह जो इतने लोग इकट्ठे हुए बल्लम लेकर, बर्छियां और लाठियां लेकर, क्या उन्होंने पासर्स-बाई पर आक्रमण नहीं किया? 9 महीने यह बिहार आन्दोलन चला है और 9 महीने के अन्दर इतने शानदार ढंग से चला है, तो क्या ये लोग एक दिन का प्रदर्शन भी शांतिपूर्वक नहीं कर सकते थे? कारण समझ लीजिए इसका। जो ये लोग आज जयप्रकाश जी को फासिस्ट कहते हैं, इन्हीं लोगों ने तो महात्मा गांधी को इम्पीरियलिस्ट्स का दलाल कहा है, इन्हीं लोगों ने नेताजी सुभाषचन्द्र बोस को भद्दी-भद्दी गालियां दी हैं। कांग्रेस के मित्रो, आप देखेंगे एक समय आएगा---साल-दो-साल में आ सकता है--- आपकी विदेश-नीति में थोड़ा सा परिवर्तन हुआ नहीं, जितनी गालियां आज जयप्रकाश नारायण जी को ये हमारे मित्र दे रहे हैं उससे ज्यादा तीखी गालियां, उससे ज्यादा भद्दी गालियां ये श्रीमती इन्दिरा गांधी को देंगे। इनकी भक्ति एक ही के प्रति है, इनकी भक्ति कांग्रेस के प्रति नहीं है, इनकी भक्ति संसद् के प्रति नहीं है, इनकी भक्ति संसदीय लोकतंत्र के प्रति नहीं है। इनकी भक्ति कोई है तो मास्को के प्रति है। आज मास्को के साथ गवर्मेन्ट आफ इन्डिया के अच्छे संबंध हैं, होने चाहिएं, मैं इस बात का पक्षपाती हूं कि हमारे अच्छे संबंध मास्को से होने चाहिएं, हमारे अच्छे संबंध वाशिंगटन से होने चाहिएं, जितनी सारी पावर्स हैं उनके साथ अच्छे संबंध होने चाहिएं। लेकिन अगर हमारे नेशनल इंटरेस्ट के आड़े कोई [illegible] आते तब निक्सन साहब रहे हों, चाहे फोर्ड साहब हों, चाहे मिस्टर ब्रेझनेव्ह . . .

श्री सुल्तान सिंह (हरियाणा) : आप का सी० पी० आई० (एम०) के बारे में क्या ख्याल है वह भी जिक्र कर दें।

श्री लाल आडवाणी : हमारे सी० पी० आई० (एम०) के दोस्त जयप्रकाश जी के आन्दोलन का इसलिए समर्थन नहीं कर रहे हैं क्योंकि हम उसमें हैं, आप उसको स्पष्ट देख रहे हैं; वे तो खुद कह रहे हैं; वे जयप्रकाश जी को बहुत अच्छा कहते हैं।

तो मैं कह रहा था ऐसे मित्रों से आप सावधान रहिए और आप मेरे तर्कों का उत्तर दीजिए कि हिन्दुस्तान में आपने न्यायपालिका को, प्रेस को, और कार्य-पालिका को इस प्रकार से कुण्ठित करके निस्सहाय करके, निर्जीव बना कर, रख दिया है फिर कैसे अपेक्षा करते हैं वह जन आंदोलन नहीं है। आज जो कुछ बिहार में हो रहा है, यह मत समझिए बिहार तक सीमित रहेगा। मैं आप को चेतावनी देता हूं, अगर आप यह मान कर चलते हैं कि 20,000 का प्रदर्शन है, छोटा सा मामला है, इन् कोर्स आफ टाइम इट् विल पीटर आऊट, तो मैं आप को याद दिलाऊं कि मार्च में यह शुरू हुआ और मार्च से हर दो दो सप्ताह बाद आपको सूचना मिलती रही है कि JP's movement has fizzled out. These fizzling out statements have been repeated again and again. तो वह फिजल आऊट नहीं हुआ। जो पिछली बार इस महीने के आरम्भ में बंद हुआ वह शायद हिन्दुस्तान के इतिहास में अभूतपूर्व होगा, केवल शहरों में नहीं, छोटे-छोटे गांवों में, कस्बों में पूरा बंद हुआ . . . *(Interruptions)* जब आप की बारी आएगी तब बोलकर संतोष कर लीजिएगा। तो इस स्थिति

[श्री लाल आडवाणी]

को समझ कर, पहिचान कर, मैं आपसे चाहता हूं, आप इसका हल निकालें। यह बात नहीं कि हल नहीं निकल सकता। आज ऐसे भी लोग हैं जो कहते हैं जय प्रकाश जी और इन्दिरा गांधी जी को मिलना नहीं चाहिए। क्यों नहीं मिलना चाहिए। अगर राजनैतिक स्वार्थ है तो क्यों नहीं मिलना चाहिये। आज पहली बार 27 साल में ऐसी स्थिति खड़ी हुई है कि जनता के रोष का चैनलाई-जेशन हुआ है।

एक फोकल प्वाइन्ट मिला है। मैं कई बातों में श्री जयप्रकाश नारायण जी से सहमत नहीं हूं। श्री जयप्रकाश नारायण कहते हैं कि उनकी दलविहीन राजनीति है और भारतीय जनसंघ आग्रह करता है कि हिन्दुस्तान का इलक्टोरल सिस्टम ऐसा होना चाहिए जिसके कारण दल और अधिक शक्तिशाली हों। (*Interruptions*) यह तो दुःख है कि आप दूसरों की बातों को सुनने के लिए तैयार नहीं होते हैं। मेरा कहना यह है कि हमारा श्री जयप्रकाश नारायण जी से सैद्धान्तिक मतभेद होने के बाद भी उनकी प्रमाणिकता पर कोई संदेह नहीं करता है और श्री जयप्रकाश नारायण जी की देशभक्ति पर कोई संदेह नहीं करता है। आज हिन्दुस्तान के जन-जन में एक बचैनी है और सार्वजनिक जीवन में नैतिक मूल्यों की प्रस्थापना करने की जो कामना है, उसके प्रतीक श्री जयप्रकाश नारायण बन गए हैं।

4 नवम्बर को वहां पर लाठी प्रहार होता है, उन पर आक्रमण होता है और आक्रमण होने के बाद एक निन्दा का शब्द, एक संकोच का शब्द, एक अफसोस का शब्द और एक शर्म का शब्द भी नहीं कहा गया। (शेम, शेम) मैं यहां पर देखता हूं कि प्रधान मंत्री जी का वक्तव्य हुआ, जिसमें उन्होंने कहा कि श्री जयप्रकाश नारायण जी के ऊपर लाठी का प्रहार नहीं हुआ। In fact, the police shielded Jayaprakash Narayan. अगर पुलिस जो है, वह इस प्रकार रक्षण करती है, तो जिस समय सचमुच में आक्रमण करने लगेगी, तो क्या होगा, वह भगवान ही जानता है। कल श्री ब्रह्मानन्द रेड्डी ने बहस का उत्तर देते हुए इस बात को दोहराया कि अगर श्री जयप्रकाश जी के ऊपर हमला हुआ होता तो इस संबंध में श्री जयप्रकाश वक्तव्य निकालते। यह तो बाकी लोग आप लोग और इधर उधर के जो लोग हैं, वे यह बात कह रहे हैं, लेकिन उन्होंने इस संबंध में कुछ नहीं कहा है। उनका वक्तव्य पढ़कर मुझे चौकन्ना होना पड़ा और इसलिए मैंने अपना कर्त्तव्य यह समझा कि यहां पर बोलने से पहले मैं स्वयं एक बार श्री जयप्रकाश नारायण जी से इस घटना के सम्बन्ध में बात कर लूं। आज प्रातःकाल मैंने पटना में श्री जयप्रकाश नारायण जी से टेलीफोन मिलाकर बात की। मैंने उनके सामने यह बात कही कि मैं सदन में बोलने से पहले आप से इस सम्बन्ध में तथ्य जान लेना चाहता हूं ताकि मैं उस आधार पर बोल सकूं क्योंकि कल ब्रह्मानन्द रेड्डी जी ने कहा था Mr. Reddy said that he would have been the first person to apolodse and would have advised the Prime Minister to do likewise if Mr. Narayan had been hit by a police lathi. मैंने श्री जयप्रकाश नारायण जी से पूछा कि क्या यह बात सही है कि आपके ऊपर लाठी प्रहार हुआ, आप के ऊपर लाठी चार्ज हुआ? श्री जयप्रकाश नारायण जी ने उत्तर दिया कि यह भी कोई पूछने की बात है और क्या इसमें भी कोई संदेह है? क्या उनका यह कहना कि मैंने इस सम्बन्ध में कोई स्टेटमेंट नहीं दिया है.

तो क्या मैं इसके बारे में डुगडुगी पीटता रहूं । अभी उन्होंने कैज्युअली कहा है कि मैंने इस बारे में एक लेख लिखा है जो एवरी-मैन्स के अगले अंक में निकलेगा । उन्होंने इसके साथ ही साथ यह भी कहा कि अगर उस समय श्री नानाजी देशमुख नहीं होते, उन्होंने मुझे न बचाया होता, लाठी का प्रहार अपने ऊपर न झेला होता, अपनी बांह को न फ्रैक्चर करवाया होता, तो मेरा कालरबोन टूट गया होता । (शेम, शेम) इसके बाद भी यह कहा जाता है कि उनके ऊपर कोई लाठी चार्ज नहीं हुआ और उनको पुलिस ने शील्ड किया हुआ था । श्री ब्रह्मानंद रेड्डी ने कहा कि अगर मुझे विश्वास हो जाए कि उनके ऊपर लाठी प्रहार हुआ तो मैं स्वयं माफी मांगूगा और मैं प्रधान मंत्री जी से कहूंगा कि वे भी माफी मांगें ।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI PURABI MUKHOPADHYAY) : Mr. Advani, You have had 25 minutes.

श्री लाल आडवाणी : अगर आप अनुमति देंगी तो मैं लंच के बाद कान्टीन्यू करूंगा ।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI PURABI MUKHOPADHYAY) : You have exceeded your time-limit. You were given 25 minutes.

श्री लाल आडवाणी : मैं जल्दी समाप्त कर रहा हूं । मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि अगर श्री ब्रह्मानन्द रेड्डी जी अपनी बात पर अटल हैं, तो कल जो बात उन्होंने लोकसभा में कही है, तो मैं उनसे अपेक्षा करता हूं, आज इस सदन में, इस राज्य सभा को पवित्र मान कर सारी बातों के लिए माफी मांगें और कहें कि जिस पुलिस ने इस तरह की कार्यवाही की है, वह एक गलत कार्य किया है, और मैं उसके लिए क्षमा मांगता हूं ।

मैंने कल इस बात का उल्लेख किया था और मैं समझता हूं कि 6 अप्रैल, 1919 का उल्लेख किया था जिसमें ब्रिटिश सरकार ने बड़ी बेशर्मी के साथ माफी मांगी थी । उस समय जिस तरह से लाला लाजपतराय के ऊपर लाठी का प्रहार किया गया है और जिसके कारण उनकी मृत्यु हो गयी थी, उसके सम्बंध में भी सेन्ट्रल लैजिस्लेचर में यह आवाज उठी थी । तब शायद संसद् का यह सदन नहीं बना था, पुराने सैक्रेटेरियट में सैन्ट्रल लैजिस्लेटिव असैम्बली बैठी थी, वहां पंडित मदन मोहन मालवीय ने श्रद्धांजली अर्पित करते हुए कहा—

1 P.M.

"It seemed that the effect and the shame of the attack had gone down deep into his heart, and it is a painful thought to me, as to so many others here, that his life should have ended with that unhappy thought in him, and that the Government of Punjab and the Government of India should have lost the opprortunity of making an apology to him for an attack which in any other country would have provoked the greatest indignation and would have made the Government bow to public opinion."

मैं अपेक्षा करता हूं कि यह जो अवसर है आज संसद् में फिर बहस का गृह मंत्री श्री ब्रह्मानन्द रेड्डी उसको खोएंगे नहीं और जयप्रकाश जी से सार्वजनिक रूप से माफी मागेंगे इस घटना के लिए ।

महोदया, कानक्लूड करते हुए मैं, जैसा मैंने शुरू में कहा था, कुछ रचनात्मक सुझाव देना चाहूंगा । यह अवसर केवल टीका-टिप्पणी और आलोचना के लिए नहीं है । टीका-टिप्पणी और आलोचना का अवसर तो उनके लिए हो सकता है । ये चाहते हैं कि इस स्थिति का फायदा उठाए, यह आन्दोलन चलता रहे और जयप्रकाश जी जो कुछ ठीक बात करना चाहते हैं वह न कर पाएं और इस बहाने राइट रिएक्शनरीज, भारतीय जनसंघ और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, सब लोगों को गाली देने का मौका ये चूकें नहीं । मैं आपसे निवेदन करूंगा कि इन लोगों के चक्कर में न पड़ें । आखिर इस आन्दोलन की बुनियाद क्या है ? इस आन्दोलन की बुनियाद है लोकतंत्र की कमजोरी, देश में बढ़ता हुआ भ्रष्टाचार, चुनाव में भ्रष्टाचार । इनके

[श्री लाल आडवाणी]

बारे में ऐसा नहीं है कि कोई चर्चा होनी बाकी है। उस दिन मैंने पढ़ा। हमारे विधि मंत्री गोखले ने कहा कन्सल्टेटिव कमेटी में--

' On the question of electoral reforms, the Government is prepared to discuss with the Opposition". Of course, there will be some issues to discuss. Dialogue always helps.

मेरी पार्टी हमेशा उसका स्वागत करेगी। हमारे मित्र राजू जी, महावीर त्यागी और कई सदस्य बैठे हैं जिन्होंने मेरे साथ संसदीय समिति में बहुत मेहनत की थी। इस सवाल पर मैंने तो अपनी तरफ से बहुत मेहनत की थी। उस रिपोर्ट का नाम है रिपोर्ट आफ दि जोइंट कमेटी आन एमेंडमेंट्स टू इलेक्शन ला। उसमें सब पार्टियों के मदस्य थे। स्वयं विधि मंत्री गोखले उसके सदस्य थे। उस समिति ने जो सिफारिशें कीं वे 72 से 74 तक रद्दी की टोकरी में पड़ी हुई हैं। उस समति ने कहा कि हिन्दुस्तान में मतदाता की आयु 21 से घटा कर 18 करनी चाहिए। उस समिति ने कहा कि रेडियो इस्तेमाल का अवसर समान रूप से सब पार्टियों को मिलना चाहिए। यह उस कमेटी की यूनानीमस रिकमेंडेशन है। जो समिति सिफारिश करती है वह रद्दी की टोकरी में पड़ी रहती है। जब लाल बहादुर शास्त्री गृह मंत्री थे तब सन्थानम कमेटी ने पौलिटिकल करप्शन के ऊपर सिफारिशें कीं। उसने तो यहां तक कहा कि अगर दस एम० एल० एज या दस एम०पीज किसी मनिस्टिर के खिलाफ स्पैसिफिक शिकायत दें तो उसकी तुरन्त जांच होनी चाहिए। उसका क्या हुआ? उसके बाद एडमिनिस्ट्रेटिव रिफार्म्स कमीशन बैठा। उसने पौलिटिकल करप्शन के मामले को तह तक देखा और उसने लोकपाल और लोक आयुक्त की नियुक्ति की सिफारिश की। 71 में जब लोकसभा बनी थी तब गृह मंत्री ने लोकपाल-लोक आयुक्त विधेयक इन्ट्रोड्यूस किया गया था। साढ़े तीन साल हो गए, लेकिन उस लोक-पाल-लोक आयक्त विधेयक के लिए समय नहीं है जबकि दूसरे बिल दो मिनट में पास हो जाते हैं।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI PURABI MUKHOPADHYAY) : Please conclude now.

श्री लाल आडवाणी : महोदया, मेरा सुझाव है, पहली बात कि इलैक्टोरल-रिफार्म्स के बारे में चर्चा आरम्भ करने से पूर्व समिति की जो सिफारिशें हैं उनको कार्यान्वित करे। दूसरी बात भ्रष्टाचार के बारे में सन्थानम कमेटी और एडमिनिस्ट्रेटिव रिफार्म्स कमीशन ने जो रिकमेंडेशन की हैं खासकर लोकपाल और लोक आयुक्त विधेयक सम्बधी--प्रधान मंत्री और मुख्य मंत्रियों को भी उसमें समाविष्ट करना चाहिए--उनको कार्यान्वित किया जाए। तीसरी बात मैं यह कहना चाहता हूं--स्पीकर के बारे में जब बिल आया था कि एम० एल० ए० जब तक रिजाइन न करे तब तक स्पीकर उसको स्वीकार न करे तब भी इसके बारे में कहा गया था--कि राइट टू रिकाल स्वीकार करना चाहिए। राइट टु रिकाल इलैक्टोरल रिफार्म्स में आ सकता है। मैं समझता हूं कि इस समय बिहार के आन्दोलन में यह एक महत्वपूर्ण विषय हो गया है। एजूकेशन के बारे में मैं चाहूंगा कि बिहार में जो छात्र हैं और जयप्रकाश जी ने जो शिक्षाविदों की समिति बनाई है उनके साथ चर्चा करके एजूकेशन में रिफार्म करे। मैं समझता हूं कि मौटेतौर पर जो 3-4 बातें मैंने सुझाई हैं उनके साथ-साथ अगर इसके बारे में जयप्रकाश जी से चर्चा हो इन मुद्दों के बारे में तो बिहार की परिस्थिति हल हो सकती है, उसका हल निकल सकता है। जो बिहार की विधानसभा है, मैं समझता हू कि 1959 में जिस प्रकार से आपने केरल की विधान सभा को भंग करके लोकतंत्रीय कर्तव्य का पालन किया उसी प्रकार से बिहार की विधानसभा को तुरंत भंग कर देना चाहिए। उसकी रही बात

दीजिए, उसको खत्म करै दीजिए। 9 महीने से वहां पुलिस के डंडों के बलबूते पर चलने वाला राज हिन्दुस्तान के लिए एक कलंक है।

धन्यवाद।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI PURABI MUKHOPADHYAY) : Yes, Mr. Harsh *Deo* Malaviya.

SHRI HARSH DEO MALAVIYA (Uttar Pradesh) : Mahodaya, ___

SHRI LAL K. ADVANI : Let us adjourn for lunch now.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI PURABI MUKHOPADHYAY :L:t him finish Then we will adjourn for lunch.

SHRI OM MEHTA : Let us adjourn after Shri Malaviya .

SHRI LAL K. ADVANI : They are doing it from the point of view of publicity and the Chair also acquiesces in it. I take objection.

अगर इस दृष्टि से कि रिपोर्ट में दूसरा पक्ष नहीं जाएगा तो इसका मैं विरोध करता हूं। आप अभी लंच कर लीजिए।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI PURABI MUKHOPADHYAY) : Mr. Advani it is very unfair of you to say this without giving me an opportunity to explain why I am delaying the lunch hour.

SHRI LAL K. ADVANI : Why should it be delayed ?

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI PURABI MUKHOPADHYAY) : There are more than 20 speakers and we want to give an opportunity to all of them. We will have lunch today for half an hour only.

श्री राजनारायण (उत्तर प्रदेश) : लंच के बाद लीजिए। अभी लंच कर दीजिए। यह व्यवस्था सरकारी पक्ष को फायदा पहुंचाने के लिए की जा रही है।

श्री लाल आडवाणी : आधा घंटे का ब्रेक करना है तो अभी कर लीजिए। मैंने स्वयं इसलिए कंप्लीट किया कि लंच का समय है।

श्री राजनारायण : ऐसी व्यवस्था चलेगी तो हम बाहर जा रहे हैं।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI PURABI MUKHOPADHYAY) : Since members are eager to go for lunch, we adjourn now and we will meet again at quarter to two and then Mr. Malaviya will be first speaker.

The House then adjourned for lunch at eight minutes past one of the clock. The House reassembled after lunch at forty nine one of the clock, THE VICE-CHAIR-MAN (SHRIMATI PURABI MUKHOPADHYAY

श्री हर्षदेव मालवीय : महोदया, अभी हमने माननीय श्री आडवाणी का भाषण सुना और उस भाषण को सुनने के बाद मुझे ऐसा लगा कि श्री आडवाणी और उनके दल वाले जयप्रकाश जी की गर्दन पर बंदूक रख कर चला रहे हैं। उनका टारगेट है, उनका ध्येय है हमारी कांग्रेस और हमारी प्रधानमंत्री। जिस दिन 5 नवम्बर को श्री जयप्रकाश नारायण तथाकथित लाठी खा कर जिसके बारे में हम को शक है और दुनिया को शक है, अपने घर 10 बजे रात पहुंचे तो उन्होंने दो बातें कहीं। एक तो उन्होंने यह कहा कि हम एक एक को समझ लें। हिन्दी में उसका अनुवाद करें तो मुझे यह याद आता है कि हमारे मुहल्ले के नब्बू खलीफा के अखाड़े में बनारसी पहलवान भी होते थे और वे कहते थे कि हम एक एक को देख लेंगे। दूसरी बात उन्होंने एक अचम्भे की यह कही कि यह लड़ाई भारतीय जनता और इंदिरा गांधी के बीच में है। इससे पता लगता है कि उनकी लड़ाई की असलियत क्या है और जिसको वे टोटल रिवोल्यूशन कहते हैं, वे असलियत में क्या है। अगर आपइन बातों को छोड़ भी दीजिए तो तथ्यों पर आइए। मैं कुछ तथ्य आपके सामने रखना चाहता हूं। 18 मार्च को बड़ा भारी डिमोंस्ट्रेशन हुआ था और उस में वायलेंस, हिंसा और आगजनी भी हुई। इसके पहले बिहार में विद्यार्थियों की कुछ मांगें चल रहीं थीं और उनकी मांग यह थी कि उनकी रसोई का मामला ठीक किया जाय, राशन पर्याप्त मात्रा में मिले, पुस्तकों और कापियों का प्रबन्ध हो स्कालरशिप बढ़ाई

[श्री हर्षदेव मालवीय]

जाए। इन सब बातों पर विचार करके गफ्फूर साहब ने राशन की मात्रा साढ़े सात किलो कर दी और स्कालरशिप 101 रु प्रतिमास बढ़ा दिया। इसके अलावा स्कालरशिप जिनको दिये जाते थे उनमें भी वृद्धि कर दी। पहले 3067 विद्यार्थियों को स्कालरशिप दी जाती थी और अब 7679 को दी जाती है। विद्यार्थियों के लिए कापियां और पुस्तकें भी मंगा दी गई। इसके अलावा यह भी तय किया गया कि एक करोड़ रुपए खर्च करके 12 होस्टल सारे प्रान्त में बनाए जाएंगे। इसके अलावा विद्यार्थियों की मांग थी कि शिक्षा प्रणाली में सुधार किये जाएं। उसके लिए भी एक कमेटी बना दी गई है और वह इस प्रश्न पर विचार कर रही है। विद्यार्थियों की यह मांग थी कि युवकों के, विद्यार्थियों के जो संगठन हैं, युनिवर्सिटीज की जो मैनेजिंग बाडीज हैं, उनमें उनको प्रतिनिधित्व दिये जाएं। मुख्य मंत्री ने उनकी इस मांग को उचित मान और कहा है कि इसके लिए हमने एक योजना बनाई है और वह अभी विचाराधीन है उस पर जल्द फैसला होने वाला है। विद्यार्थियों की ये सारी मांगें मान ली गई। लेकिन सवाल यह है कि जो संतुष्ट नहीं होता है उसको कोई संतुष्ट नहीं कर सकता है। जो किसी की बात सुनना नहीं चाहता है उसको कोई बात सुना ही सकता है। इसी आधार पर 18 मार्च को डिमोन्स्ट्रेशन करवाया गया और उस दिन वायलेंस हुई, हिंसा हुई। उन्होंने यह भी कहा कि गवर्नर को बोलने नहीं देंगे। गवर्नर वहां पर गए। उसके बाद तमाम घटनाएं हुई।

अब श्री जयप्रकाश नारायण जी को कुछ लोगों की तरफ से धोखा दिया गया और यह धोखा दिया गया जनसंघ वालों की तरफ से और अन्य लोगों की तरफ से। कांग्रेस-ओ० वालों ने, एस०एस०पी० वालों ने, एस०पी० वालों ने श्री जयप्रकाश जी को आश्वासन दिया कि आप आन्दोलन का नेतृत्व करो, हमारे एम० एल० ए० एसेम्बली से इस्तीफा दे देंगे लेकिन जनसंघ के 13 विधायकों में से 12 ने इस्तीफा नहीं दिया और उनमें से एक कांग्रेस में शामिल हो गया। एस०एस०पी० के जो श्री राजनारायण जी की पार्टी के लोग हैं, 17 में से 10 ने इस्तीफा दिया, 7 ने नहीं दिया और उनमें से एक कांग्रेस में शामिल हो गया।

श्री गुनानन्द ठाकुर : (बिहार) : 7 ने इस्तीफा दिया, 10 ने नहीं दिया।

श्री राजनारायण : श्री मालवीय ठीक कह रहे हैं, 10 ने इस्तीफा दिया है।

श्री हर्षदेव मालवीय : सोशलिस्ट पार्टी के 13 में से 9 ने इस्तीफा दिया और कांग्रेस (ओ०) के 2 मैम्बरों ने इस्तीफा दिया और 14 ने इस्तीफा नहीं दिया। हल-झारखण्ड और झारखण्ड पार्टी का सवाल ही नहीं है क्योंकि वे इस आन्दोलन में शामिल नहीं हैं। उन्हें इस्तीफा देने का सवाल ही नहीं होता। तो इस इस प्रकार से जनसंघ जो जयप्रकाश जी को एक बड़ा नेता मान कर चल रहा है।

श्री राजनारायण : मैंने कहा था मैं वाक-आउट करता हूं। व्यवस्था का प्रश्न मैं बाद में उठाऊंगा।

(Interruptions).

श्री हर्षदेव मालवीय : जरा उनको चुप कराइए। वहां इन दलों के 77 सदस्य हैं, 77 में से 34 ने इस्तीफा दिया। तो यह क्रांति वहां ठप हो गई। 319 सदस्य विधान सभा में हैं। उनमें से 140 विरोधी दल के हैं। तो उन 77 में से, जो "बहादुर दलों" के हैं, सिर्फ 34 ने इस्तीफा दिया, बाकी ने धोखा दिया। और जब यह हालत हो गई और महाक्रांति या टोली दिखाई दी तो सर्वदलीय धमकी

घेराव ऐसे-ऐसे कांण्ड चले और करीब 40 केस उसके बाद बिहार प्रान्त में हुए जहां ऐसा किया गया फिर जयप्रकाश जी ने नारा दिया कि इम्तिहान में मत बैठो इम्तिहान मत दो। एक दिन पहले बड़ा झगड़ा रहा, सरकार ने इंतजाम नहीं किया, लेकिन बाद में इंतजाम किया। परीक्षा में कितने विद्यार्थी बैठे? पटना विश्वविद्यालय में 69 परसेंट लोगों ने परीक्षा दी, मगध विश्वविद्यालय में 72.8 प्रतिशत विद्यार्थियों ने इम्तिहान दिया, रांची में 60 प्रतिशत विद्यार्थियों ने इम्तिहान दिया, मिथिला में 87 प्रतिशत ने, बिहार विश्वविद्यालय में 66 प्रतिशत ने और भागलपुर विश्वविद्यालय में 51.8 प्रतिशत विद्यार्थियों ने परीक्षा दी।

श्री ओउम प्रकाश त्यागी : परीक्षा हुई या केवल हाजरी हुई? क्या सभी बोगस परीक्षाएं नहीं थीं?

श्री हर्षदेव मालवीय : अब देखिए, जब यहां भी मामला फेल हो गया तो जयप्रकाश नारायण ने फिर नारा लगाया कि टैक्स मत दो। कहते हैं कि शासन ठप हो गया, बिहार में शासन नहीं नहीं चल रहा है। सरकारी आंकड़े देखिए आंकड़े बताते हैं कि एक्साइज रैवेन्यू की गत वर्ष अप्रैल और अगस्त मास के बीच में 5.79 करोड़ रु० की वसूलयाबी हुई है। इस साल इन्हीं महीनों में, अप्रैल और अगस्त के बीच 6.9 करोड़ रु० की वसूलयाबी हुई। अगर शासन नहीं चलता तो क्या...

श्री राजनारायण : तब तो यह आन्दोलन बड़ा हित कर हुआ इस सरकार के लिए।

श्री हर्षदेव मालवीय : हां, आप ऐसा करिए। ऐसा करते करते पूरा खात्मा हो जाएगा आपका। जहां तक सेल्स टैक्स वसूली है, उसमें 8 करोड़ रु० की वृद्धि हुई। याद रखिए, बिहार में यह वह सीजन नहीं है जिसे वहां वसूली का सीजन कहा जाता है। वहां जो नियोजित विकास होता है, प्लाण्ड डैवेलपमेंट, गत वर्ष इन्हीं महीनों में 20.75 करोड़ रु० खर्च हुआ था। आज इस साल उसी अरसे में 31.67 करोड़ रु० व्यय हुआ।

डा० रामकृपाल सिह (बिहार) : आपसे आग्रह करूंगा कि वे आंकड़े देते हुए कृपया यह भी बताएं उस साल का टार्गेट कितना था और इस साल का टार्गेट कितना था और कितनी वसूली हुई, टैक्सों में वृद्धि कितनी हुई, एक्साइज ड्यूटी इस साल बढ़ायी गई, एक्साइज लाइसेंस की फी बढ़ाई गई। और ले-आऊट प्लान पर कितना था यह भी बताएं

(Interruptions)

श्री हर्षदेव मालवीय : आप उस के पूरे फिगर्स देकर डाक्टर राम कृपाल सिंह जी, पूरक कर दीजिए। मुझे बोलने दीजिए। उसके बाद होम टेनेंसी एक्ट में 1.85 लाख परिवारों को भूमि पर स्वामित्व दिया गया। यह एडमिनिस्ट्रेशन का एक बड़ा भारी एचीवमेंट है। उसके बाद, 1034 ट्राईबल घरानों को, जो जमीन उनसे छीन ली गई थी, वापस करा दी गई। यह बिहार के शासन का रूप है। 1967 से अब तक महोदया, 9 मुख्य मंत्री बिहार प्रदेश में हुए। वहां तीन बार राष्ट्रपति का शासन हुआ। चार बार चुनाव हुए– 1967 म. 1969 में और 1971 व 1972 में। 1971 के चुनाव में कर्पूरी ठाकुर साहब मुख्य मंत्री थे। अब ये कहते हैं चुनाव में सब घपला होता है। जब कर्पूरी साहब मुख्य मंत्री थे जो कि श्री राजनारायण के दल के आदमी हैं और फिर भी कांग्रेस जीत गई।

2 P.M. DR. RAMKRIPAL SINHA : I was a Minister in the Karpoori Cabinet, I was a member there. The decision was of the Cabinet.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI PURABI MUKHOPADHYAY) : Dr. Sinha, you are not to reply. Please sit down.

श्री हर्षदेव मालवीय : यह कहा जाता है कि कांग्रेस के शासन तंत्र चलाने में चुनावों में बेइमानी होती है। अभी परसों की बात है कि श्री जयप्रकाश नारायण ने कहा कि चुनाव ठीक नहीं होते हैं। अगर चुनावों में बेइमानी होती तो श्री मधु लिमये किस प्रकार जीतते ? अगर कांग्रेस चुनावों में बेइमानी करती तो श्री मधु लिमये चुनावों में न जीत पाते । इस तरह से अनाप-शनाप बातें कहना उचित मालूम नहीं देता है ।

पटना में तीन दिन का बन्ध हुआ जिसमें कहा जाता है कि श्री जयप्रकाश नारायण को मार डालने का प्रयास किया गया था । इस संबंध में यह आरोप लगाया जाता है कि उनके ऊपर लाठी चार्ज किया गया और क्या-क्या हुआ, इस संबंध में मैं एक बात निवेदन करना चाहता हूं । इस बन्ध के दौरान रेलवे के एक प्रवक्ता ने यह बतलाया कि इन तीन दिनों में बन्ध के कारण पूर्वी रेलवे को 5 करोड़ रुपये का नुक्सान उठाना पड़ा । प्रवक्ता के अनुसार बन्ध के दौरान भीड़ ने अनेक कीमती मशीनी तथा संचार संबंधी यंत्रों को नुक्सान पहुंचाया, जिनको आज बदलना पड़ रहा है । इसके अतिरिक्त रेलवे को 11 हजार प्रति-दिन रेलवे वैगनों का नुक्सान उठाना पड़ा, जिसके कारण आवश्यक वस्तुओं को एक जगह से दूसरी जगह नहीं पहुंचाया जा सका । इस तरह से रेलवे के 4,400 कोयला वैगन नहीं जा सके और केवल 1,362 ही जा सके । इस तरह से इस आंदोलन द्वारा देश की आर्थिक स्थिति खराब हुई और इस तरह के जो आंदोलन होते हैं, उसकी वजह से देश की आर्थिक स्थिति खराब होती है ।

मैं यह कहना चाहता हूं कि श्री जयप्रकाश नारायण का जो आंदोलन है, वह भ्रष्टाचार के खिलाफ है और वह भ्रष्टाचार का विरोध करते हैं । अब सवाल यह है कि जहां तक भ्रष्टाचार का सवाल है जो यहां पर बड़े-बड़े पूंजीपति हैं, बड़े-बड़े उद्योगपति हैं, अरबपति हैं, उनके विरुद्ध वे भ्रष्टाचार क्यों ही दिखलाते हैं ? वहां उनको भ्रष्टाचार दिखलाई नहीं देता है । भ्रष्टाचार तो उन्हें केवल कांग्रेस में और कांग्रेस की सरकार में ही दिखलाई देता है ।

श्री लाल आडवाणी : क्या आपने आज का हिंदुस्तान टाइम्स पढ़ा, जिसमें लिखा है कि कांग्रेस वालों को लाखों रुपया दिया गया । यह बात लाइसेंस कांड में जो मुखबिर बन गया है, उसने कहा है ।

श्री हर्षदेव मालवीय : जहां तक भ्रष्टाचार की बात है, मैं जरा साफ कह देना चाहता हूं . . .

SHRI NIREN GHOSH (West Bengal) : The Congress Party and the leaders are in a stinking pool of corruption.

श्री हर्षदेव मालवीय : मैं आप से यह निवेदन करना चाहता हूं कि श्री जयप्रकाश नारायण ने जेबी किस्म के बहुत से संघ बनाये हैं, जिनमें बिहार भूदान यज्ञ कमेटी है, बिहार खादी ग्रामोद्योग संघ है, गांधी स्मारक निधि है, बिहार भूदान समिति, बिहार ग्रामीण शिविर, गांधी शांति प्रतिष्ठान, ग्राम स्वराज्य समिति, बिहार सर्वोदय मंडल, बिहार शांति सेना, बिहार रिलीफ कमेटी, लोक चेतना समिति, इस प्रकार के कितने ही संघ श्री जयप्रकाश के नाम पर हैं, जिनमें करोड़ों रुपये का गोलमाल है । आप बिहार खादी ग्रामोद्योग संघ को ही ले लीजिये, जहां पर 2 करोड़ रुपये से अधिक चोरी और गबन का मामला है और इसमें जालसाजी और धोखाधड़ी की बात हुई है । इसके जो प्रमुख मंडल के सदस्य हैं, इनमें श्री जय प्रकाश नारायण ही हैं ।

(*Interruption*)

श्री राजनारायण : इस तरह की बातें कहना आपके मुंह से शोभा नहीं देती है ।

श्री हर्षदेव मालवीय : जब संघ के कार्यकर्त्ताओं ने इस गबन और भ्रष्टाचार के खिलाफ

हड़ताल की तो श्री जयप्रकाश नारायण ने 200—300 आदमियों को नौकरी से निकाल दिया। उसके बाद खादी संघ के कार्यकर्त्ताओं के प्रोविडेंट फंड, बुनकरों, कतिना एवं अन्य कामगारों की अमानत की कुल रकम जो 85 लाख रुपये से ज्यादा है, को संचालकों ने गबन कर लिया। इसका मुकदमा भी कार्यकर्त्ताओं ने मुजफ्फरपुर कोर्ट में संचालकों के ऊपर धारा 420, 418, 406 में चलाया है। जयप्रकाश बाबू वहां भ्रष्टाचार मिटाने का काम क्यों नहीं करते ? अब जरा बिहार भूदान यज्ञ कमेटी को देखिये, जिसके भी जयप्रकाश बाबू मुख्य संचालक हैं। विनोबा जी ने पद यात्रा करके चन्द वर्षों में 21 लाख एकड़ जमीन मांगी, किंतु उनके चेले मोटर कार पर सैर करकेमी—भूदान कमेटी के पास अपनी 30 हजार की कार है—कमेटी की प्रकाशित रिपोर्ट के मुताबिक बीस वर्षों में केवल 3,62,509 एकड़ जमीन बांट सके हैं। भूदान में प्राप्त बहुत सी जमीन बिहार सरकार ने अपने कामों के लिये अर्जित कर ली और उसके मुआवजे का भुगतान किया जो लाखों में था, किंतु कमेटी की बही में जमा हुआ सिर्फ 75,735 रुपये 97 पैसे।

डा० राम कृपाल सिंह : भूपेश गुप्त ने सब आपको दे दिया पढ़ने के लिये।

SHRI HARSH DEO MALAVIYA : This report has been published in a number of papers in India.

श्री राजनारायण : यह केवल यही कह रहे हैं कि हर्षदेव मालवीय जी कह रहे हैं वह सब असत्य है।

श्री हर्षदेव मालवीय : भूदान कमेटी द्वारा जिन गरीब मजदूरों को जमीन बांटी गई उनको पुनः बेदखल कर दिया गया। बेदखल करने वालों में स्वयं भूदानी नेताजी हैं।

श्री राजनारायण : हम पढ़ते हैं तो आप कहती हैं कि कहां से पढ़ रहे हो, लेकिन ये तो बिलकुल कम्युनिस्ट अखबार पढ़ कर रूसी प्रचार कर रहे हैं, लेकिन आप टोक नहीं रही हैं।

THE VICE-CHAIRMAN (SHR MATI PURABI MUKHOPADHYAY) : Please do not interrupt. You will get your chance.

श्री लाल आडवाणी : पता तो लगाना चाहिए कि पढ़ क्या रहे हैं।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI PURABI MUKHOPADHYAY) : Mr. Malaviya, they want to know what is that you are reading from.

SHRI HARSH DEO MALAVIYA : I am reading from "Jan Morcha", a daily published from Lucknow. I certainly will not quote "Motherland". रोहतास जिले से अधौरा ग्राम में 31 एकड़ भूदान की जमीन 30 मजदूर परिवारों के बीच बांटी गई। मजदूरों के नाम से जमीन का दाखिल खारिज भी हो गया। लेकिन गत वर्ष प्रसिद्ध सर्वोदय नेता श्री हरे कृष्ण ठाकुर जो जयप्रकाश बाबू के निकट में वर्षों तक रहे हैं, ने सभी मजदूरों को मार कर भगा दिया और झोपड़ियों को उजाड़ दिया और जमीन हज्म कर ली। इसी तरह दरभंगा, मुजफ्फरपुर, पूर्णिया, महरसा, भोजपुर तथा रांची जिले में भूदान के कई नेताओं और जमींदारों की मिली भगत से लगभग 25 हजार एकड़ जमीन मजदूरों की निकाल कर हज्म कर ली गई।

श्री राजनारायण : यह महरोली की बात होगी, जहां इन्दिरा जी की 22 बीघे 12 बिस्वा जमीन है।

श्री हर्षदेव मालवीय : 80 प्रतिशत से अधिक कार्यकर्त्ताओं का 100 रुपये से कम माहवार वेतन पर जीने को मजबूर किया जा रहा है, जबकि नेताओं को भत्ता 500 रुपए से 1,000 रुपए माह-

[श्री हर्षदेव मालवीय]

वार है। मेरे कहने का मतलब यह है कि बिहार की भूदान कमेटी में लाखों रुपए का गोलमाल है। उसका ब्यौरा जब जयप्रकाश बाबू के सामने पेश किया गया तो उन्होंने कहा कि जहां करोड़ों का खर्चा है, वहां लाखों का गोलमाल हो सकता है। यह बात जयप्रकाश ने रिलीफ कमेटी के कार्यकर्त्ताओं के सामने कही ।

श्री महावीर त्यागी : वहां की गवर्नमेंट ने क्या एक्शन लिया ?

श्री ओइम प्रकाश त्यागी : पौइन्ट आफ आर्डर । अभी आपने जयप्रकाश नारायण के विरुद्ध बहुत बड़ा चार्ज लगाया कि जयप्रकाश बाबू के सामने यह प्रश्न लाया गया कि लाखों का गोलमाल है और जयप्रकाश नारायण ने कहा कि जहां करोड़ों का खर्चा है वहां लाखों का घोटाला हो सकता है। इस प्रकार का चार्ज लगाया है। आप ऐसे व्यक्ति के खिलाफ चार्ज लगा रहे हैं जो यहां अपने को डिफेंड करने के लिए नहीं है । इसलिए मैं समझता हूं कि आप अपने शब्द वापिस लें।

श्री हर्षदेव मालवीय : मैं वापिस नहीं लेता।

श्री ओइम प्रकाश त्यागी : देश भक्ति और ईमानदारी में जयप्रकाश से ऊंचा देश में कोई व्यक्ति नहीं है।

श्री हर्षदेव मालवीय : आप मानते होंगे, मैं नहीं मानता। महोदया, मैं जयप्रकाश जी के कैरियर की आपको जानकारी कराना चाहता हूं। उनके कैरियर को जरा देखें, हमारे राष्ट्र के "बड़े नये देवता" जो पैदा हुए हैं संयुक्त राज्य अमरीका में इन्होंने शिक्षा पाई। वहां पर वह कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य हो गए या उसके निकट आए।

श्री लाल आडवाणी : आप जयप्रकाश जी के कैरियर की बात कहते हैं, मैं आपको कहता हूं कि आप गलत तर्क का उत्तर दीजिए। सुबह-सुबह ही यह बातें हुई हैं और यहां पर व्यवस्था दी गई है कि इस प्रकार से किसी व्यक्ति के ऊपर लांछन न लगाया जाय।

SHRI NIREN GHOSH : Let them do it. Let the country hear it so that the flames will hutn more fiercely.

श्री हर्षदेव मालवीय : सुबह की बात व्यक्ति नहीं अधिकारी के बारे में थी। जे० पी० अधिकारी नहीं है तो उसके बाद अमरीका में ये कम्युनिस्ट पार्टी के मैम्बर हो गये। वहां से हिन्दुस्तान आये। हिन्दुस्तान आ करके यह बिड़ला जी के साथ रहे, फिर अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी में गये। . . .

(Interruption)

THE VICE- CHAIRMAN (SHRIMATI PURABI MUKHOPADHYAY : Please finish in two minutes, Mr. Malaviya.

SHRI HARSH DEO MALAVIYA : How can I ? You must give me some more time.

श्री राजनारायण : जयप्रकाश जी यहां पर नहीं हैं। अभी सुबह यहां पर चन्द्रशेखर जी के पाइंट आफ आर्डर पर चेयर ने यह कहा कि जो सफाई देने के लिए यहां न हों, उनके खिलाफ आरोप न लगाये जायें। श्री जयप्रकाश के ऊपर इन्होंने अनर्गल, निराधार, द्वेषपूर्ण और असत्य बातों का आरोप लगाया है । Those who live in glass houses should not through stones at others.

मैं मालवीय जी से निवेदन करूंगा कि वे खुद अपने को देखें। . . .

(Interruption .)

आप कृपया इसको प्रोसीडिंग्स से निकलवाइये।

श्री ओउम् प्रकाश त्यागी : आप का रूलिंग क्या है। जो हाउस में नहीं है उनके ऊपर आक्षेप किया जा रहा है।

श्री हर्षदेव मालवीय : हमने उनको नेता नहीं बनाया है। आनन्द मार्गियों ने उनको नेता बनाया है। उसके बाद ये सी० एस० पी० में आए।

श्री कृष्ण कान्त (हरियाणा) : ये चाहे जो कहें वह नेता है।

श्री हर्षदेव मालवीय : सी० एस० पी० छोड़ा तो देश के समाजवादी नेताओं को बड़ा ही दुःख हुआ। श्री रामकृष्ण सिन्हा हमारे दल के सदस्य हैं। उन्होंने एक किताब लिखी है :

"J. P. the God that failed".

उसमें लिखा है . . .

(Interruption)

डा० रामकृपाल सिंह : माननीय जवाहरलाल जी ने जयप्रकाश जी के बारे में क्या कहा है, यह भी पढ़ा है ?

(Interruption)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI PURABI MUKHOPADHYAY) : Please sit down. Hon. Members, are you interested in continuing the discussion ? If so, please do not interrupt while one Member is speaking.

SHRJ RAJNARAIN : He is talking nonsense.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI PURABI MUKHOPADHYAY) : If you think is he is talking nonsense, you can reply when you spe:ik.

SHRI RAJNARAIN : What do you think ? What is he talking ?

(Interruption)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI PURABI MUHKHOPADHYAY) : Don't arrogate to yourself the right of the Chair. Please sit down.

श्री सुल्तान सिंह : यहां बोल सकते हैं। जरूर बोलेंगे, कोई रोक नहीं सकता।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI PURABI MUKHOPADHYAY) : Mr. Sultan Singh, please sit down.

श्री ओउम् प्रकाश त्यागी : जयप्रकाश जी के पैर की धुल के बराबर भी नहीं हैं।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI PURABI MUKHOPADHYAY) : Please sit down.

श्री हर्षदेव मालवीय : आजादी के बाद पहले वह सर्वोदय में गए और जीवनदानी बने। वह भी उन्होंने छोड़ दिया फिर उसके बाद कल्चरल फ्रीडम सोसाइटी के अध्यक्ष हुए जो बाद में पता लगा कि यह सी० आई० ए० की एजेंसी है . . .

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI PURABI MUKHOPADHYAY) : You have taken your time. Please sit down.

SHRI HARSH DEO MALAVIYA : There was lot of interruption.

श्री राजनारायण : सी० आई० ए० पेट से निकली है इन्दिरा गांधी के। *(Interruption)* में ओम मेहता जी से रिक्वैस्ट करूंगा कि वह इनको बैठाऐं। इस तरह बदतमीजी यहां बंद होनी चाहिए।

(Interruption)

श्री हर्षदेव मालवीय : मैंने जयप्रकाश को सी० आई० ए० का एजेंट नहीं कहा है। एक कल्चरल फ्रीडम सोसाइटी थी जिसे सी० आई० ए० ने बनाया था, उससे इनका सम्बन्ध था।

(Interruption)

श्री लाल आडवाणी : मेरा पाइंट आफ आर्डर है। मैं आप के माध्यम से यह पूछना चाहता हूं कि यहां संसदीय कार्य मंत्री बैठे हैं गृहमंत्री भी बैठे हैं और इस समय सरकारी दल की ओर से पहले-पहले वक्ता हैं। अगर यही स्तर चलना है तो मैं समझता हूं कि यहां पर अपोजीशन पार्टी का कोई अर्थ नहीं। भाग लेने का कोई महत्व नहीं रहता। कम से कम इस प्रकार की बदतमीजी करने से आपको रोकना चाहिए। अगर यह इस तरह की बदतमीजी अपने भाषण में करेंगे तो इनका भाषण सुनने के लिए हम तैयार नहीं हैं।

(Interruption)

श्री ओम् प्रकाश त्यागी : जयप्रकाश जी को सी० आई० ए० का एजेंट कहना देशभक्ति का अपमान है।

श्री लाल आडवाणी : मैं आप को कहता हूं कि इनका भाषण आपको मंहगा पड़ेगा। मैं आप को कहता हूं कि आप इसको शांत कराइए इनको ऐसा करने के लिए, बदतमीजी करने के लिए रोकें।

This is slanderous and malicious.

श्री रबी राय (उड़ीसा) : मेरा आपके जरिए ब्रह्मानन्द रेड्डी जी से निवेदन है और होम मिनिस्टर साहब से भी कि सी० आई० ए० और के० जी० बी० मनी के बारे में कई सालों से सेंट्रल गवर्नमेंट के मामला पड़ा है और सरकार के पास स्पष्ट भी है। सरकार इसको छाप नहीं रही है कि कौन सी० आई० ए० का रुपया पा रहा है। मैं आप की व्यवस्था चाहता हूं...ब्रह्मानन्द रेड्डी बैठे हैं वह बताएं

Shri Malaviya has no right to assasi-nate the character of Shri Jayaprakash

(Interruption)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI PURABI MUKHOPADHYAY) : Please sit down. Shri Mishra is on a point of order.

SHRI R. K. MISHRA (Rajasthan) : The hon. Member has not said that Shri Jayaprakash Narayan is a CIA agent. What he said was that he was connected with the Council for Cultural Freedom and Shri JayaprakashNarayan himself in a statement said that he was not aware that this Council was receiving money ___*{Interruptions.).* He was quoting a fact which Shri Jayaprakash Narayan had admitted.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI PURABI MUKHOPADHYAY) : Please conclude your speech, in two minutes. I am not going to give yo any more time.

SHRI HARSH DEO MALAVIYA : Please give me some more time. I have enough material. But I will cut them o ut.

श्री महावीर त्यागी : श्रीमन्, मेरा यह कहना है कि श्री मालवीय जी ने श्री जयप्रकाश जी की व्यक्तिगत बातों के बारे में नुक्ताचीनी की है। मैं समझता हूं कि यह मसला उसूलों का है। श्री जयप्रकाश जी कोई काम गलत कर रहे हैं, यह बात रिलेवेन्ट हो सकती है। लेकिन अगर श्री जयप्रकाश जी के परसनल मामलों के ऊपर नुक्ताचीनी करने की कोशिश की जाएगी और उनकी पोजीशन के ऊपर एटेक किया जाएगा तो यह ठीक नहीं है। हम उनकी नीतियों की आलोचना करें, यह ठीक हो सकता है, लेकिन उनके व्यक्तित्व पर लांछन लगाना ठीक नहीं है।

SHRI KRISHNA KANT : Madam Vice-Chairman, as far as the Congress goes it is on record and the former Home Minister, Shri Umashankar Dishit and the Congress President, Shri D.K. Barooah have recognised JP as a toweing personality and the Home Minister yesterday also, while speaking in the debate in the Lok Sabha, has paid tributes to the patriotism of Shri Jayaprakash

him; the Congress Party may have differences with him; we may not agree with him. But, as far as his personality goes, the Congress leadership is on record as having said much about his patriotism and having called him a towering personality.

SHRI MAHAVIR TYAGI : But Mr. Malaviya is contradicting what you say.

SHRI RABI RAY : Is Mr. Malaviya not a Congress man ? Is he a Congresi man or not ?....

(Interruptions)

SHRI MAHAVIR TYAGI : He is cont radicting him .....

(Interruptions)

SHRI BHUPESH GUPTA : We do not go by what the Congress has said about JP... We know what JP is .....

(Interruptions)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI PURABI MUKHOPADHYAY) : Now we are discussing the present situation which, according to the members of the Opposition, has arisen in Bihar. 1 would not like an acrimonious debate on this subject. So, do not make it a personal or party issue. P lease go into the merits of the case and finish the debate.

SHRI LAL K. ADVANI : Thank you Madam.

SHRI MAHAVIR TYAGI : Thank you.

श्री हर्षदेव मालवीय : मैं अब समाप्त कर रहा हूं। मैं सिर्फ यह कहना चाहता हूं कि श्री जयप्रकाश जी का जो तथाकथित आंदोलन चल रहा है....

SHRI BHUPESH GUPTA : Madam, I am a little surprised at your ruling. If what you have said is a ruling, I am rather surprised and I do not know what it means. Of course, I have not heard what he said ___ *(Interruptions)* __ He said something about what JP himself has said ___ *(Interruptions)*. But I did not hear him..

SHRI BANARASI DAS (Uttar Pradesh): Madam, you have already given the ruling and the ruling of the Chair is being questioned by him now. This should not be allowed.

SHRI BHUPESH GUPTA : Even Mr. Jayaprakash Narayan himself has said about individuals and parties. He himself has said so many things in his writings and in his speeches about individuals and parties. Here also, Madam, to day these people have said, Mr. Advani himself has said, many things about my party. When they spoke, I did not disturb them and Mr. Advani himself mentioned some individuals names. I did not disturb him. So, if a Member gives a graphic sketch of somebody, we should like to be englightened.

SHRI LAL K. ADVANI : You have not heared what he has said.

SHRI NIREN GHOSH : These are all dirty untruths and falsehoods and they only add to the people's power of struggle which is going on there. Let them say these things .....

(Interruptions)

श्री हर्षदेव मालवीय : आपके आदेश को मान कर और उस तरफ की बात को सुनकर मैं अब अधिक नहीं कहना चाहता हूं। यद्यपि मेरे पास लार्ड लिटन और सर जान हावर्ट का पत्र-व्यवहार है, लेकिन मैं उनको नहीं सुनना चाहता हूं। मैं सिर्फ यह कहना चाहता हूं कि यह जो तथाकथित आन्दोलन है, जो टोटल क्रांति का रिवोल्यूशन कहा जा रहा है, वह वास्तव में क्या है। मैं यह नहीं कहता कि कांग्रेस दल में या कांग्रेस के शासन में कोई गलती नहीं है। हम दूध के धुले हुए नहीं हैं। हमारे द्वारा भी गलतियां हो सकती हैं। लेकिन सब जानते हैं कि पिछले 27 साल से कांग्रेस देश में शासन चला रहीं है। कुछ लोग और खासतौर से श्री राजनारायण जी जैसे लोग यह चाहते हैं कि किसी न किसी तरीके से कांग्रेस का राज खत्म किया जाए और उनका राज आए। चुनाव में जीत नहीं सके जनता ने चुनकर उनको भेजा नहीं। उत्तर प्रदेश के अन्दर अभी चुनाव हो चुके हैं। अब इनके सामने कोई रास्ता नहीं है। खिसियानी बिल्ली खम्बा नीचे वाली बातवाली बात इन पर लागू हो रही है। ये चाहते हैं कि देश का शासन बदला जाए, आर्थिक नीतियों को बदला जाए और जो प्रगति हो रही है उसको

[**श्री हर्षदेव मालवीय**]

रोक जाए। लेकिन यह होने वाला नहीं है।

अभी एक मिनट में खत्म करता हूं। उसके बाद उनके सामने और कोई उपाय रह नहीं गया। जयप्रकाश जी एक बड़े फ्रस्ट्रेटेड नेता हैं, उनको भगवान सद्बुद्धि दे क्योंकि आज वे रिएक्शनरी फोर्सेज-जनसंघ वाले, आनन्द मार्ग वाले के साथ—और राजनारायण ऐसे महान् नेताओं को और श्री नीरेन घोष जैसे...

SHRI NIREN GHOSH : You are a reactionary force.

श्री हर्षदेव मालवीय : वामपंथी क्रांतिकारियों को लेकर इधर का रोड़ा उधर का ईंट भानुमति ने कुनबा जोड़ा, यह चाहते हैं। ये चाहते हैं इन्दिरा जी को गद्दी से निकाल दें। तो बिल्ली के मनाए शिकार नहीं टूटता। वह होने वाला नहीं है। इसलिए नारों से मत चलिए। मैं आप से कहना चाहता हूं, इसके पीछे बड़ा भारी षड्यंत्र है, इसके पीछे धनपतियों का रुपया है। श्रीमती इन्दिरा गांधी ने कहा कि एक टाइकून ने उनको संदेश दिया कि मैं फाइनेन्स करता हूं जयप्रकाश के आन्दोलन को, मेरे खिलाफ मुकद्दमा वापस ले लिया जाए तो आन्दोलन ठप्प हो जाएगा तो इस आन्दोलन के पीछे धनपतियों, विरोधियों और प्रतिक्रियावादियों का संगठन है। इस गीदड़ भभकी से कांग्रेस दबेगी नहीं, आपका मुकाबला किया जाएगा, आपको पराजित किया जाएगा। आज या दो वर्ष बाद इलेक्शन लड़ लीजिए। आप कहते हैं असेम्बली डिजाल्व कराई जाए, राईट आफ रीकाल की बात करते हैं, राईट आफ रीकाल आडवाणी जी, सिर्फ कम्युनिस्ट देशों में हुआ है।

श्री लाल आडवाणी : स्कैंडिनेवियम देशों में।

SHRI BHUPESH GUPTA : Now he has agreed. But in the Committee on fections, he did not agree openly.

[**श्री हर्षदेव मालवीय**] : जनसंघ के दो मुंह हैं। उनका तरीका सिर्फ यह है कि येन केन प्राकारेण कांग्रेस को समाप्त करो। यह मेरे मित्र, होने वाला है नहीं। आज लड़ लो, चाहे छः महीने बाद लड़ लो, साल भर बाद लड़ लो। चाहे गुजरात में चुनाव करा लो, फिर हारोगे। तुम पावर में नहीं आ सकते।

श्री राजनारायण : माननीय, मैं आपके द्वारा पहले ही निवेदन कर दूं कि अपने मित्र श्री हर्षदेव मालवीय के बाद मेरा बोलना बड़ा मुशकिल हो रहा है। मैं चाहूंगा, भाई हर्षदेव जी को जिस धीरज के साथ हमने सुना, वे भी धीरज के साथ हमें सुनें।

अभी 4 नवम्बर को श्री जयप्रकाश अपने निवास से जा रहे हैं और जब वे जीप पर बैठकर, चारों तरफ़ भीड़ से घिरे हुए थे तो जयप्रकाश जी का संदेश मैं पढ़ दे रहा हूं;

"दो राह, समय के रथ का
घर घर नाद सुनो,
सिंहासन खाली करो कि
जनता आती है"।

रथ चल रहा है, इसकी हुंकार को घर-घर में सुन लो, सिंहासन खाली करो कि जनता आती है। यह दिनकर की कविता है। जयप्रकाश जी ने उसी को पढ़ दिया। अब इसके बाद मैं देखता हूं, भूपेश गुप्त जी इस आंदोलन के प्रति बहुत ही गैर वफ़ादार थे। तो यह दिनकर की कविता है, वह दिनकर जो राष्ट्र कवि है, उनको राष्ट्र-कवि का पद मिला हुआ है। हर्षदेव मालवीय की बात सुनकर हमें उसको पढ़ने की आवश्यकता हो गई। कुछ पंक्तियां पढ़ रहा हूं:

"झंझा सोई, तूफ़ान रुका
प्लावन जा रहा कगारों में"

यह जयप्रकाश के हुंकारों में उनका तेज जीवित है। आगे है :

"स्वागत है, आओ, काल सर्प के
फण पर चढ़ चलने वाले।
स्वागत है, आओ, हवनकुण्ड में
कूद स्वयं चलने वाले।"

वह दूसरों को हवन-कुण्ड में नहीं पड़ने देता ; खुद कूदता है।

श्री हर्षदेव मालवीय :

"सेनानी। करो प्रयाण अभय,
भावी इतिहास तुम्हारा है।
ये नखत अमा के बुझते हैं,
सारा आकाश तुम्हारा है।"

पटना के मैदान में श्री जयप्रकाश नारायण जी जलसे में मौजूद थे, उसमें और भी कई चोटी के लोग मौजूद थे, श्री अनुग्रहनारायण बाबू भी मौजूद थे जिनके सामने आज बहुत से कांग्रेसी पिद्दी और पिद्दी के शोरवे के समान भी नहीं है। वहां पर यह कविता पढ़ी गई :

"ये नखत अमा के बुझते हैं,
सारा आकाश तुम्हारा है।"

मैं हर्षदेव से कहता हूं कि वह जरा इसको सुनें :

"कहते हैं उसको "जयप्रकाश"
जो नहीं मरण से डरता है,
ज्वाला को बुझते देख, कुण्ड
में, स्वयं कूद जो पड़ता है।"

मैं चाहता हूं कि श्री हर्षदेव मालवीय श्री जयप्रकाश नारायण को समझें कि वे क्या हैं, उनकी शक्ति क्या है, उनकी ताक़त क्या है, उनकी महिमा क्या है, उनकी गरिमा क्या है, उनका वैभव क्या है, इन सब बातों को वे समझें।

श्रीमन्, मैं इसकी एक दो लाइन और पढ़ना चाहता हूं, जो इस प्रकार से है :—

है "जयप्रकाश" वह जो कि पंगु का,
चरण, मूक की भाषा है,
है "जयप्रकाश" वह जो टिकी हुई
जिस पर स्वदेश की आशा है।

वह आदमी जयप्रकाश है। इस कविता का आनन्द तो श्री भोलापासवान शास्त्री जी ले सकते हैं क्योंकि वे ही इस भूमि से आते हैं।

है "जयप्रकाश" वह नाम जिसे
इतिहास समादर देता है,
बढ़कर जिसके पद चिन्हों को
उर पर अंकित कर लेता है।

आज जो हमारे देश के भाग्य विधाता हैं, वे श्री जयप्रकाश नारायण जी हैं। श्रीमन्, मैंने इतनी लाइनें इसलिए पढ़ दीं क्योंकि हमारे मित्र श्री हर्षदेव मालवीय जी ने जिन भावनाओं के सम्बन्ध में ज़ोर दिया है उन भावनाओं के प्रति हमारे जयप्रकाश नारायण जी हमेशा सतर्क रहते हैं। श्रीमन्, जिस समय श्री हर्षदेव मालवीय जी बोल रहे थे, ऐसा मालूम पड़ रहा था कि हम सब लोग किसी पागलख़ाने में बैठकर किसी पागल की बात को सुन रहे हैं।

श्री महावीर त्यागी : श्रीमन्, मेरा एक प्वाइन्ट आफ आर्डर है और वह यह है कि किसी सदस्य का यह कहना कि जो मैम्बर यहां पर बैठे हैं, वे सब पागल हैं।

श्री राजनारायण : मान्यवर, मैं बहुत विनम्रता के साथ कहना चाहता हूं कि आप उनको रोकें। मैं इस बात को कहना भूल न जाऊं, इसलिए मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि यहां पर जनतंत्र और तानाशाही की चर्चा की गई है और मैं उस पर अपनी बात कहना चाहता हूं। मैंने कल शाम और आज सुबह भी श्री जयप्रकाश नारायण जी से टैलीफोन में बातचीत

[श्री राजनारायण]

करने की कोशिश की और उनके सचिव श्री सच्चिदानन्द जी से ही हम बातचीत कर सके। हमने उनके सामने यह प्रस्ताव रखा कि पटना में दो चार दिन के भीतर एक रैली बुलाई जाए जिसमें जनता की इच्छा मालूम की जाए। इस रैली में कांग्रेस की तरफ़ से अगर इन्दिरा गांधी बोले तो ठीक है या बरुवा जी बोले तो ठीक है। जो भी कांग्रेसी पार्टी की तरफ़ से बोलना चाहता है वह बोले। अगर जयप्रकाश जी हमसे कहें तो हम बोल सकते हैं, नहीं तो वे बोलें और इस बात के लिए जनता का वोट ले लिया जाए कि बिहार विधान सभा भंग की जाए या नहीं। अगर वहां की जनता नहीं कहती है, तो ठीक है। अगर इन्दिरा गान्धी हमारे सामने भाषण नहीं कर सकती है, तो फिर जय प्रकाश जी का नाम लिया जा सकता है।

इन्दिरा जी बोलें, जय प्रकाश जी बोलें और उसके बाद पटना के गांधी मैदान में वोट लिया जाए, देख लिया जाए कि जनता क्या चाहती है। क्या गृह मंत्री इस सुझाव को मानने के लिए तैयार हैं ? गृहमंत्री इस सुझाव को मानें तो जे० पी० के सैक्रेट्री ने कहा है कि एक हफ्ते के लिए हम आन्दोलन को स्थगित कर दें और एक हफ्ते के अन्दर चुनाव हो जाये। ये बोलें तो मैं बैठता हूं।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI PURABI MUKHOPADHYAY) : Have you finished ? Then, why did you sit down ?

श्री राजनारायण : मैं इसलिए बैठा कि हमारी चुनौती को इन्हें स्वीकारना हो तो स्वीकारें, भागना हो तो भागें । ये ऐसे महत्वपूर्ण प्रश्न हैं जिनका जवाब तत्काल दिया जाए। अगर उनके अन्दर हिम्मत होती और वे जनतंत्री होते तो खड़े होकर कहते :

All right, come on. I am prepared.

यह सुझाव उनको मान्य नहीं है तो फिर वे न कहें कि वे जनतंत्री हैं। मैं अपने मित्र भूपेश गुप्त को भी कहूंगा कि अनावश्यक हेकड़ी न मारें कि यह आन्दोलन अधिनायकशाही का द्योतक है। यह बेकार बात है। मैं आज भी कहता हूं कि बिहार की विधान सभा भंग होनी चाहिए। अनावश्यक अगर बहुत खून बहाने के बाद बिहार की विधान सभा भंग होती है तो उसमें कोई मज़ा नहीं आएगा।

परीक्षाओं के बारे में हर्षदेव मालवीय ने कहा। इस प्रश्न पर हम विरोधी दल के अन्य नेताओं से बात करना चाहते थे। हमको बिहार के कई विद्यालयों के प्रिंसिपलों ने कहा कि आप संसद में प्रस्ताव रखो कि इस साल जो परीक्षाएं हुई हैं वे परीक्षाएं बोगस हैं, कापियां सारी की सारी बाहर गईं, कापियों को दूसरे लोगों ने लिखा और उसके आधार पर पास किया गया और इसलिए इस सारी की सारी परीक्षाओं को सही न माना जाए।

डा० रामकृपाल सिंह : तिरहुत डिवीजन के कमिश्नर ने हाल में जाकर लड़के को डिक्टेट कराया।

श्री राजनारायण : ... कमिश्नर और कलैक्टर लोग परीक्षा हाल में जा रहे हैं और बाहर लिखवाकर कापियां जंचवाई जा रही हैं, उसके आधार पर पास कराया जा रहा है और फिर कहा जा रहा है कि 60 प्रतिशत शामिल हुए, 70 प्रतिशत शामिल हुए। हम कौन सा आदर्श प्रस्तुत कर रहे हैं ? वहां के प्रशासन पर इसका क्या असर पड़ेगा ? जिन कलैक्टरों से सरकार बेईमानी करवा रही है, जिन कमिश्नरों से झूठ बुलवा रही है क्या वे कलैक्टर और कमिश्नर सदाचार का रास्ता अख्तियार करेंगे। सारा का सारा देश आज भ्रष्टाचार की सरिता में डूबा हुआ है।

माननीय, कुछ प्रश्नों का उत्तर मैं पहले ही दे देना चाहता हूं, उसके बाद ही मैं आगे चलूंगा। मैं जानना चाहता हूं कि आखिर सदन के सम्मानित सदस्य जनतंत्र का अर्थ क्या समझते हैं। हमारे मित्र आडवाणी जी ने इस प्रश्न पर काफी प्रकाश डाल दिया है, इस पर मैं ज्यादा नहीं बोलूंगा। लोकतंत्र के माने क्या हैं—केवल लोक या तंत्र? अगर लोक अलग रहेगा तो तंत्र बैठ जाएगा। लोक में जनता होगी जो आज कराह रही है। एक प्रदर्शन हुआ है भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की ओर से सरकार द्वारा प्रेरित, सरकार द्वारा सहायता प्राप्त, टिकट मुफ्त, सरकारी साधन मुफ्त, तमाम जगहों से जुटा-जुटा कर आदमी सरकारी साधनों से लाए गए। एक प्रदर्शन हुआ 4 नवम्बर को। 4 नवम्बर के प्रदर्शन के लिए सारा पटना पुलिस स्टेट बना दिया गया। चतुर्दिक 30 मील के घेरे में रेल की पटरियों पर पुलिस बैठी और सारे शहर में बेरीकेड कर दिया गया, रस्से बांध दिए गए, खम्भे डाल दिए गए जिससे कोई आ न सके। बेगूसराय में पुलिस ने बैरियर डाल दिए, किसी को जाने नहीं दिया, सब को रोक दिया। सरकार की ओर से एक आदमी को भी न आने देने के लिए जितनी साजिश हो सकती थी वह की गई। नावें रोक दी गईं, स्टीमर का चलना बन्द कर दिया गया। 50 ट्रेनें कैंसिल कर दी गईं। फिर भी 4 नवम्बर पटना के इतिहास में और इस देश के इतिहास में अमर दिन होगा। मैं चाहता हूं कि सदन में जो लोग बैठे हैं वह देखें और जो एक गैर पार्लियामेंट्री डेलीगेशन जा रहा है, मैं चाहूंगा कि सरकारी पक्ष के लोग भी हमारे साथ चलें और देखें कि आज पटना में क्या है क्योंकि तमाम खम्भे वहां पर पड़े होंगे। देखें कि पटना को किस तरह से घेरा गया था, किस तरह से लोगों को वहां पहुंचने से रोका गया। एक तरह से बड़ा भारी जेलखाना बना दिया गया था। यह क्या जनतंत्र है। अगर इसको जनतंत्र कहेंगे तो पुलिस तंत्र किसको कहेंगे। मैं चाहता हूं कि हमको वर्ल्ड की हिस्ट्री से, विश्व की तवारीख से कोई जवाब दे, एक नजीर पेश कर दे। 6 करोड़ की आबादी का बिहार किस परह पुलिस से घेरा हुआ है। हिटलर और स्टालिन ने भी ऐसा नहीं किया। इंदिरा सरकार हिटलर, मुसोलिनी और स्टालिन से भी बढ़कर हो गई है। तमाम शहर में जो भी जाए वह मजिस्ट्रेट की इजाजत लेकर जाए। क्या यह जनतंत्र है? मैं पूछना चाहता हूं कि क्या यह जनतंत्र है? हमारे मित्र राजू, सोचो, समझो, अब भी चेतो। अगर चाहते हो कि जनतंत्र की रक्षा हो तो सोचो। दिन भर का भूला शाम को घर आ जाए तो भूला नहीं कहलाता। It is never too late to mend.

संविधान के अनुच्छेद 19 को पढ़ लीजिए। हमको एकत्र होने का अधिकार है। सभा करने, प्रदर्शन करने का अधिकार है। हमारे उस अधिकार को क्यों छीना जा रहा है। एक बात हमारे मित्र भूपेश गुप्त और हमारे घर मंत्री भी समझ लें, छुटका बड़का, दोनों समझ लें, कि 4 नवम्बर के प्रदर्शन के बारे में सरकार ने भी यह बात कहने की हिम्मत नहीं की कि प्रदर्शनकारियों की ओर से कहीं एक भी ईंट फैंकी गई हो। सरकार ने भी नहीं कहा। फिर शान्तिपूर्ण प्रदर्शन पर इतना राक्षसी तांडव किस लिए किया गया? क्या यह जनतंत्र है? क्या इसी जनतंत्र की रक्षा के लिए नवलकिशोर पुरानी कांग्रेस से रूलिंग कांग्रेस में चले गए। आखिर है क्या? इस समय हमारे बहुत से मित्र कांग्रेस पार्टी में चले गए हैं। मैं बहुत द्रवित हृदय से कह रहा हूं कि यह सरकार देश में हिंसा को उकसा रही है। जब रामुलू मरता है तब आन्ध्र बनता है। चूंकि

[श्री राजनारायण]

बिहार में शान्तिपूर्ण प्रदर्शन हो रहा है, शान्तिपूर्ण सभाएं हो रही हैं, निहत्थे लोग मर रहे हैं, इस लिए जनता की राय की क़द्र भी इंदिरा सरकार नहीं कर रही है। जनता की राय की कद्र कब होगी ? जब कि हम लोग जेलों में बन्द कर दिए जाएंगें और तमाम जनता हथियार लेकर खड़ी हो जाएगी।

'इंसान ने भी की है नबूअत कभी-कभी
जब फ़र्ज बन गई है बगावत कभी-कभी'

अब बगावत होगी।

हमारे ब्रह्मानन्द रेड्डी साहब समझ लो, आप इस सरकार के बल-बूते की यह बात नहीं है कि जनता जनार्दन के उभाड़ को रोक सके।

हमारे मित्र अनन्त प्रसाद शर्मा बैठे हैं। मैं इनको बहुत प्यार करता हूं। हमारा इनका बहुत मधुर रिश्ता भी है। ये सोच लें कि घर नहीं जा पायेंगे। घर जाएंगे कैसे ? घर जाने की हिम्मत नहीं पड़ेगी क्योंकि जनता की हुंकार वहां पर कहेगी कि तुम सरकार के मंत्री बनकर आ रहे हो। जनता के क्रोध को जान लीजिए। आप देखें कि जो यह बनावटी, नकली प्रदर्शन कराए जा रहे हैं उन प्रदर्शनों में क्या हो रहा है। जो भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी का प्रदर्शन निकले तो उसमें हथियार बर्छे, बम, पिस्तौल और गोली होती है। मैं पूछना चाहता हूं अपने मित्रों से, यह डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट की स्टेटमेंट है, वह कहते हैं कि प्रदर्शनकारियों के हाथों में हथियार थे। मैं पूछना चाहता हूं कि ब्रह्मानन्द जी आपकी बुद्धि भ्रष्ट हो गई है। हमारे शान्तिपूर्ण प्रदर्शन पर लाठी क्यों चलती है। राष्ट्रनायक जयप्रकाश जी, के बारे में गांधी जी ने कहा कि यह देश के उतने ही बड़े नेता हैं जितने बड़े जवाहरलाल जी। यह 1942 की जनक्रांति के बाद महात्मा गांधी जी के उद्गार थे। उसको हमारे सदन के माननीय सदस्य जान लें। जय-प्रकाश जी पर लाठी चले और बेशर्म हो कर प्रधानमंत्री कहती हैं कि जयप्रकाश जी पर लाठी नहीं चली। आज हमने इसकी पूरी जानकारी के लिए चार तारीख के समाचार-पत्रों को जयप्रकाश जी के बयान के लिए देखा। जयप्रकाश जी के बयान में है कि आईयाज हिट। ये वर्डे उनके सैक्रेट्री ने पी० टी० आई० के मुखारबिंदु से कहे।

(Interruption)

माननीया इस तरह की बात चार तारीख को पी० टी० आई० के प्रतिनिधि को जयप्रकाश जी के सेक्रेटरी सच्चिदानन्द ने और आज सुबह साढ़े नो बजे हम को बताई। यह बात हमने उनसे टेलीफोन पर सुनी। क्योंकि टेलीफोन पर 6 मिनट से ज्यादा बात नहीं कर सकते इसलिए हम पूरी बात नहीं कर सके।

माननीया हमारे पास अखबार है। इस अखबार को जरा देखा जाए। यह अखबार है ; 'तरुणक्रांति'। बिहार प्रदेश छात्र संघर्ष समिति का बुलेटिन है। इसमें जयप्रकाश जी के बारे में एक संदेश छपा है जिसे मैं आप को पढ़ कर सुनाना चाहता हूं जिससे यह मालूम होगा कि जयप्रकाश जी कितने महान हैं। 'आंदोलन का मंत्र लोक बनाम तंत्र' में लिखा है'

"5 अक्तूबर की सुबह के बाद से बीतता प्रत्येक घंटा, उस अंदरूनी कथा की नयी परतें खोलता जा रहा है जो मुझे चार अक्तूबर की रात को बतायी गयी थी....सारे तथ्य यही प्रमाणित करते हैं कि सरकार, भारत में इस आंदोलन को हिंसक आंदोलन के रूप में पेश करना चाह रही है। मुझे लगता है कि सरकार के अचानक परिवर्तित इस रुख के पीछे, शंकरदयाल शर्मा और चंद्रजीत यादव की रात्रि यात्रा का हाथ

है। इसलिए मैं प्रधानमंत्री को सौजन्यता-पूर्वक सावधान करना चाहता हूं कि आग से न खेलिए। अब यह संभव नहीं है कि आप जनता के मन में यह भ्रम फैला दीजिए कि मैं या छात्र संघर्ष समिति या विरोधी दल के लोग हिंसा भड़काना चाहते हैं। जनता आखिर जाग गयी है और सच-झूठ का भेद करना उसने सीख लिया है।

मैं अंत में चेतावनी देता हूं कि यदि सरकार अपनी जनद्रोही हरकतों से बाज नहीं आती है तो उसके परिणामों का अब मैं जिम्मेवार नहीं होऊंगा।

—जयप्रकाश नारायण

श्रीमन्, माननीय इसमें एक खत और है। यह बिल्कुल फोटोस्टैट कापी है। मैं माननीय सदस्यों को दिखा रहा हूं। फुले नारायण जी ने 30-7-74 को भेजा है। इन्हीं के घर से बम फैंके गये थे, गोलियां चलीं थीं। इनकी दो-तीन लाइनें मैं आप की सेवा में पढ़ना चाहता हूं। यह मैंने 5 जून की बात कही। अब श्री फुले नारायण का पत्र आप को सुनाना चाहता हूं।

"आशा है आप सपरिवार स्वस्थ एवं कुशल होंगे। आप को मालूम ही है कि 5 जून की घटनाओं में इन्द्रा ब्रिगेड से संबंधित बतलाया जाता है, मेरे साथ अन्य साहबान तथाकथित अभियुक्त जेल के चार दीवारी में बन्द हैं। ब्रिगेड का सारा कार्य आप ही के आदेशानुसार विधान सभा विघटन के मांग के खिलाफ एवं जन-तंत्र की रक्षा के लिए चलाया जा रहा था। तथा-कथित घटना में हम लोग बिल्कुल निर्दोष हैं। यह भी सुनने में आया है कि पुलिस तथा-कथित अभियुक्तों को फंसाने के लिए मनगढ़न्त गवाह इकट्ठा कर रही है। पुलिस की जो बर्बता तथा-कथित अभियुक्तों के साथ हुई वह तो अलग की बात है। जब से हम लोग जेल चले आए तब से जांच पड़ताल के सिलसिले में कोई भी अधिकारी पूछ-ताछ के लिए भी नहीं आया। मैं चाहता हूं कि इस सदन के सम्मानित सदस्य इसको देखें और नई रोशनी के नारे में इन तथ्यों को आंखों से ओझल न करें। यह श्री फुलेनारायण के पत्र की और उनके हस्ताक्षरों की फोटो स्टेट कापी है। इंदिरा ब्रिगेड क्या है, इससे सारी स्थिति साफ हो जाती है।

श्रीमन्, एक पर्चा भी मैं तथ्यों को साफ करने के लिए हाउस के सामने पेश करना चाहता हूं। यह पर्चा श्री जानकी वल्लभ, डेहरी (रोहतास) ने छापा है—"4 अक्तूबर को डेहरी में महिलाओं के जलूस पर निगरानी रखने के लिए बी० एम० पी० बटालियन के नं० 8 के आठ सिपाही और एक हवलदार तैनात थे। साथ में सी० आर० पी० अर्थात् सेन्ट्रल रिजर्व पुलिस और बी० एम० पी० – बिहार मिलिटरी पुलिस– के 6 सशस्त्र जवान एक डी० एस० पी० के मातहत भी तैनात थे। सी० आर० पी० के जवानों ने महिलाओं के साथ छेरछाड़ की। बी० एम० पी० के जवानों ने प्रतिवाद किया। इस पर डी० एस० पी० (सी० आर० पी०) ने एक महिला की बांह पकड़ ली। बी० एम० पी० के जवानों ने हस्तक्षेप किया। इस पर दोनों के बीच लाठियां चलने लगीं। लाठी से सी० आर० पी० के जवान पीटे गए तो डी० एस० पी० ने गोली चलाने का आदेश दिया। बी० एम० पी० के साथ बंदूक नहीं थी। आठों सिपाही और हवलदार सी० आर० पी० की गोलियों के शिकार हुए और वहीं खेत आए। नौ आदमियों के घटना स्थल पर मरने की खबर जैसे ही बी० एम० पी० के शिविर में पहुंची, बी० एम० पी० के जवान बिना तैयारी के घटना स्थल पर पहुंचे और उन लोगों ने घेर कर सी० आर० पी० के डी० एस० पी० को डंडों से मार कर खत्म कर दिया।

[श्री राजनारायण]

इसमें यह भी कहा गया है कि सी० आर० पी० के जवान जो दिल्ली से गए हैं वे बिहार की नवजवान लड़कियों से छेड़खानी कर रहे हैं।

कुछ माननीय सदस्य : यह बिल्कुल गलत है।

श्री राजनरायण : यह पर्चा श्री जानकी वल्लभ ने डेहरी (रोहतास) से छापा है। मैं चाहूंगा कि माननीय मंत्री जी बोलने से पहले जरा इस पर्चे को अच्छी तरह से देख लें।

माननीया, एक एक जेल की स्थिति हमारे पास है । हजारी बाग जेल में एक यादव हैं, उनको मारने के लिए जेलर आर्डर देता है लेकिन वह कहते हैं हम लाठी नहीं चलाएंगे। इस पर जेलर जाकर खुद मारता है, माथा उसका फट जाता है । इसी तरह से लोहारु सराय, सहारनपुर, मुजफ्फरपुर आदि में जितनी जेलें हैं उन तमाम जेलों में सत्याग्रहियों के ऊपर बर्बर प्रहार हो रहै हैं, निरंकुश प्रहार हो रहे हैं। माननीया, आप स्वत: सोचिए : क्या किसी जनतंत्रीय सरकार की पुलिस वहां के आंदोलनकारियों, वहां के सत्याग्रहियों के साथ ऐसा व्यवहार करेगी ? जिस सत्याग्रह रूपी माता की गोद से कांग्रेस सरकार निकली है आज उसी गोद में वह लात मार रही है, उसी को कलंकित कर रही है। यह राष्ट्रीय शर्म की सरकार है। इस सरकार को जितनी जल्दी देश की जनता हटाएगी उतना ही अच्छा होगा। एक बात और निवेदन करना चाहता हूं...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI PURABI MUKHOPADHYAY) : You have already taken 25 minutes.

श्री राजनारायण : माननीया, मैं बहुत जल्द खत्म कर रहा हूं। इसमें सारी बातें आने दीजिए। चाहे तो एक दिन और चला दीजिए। असल में हमारे पास हर एक जिला का नाम और हर व्यक्ति का नाम है। चूंकि सरकारी पक्ष की ओर से एक बड़ा लम्बा चौड़ा प्रचार किया जा रहा है इसलिए उसके बारे में बोलना मैं अपना कर्तव्य समझता हूं। सरकारी पक्ष कहता है ऊपर के लोग इसमें हैं, इसमें पिछड़ी जनता नहीं हैं । गफूर इसको साम्प्रदायिक कलर देते हैं मगर मैं भाई गफूर से कहना चाहता हूं यह जनता की जवानी का उभार है, इसमें साम्प्रदायिकता की लहर फांक नहीं कर सकती है। मैं नाम पढ़ना चाहता हूं। मंसूर आलम के बारे में सरकार ने कहा था कि उसको प्लास्टिक गोली लगी है जब कि उसे बुलेट लगा था। पुलिस चाहती थी कि उसको निकलवा करके फिकवा दिया जाए ताकि इसका पता न चले और सरकार का यह कहना कि सरकार प्लास्टिक की गोली चला रही है यह सिद्ध हो जाए।

अब कम्युनिस्ट पार्टी के एक फनीश्वर रेणु हैं जिन्होंने ताम्रपत्र नहीं लिया। उन्होंने कहा हम कम्युनिस्टी चक्कर में नहीं पड़ेंगे, आज कम्युनिस्ट पार्टी मास्को की दलाल हो गई है! नागार्जुन जैसे बड़े-बड़े कवि आंदोलन में हैं। जयप्रकाश जी के नेतृत्व में चलने वाले आंदोलन में सम्पूर्ण अध्यापक साथ हैं, विद्यार्थी साथ हैं, वकील साथ हैं, दुकानदार साथ हैं, किसान साथ हैं और मजदूर साथ हैं ।

श्री एन० पी० चौधरी (मध्य प्रदेश) : किसान और मजदूर नहीं हैं। जनता नहीं है।

श्री राजनारायण : किसान और मजदूर आज इस आंदोलन की रीढ़ हैं। मैं कहना चाहता हूं, यह आंदोलन पूर्णरूपेण जनतंत्रीय है, यह पूर्ण-रूपेण शांतिमय है। जयप्रकाश नारायण के ऊपर जो लाठी का प्रहार हुआ है वह राष्ट्र के ऊपर प्रहार हुआ है,

राष्ट्र के सम्मान के ऊपर प्रहार हुआ है। राष्ट्र के पिता महात्मा गांधी की आत्मा जहां होगी वह कराहती होगी कि देश में एक ऐसी निकम्मी सरकार कायम हो गई जो कि राष्ट्र के सच्चे सिपाही जयप्रकाश नारायण पर लाठी का प्रहार करती है। इसलिए मैं अपने मित्रों से, विशेष रूप से भाई भूपेश गुप्त से कहना चाहता हूं कि भाई भूपेश गुप्त, समय की शिला पर मधुर चित्र किसने बनाए और किसने .... (*Time bell rings*) .... बस एक मिनट। अगर भूपेश गुप्त समय की गति को पहिचाने नहीं तो जैसे 1942 की क्रांति में उनकी पार्टी दूध की मक्खी की तरह फेंक दी गई उसी तरह जयप्रकाश जी के नेतृत्व में जो यह क्रांति चल रही है उसमें कम्युनिस्ट पार्टी को दूध की मक्खी की तरह जनता फेंक देगी। सरकार की शरण में जाकर जो भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी प्रदर्शन निकाल रही है वह ठीक नहीं है। मैं अपने मित्र आडवाणी जी से यह निवेदन करना चाहता हूं कि मैं उनकी इस बात से सहमत नहीं हूं कि श्री जयप्रकाश नारायण और श्री इन्दिरा नेहरू गांधी की इस समय फिर मुलाकात कराई जाय। मैं इस बात को साफ कह देना चाहता हूं क्योंकि इस आंदोलन को देखा जाय कि यह आंदोलन क्या चाहता है। यह आंदोलन शिक्षा में आमूल परिवर्तन और चुनाव पद्धति में सुधार चाहता है। जब श्री जयप्रकाश नारायण जी इन्दिरा नेहरू गांधी से मिलने गये तो उसके तीन दिन पहिले हमने एक बयान दिया था जिसमें हमने कहा था कि श्री जयप्रकाश नारायण इन्दिरा नेहरू गांधी से मिलना नहीं चाहते हैं। हमको एक सज्जन ने बतलाया कि गांधी जी ने भी तो ब्रिटिश सरकार से बातचीत की थी। तो हमने कहा था कि जिस समय उनका आंदोलन मन्द गति में पहुंच गया था तब उन्होंने बात-चीत करने की बात मान ली थी। लेकिन आज जब श्री जयप्रकाश नारायण जी का आंदोलन चरमसीमा में पहुंच चुका है, सारे देश का युवा वर्ग श्री जयप्रकाश नारायण के आंदोलन के आगे आगे हो रहा है और अपनी जान हथेली में लेकर उसमें भाग ले रहा है तो ऐसे अवसर पर इस आंदोलन को बन्द कराना उचित नहीं होगा। श्रीमन्, जिस समय श्री जयप्रकाश नारायण जी जालन्धर जा रहे थे तो हर स्टेशन पर नौजवानों की भीड़ ने उनका स्वागत किया। कोई नहीं कह सकता है कि इस समय उनके मुकाबले में कोई लीडर विश्व में दूसरा होगा। वे आज विश्व के सबसे बड़े नेता हैं और हो गये हैं।

श्रीमन, इन्दिरा नेहरू गांधी ने सर्वोच्च न्यायालय के फैसले के बाद एक अध्यादेश द्वारा केवल अपने चुनाव को बचाने के लिए अध्यादेश जारी करवा दिया। इसलिए मैं आपके द्वारा अपने भाई श्री आडवाणी जी से निवेदन करना चाहता हूं जो उनसे चुनाव पद्धति के सम्बन्ध में रिफार्म की उम्मीद लगाये बैठे हैं। आज तो श्रीमन्, इन्दिरा नेहरू गांधी गद्दी पर चिपका रहना चाहती हैं और वह कोई भी साधु व्यवस्था को मानने के लिए तैयार नहीं हैं। आज कोई भी साधु व्यवस्था इन्दिरा नेहरू गांधी को गद्दी से हटा नहीं पा रही है क्योंकि वह गद्दी पर चिपका रहना चाहती हैं। आज साधु और सौम्य व्यवस्थाओं को हवा में सड़ाकर इन्दिरा गांधी गद्दी पर चिपका रहना चाहती हैं।

(*Interruption*)

श्री गुणानन्द ठाकुर : श्रीमन्, हमारा एक प्वाइन्ट आफ आर्डर है और वह यह है .....

श्री राजनारायण : आज देश में जनतंत्र विरोधी सरकार के खिलाफ देश का युवक खड़ा हो गया है। (*Interruption*) आज केन्द्रीय सरकार गफूर की सरकार को बचाने की कोशिश दिल्ली से कर रही है और बिहार की जो सरकार है

[**श्री राजनारायण**]

वह समाप्त हो गई है (*Interruption*) आज दिल्ली की सरकार और दिल्ली की ताकत का संघर्ष जनता के साथ है। जनता जीते और दिल्ली की सरकार हारे, यही इस आंदोलन का मूल मंत्र और मकसद है। (*Interruption*)

श्री गुणानन्द ठाकुर: श्रीमन्, मेरा एक प्वाइन्ट आफ आर्डर है और वह यह है कि श्री राजनारायण जी ने जिस अध्यादेश का जिक्र किया, आप जानते हैं श्री राजनारायण जी ने एक इलैक्शन पटीशन दी हुई है और वे जानबूझ कर उसकी चर्चा सदन में करना चाहते हैं और जो केस इस समय न्यायालय के विचाराधीन है उसको अपनी बात कह कर इंफलुएन्स करना चाहते हैं। उन्होंने इस तरह की जो बात कही है उसको एक्सपन्ज कर दिया जाय।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI PURABI MUKHOPADHYAY) : Please sit down, Mr. Rajnarain, I have given you 32 minutes. Mr. Sultan Singh.

श्री राजनारायण: क्या आप यह चाहते हैं कि मैं इन्दिरा नेहरु गांधी की कलई खोल दूं।

उप-सभाध्यक्ष (श्रीमती पुरबी मुखोपाध्याय) सिट डाउन।

श्री सुल्तान सिंह : उपसभाध्यक्ष महोदया, जहां तक बिहार के इस नाम निहाद आन्दोलन का ताल्लुक है, मैं तो इतना कहना चाहता हूं कि यह आन्दोलन जनता का आन्दोलन नहीं है बल्कि कुछ राजनीतिक पार्टियां जो इन्दिरा गांधी को सरकार से दूर करना चाहती हैं, कांग्रेस सरकार को हटाना चाहती हैं...

श्री राजनारायण : क्यों न हटाएं भ्रष्टाचार को।

श्री सुल्तान सिंह : उन्होंने मिलकर जयप्रकाश बाबू के साथ एक बहुत बड़ा खेल खेला है। जहां तक जयप्रकाश नारायण जी का ताल्लुक है वे उन्हीं लोगों के हाथ में खेल रहे हैं। मुझे तो आडवाणी जी की स्पीच सुनकर ताज्जुब हुआ। जब हर्षदेव मालवीय जी बोल रहे थे तो त्यागी जी भी बड़े तेज होरहे थे और वे कह रहे थे कि जयप्रकाश बाबू के खिलाफ वे एक लफ्ज भी नहीं सुनना चाहते लेकिन उपसभाध्यक्ष महोदया, मैं आपकी मारफत आडवाणी जी से प्रार्थना करना चाहता हूं कि जनसंघी नेताओं के उस समय के बयान निकालें जब जयप्रकाश बाबू कश्मीर में शेख अब्दुल्ला की बुलाई हुई कान्फ्रेंस में जा रहे थे तो यही जनसंघी लोग जयप्रकाश बाबू को ट्रेटर और गद्दार कहते थे।

The Vice-Chairman (Shri Jagdish Prasad Mathur) in the Chair.

श्री महावीर त्यागी : मैंने सिर्फ यह कहा कि उनकी पोलिसी और उनकी नीति की नुक्ताचीनी करो, लेकिन उनके व्यक्तित्व की, चालचलन की चर्चा करना गलत है।

श्री हर्षदेव मालवीय : और इंदिरा गांधी के लिए कहें कि मस्तान ने उन्हें 3 करोड़ दिया वह ठीक है?

श्री महावीर त्यागी: यह भी गलत है।

श्री सुल्तान सिंह : जहां तक इस आंदोलन का ताल्लुक है, मुझे इस बात को देखकर दुःख होता है कि कुछ लोग इसे जन आंदोलन कह रहे हैं। आपकी मार्फत मैं आडवाणी जी से एक प्रश्न करता हूं। बिहार में 67 के बाद चार चुनाव हो चुके हैं और ये जो चुने हुए नुमाइन्दे आज बिहार की विधान सभा में बैठे हुए हैं जब ये चुन कर आए उस समय कर्पूरी ठाकुर की सरकार थी 71 में...

डा० रामकृपाल सिंह : 72 के चुनाव के बाद आए हैं, उस समय कर्पूरी ठाकुर की सरकार नहीं थी – ये गलत कह रहे हैं।

श्री सुल्तान सिंह : ये विधायक जनता ने चुनकर भेजे हैं। यह चुनाव का सिस्टम गलत था तो जब आप के मेम्बर जीत कर आते थे तो उनके जलूस क्यों निकाल रहे थे, उनके जयकारे क्यों बोल रहे थे? इसी चुनाव प्रणाली के तहत, इसी कांस्टीट्यूशन के तहत असेम्बली में उन्होंने कसम खाई थी कि हिन्दुस्तान के विधान के प्रति वफादार रहेंगे। आज आप कहते हैं कि यह आंदोलन जन आंदोलन है। मैं यह दावे के साथ कह सकता हूं कि अगर यह आंदोलन जन आंदोलन होता तो कोई हिम्मत नहीं थी कि वहां की सरकार टिक जाती, कोई हिम्मत नहीं थी कि वहां के विधायक टिक जाते। जन आंदोलन 1939 में हुआ था, 1941 में हुआ था ब्रिटिश सरकार के खिलाफ।

डा० राम कृपाल सिंह : बिहार सरकार निकम्मी है, इन्दिरा गांधी उसकी मम्मी है इसीलिए टिकी हुई है।

श्री सुल्तान सिंह : उस वक्त अंग्रेज चाहते थे कि कांग्रेस सरकारें बनी रहे, अंग्रेज कोशिशें करते थे कि पंडित गोविन्द बल्लभ पन्त, रवि शंकर शुक्ल और दूसरे मुख्य मंत्री बाकायदा प्रीमियर बने रहें।

वह जन आन्दोलन था। सारी की सारी कांग्रेस सरकारों ने इस्तीफा देकर जेल के अन्दर जाकर बैठना स्वीकार किया था। आज जन आन्दोलन की दुहाई देने वाले आप अपनी पार्टियों के हिसाब को तो देख लो। कांग्रेस-ओ के बनारसीदास गुप्त जी बड़े तेज हो रहे थे। आपके तो 23 मेम्बर हैं। आपने फैसला किया कि इस्तीफा दो। आप ईमानदारी से बताओ आप बहुत पुराने आदमी हो, 23 में से कितनों ने इस्तीफा दिया? सिर्फ दो ने इस्तीफा दिया। फिर आप कहते हैं कि यह जन आन्दोलन है? फिर आपने कहा विद्यार्थियों से कि बायकाट कर दो युनिवर्सिटीज का। मैं आंकड़े नहीं देना चाहता, मालवीय जी ने एक-एक करके दिये, अगर यह जन आन्दोलन होता तो क्या 80 प्रतिशत बच्चे इम्तहानों में शामिल होते? किस हालत में जब कि आपने एक ऐक्जामिनर को भी कत्ल करवाया? लेकिन उसके बावजूद हिम्मत की विद्यार्थियों ने और आपका मुकाबला करते करते एक्जामिनेशन सेंटर में पहुंचे। अगर यह जन आन्दोलन होता तो 80 फीसदी बच्चे ऐक्जामिनेशन सेंटर में नहीं जा सकते थे।

आप बड़े-बड़े जलसों को देखकर इसे जन आन्दोलन कहते हो। मैं दावे के साथ कहता हूं कि 2-3 रुपए दिहाड़ी पर काम करने वाला मजदूर पटना के जलसे में नहीं आ सकता। 2-3 रुपया पाने वाला किसान जो हल चलाता है वह पटना के जलसे में नहीं आ सकता। पटना के जलसे में कौन आते हैं,? स्मगलर आते हैं वह आते हैं जो घी में मिलावट करते हैं या मसाले में दूसरी चीजें मिलाते हैं। जब आप अपनी ओर से बन्द का आह्वान देते हैं तो कुछ लोग जो आपकी गुंडागर्दी से डरते हैं वह अपनी दूकानों को बन्द करके मैदान में तमाशा देखने आ जाते हैं। अगर इतने बड़े पटना शहर में 1 लाख, 2 लाख या 3 लाख की हाजिरी हो जाए तो उसको जन आन्दोलन मान लेंगे। अगर बिहार में जन आन्दोलन होता तो किसी एम०एल०ए० की हिम्मत थी कि वह इस्तीफा नहीं देता किसी विद्यार्थी की हिम्मत थी कि वह ऐक्जामिनेशन सेंटर में पहुंच जाता? आज जन आन्दोलन का नाम लेकर इस देश के लोकतंत्र को बदनाम करने के लिए ये लोग तुले हुए हैं।

एक बड़ी भारी साजिश हमारे देश में आज चल रही है। कुछ लोग दूसरे देशों में जाकर यह कोशिश करते हैं कि काश्मीर का चुनाव ठीक नहीं है। हम बार बार कहते हैं कि काश्मीर के चुने हुए लोग हिन्दुस्तान में शामिल होने का फैसला कर

[श्री सुल्तान सिंह]

चुके हैं। हम बार-बार कहते हैं कि सिक्किम के चुने हुए लोगों ने एक कायदा बनाया है सिक्किम की तरक्की करने का और हमारे ही देश के कुछ लोग और हमारे विदेशी मुखालिफ आज चाहते हैं कि काश्मीर हिन्दुस्तान से अलग हो, सिक्किम हिन्दुस्तान से अलग हो। वह दुनिया में जाकर प्रचार करते हैं कि हिंदुस्तान के अन्दर चुनाव का कायदा ठीक नहीं है। काश्मीर के लोगों से जबरदस्ती वोट लिये जाते हैं। सिक्किम का चुनाव ठीक नहीं है।

उपसभाध्यक्ष जी, आपकी मार्फत में जयप्रकाश जी से पूछना चाहता हूं कि आप बार-बार यह दुहाई देकर कि हमारे देश में चुनाव का तरीका ठीक नहीं है, चुनाव प्रणाली ठीक नहीं, क्या आप अपने देश की सेवा कर रहे हैं या इस देश को दुनिया की नजरों के अन्दर नीचा कर रहे हैं या सिक्किम और काश्मीर के केस को खराब कर रहे हैं। अभी तीन चुनाव हुए। 1973 के बाद लोक-सभा के चुनाव के बाद, 3 चुनाव हुए। अगर हमें चुनाव के अन्दर हेरफेर करने की इतनी ताकत होती तो इन चुनावों में हम 15 सीटें नहीं हारते। हम 15 सीटें हारे हैं। जिस चुनाव प्रणाली का आप जिक्र करते हैं, उसमें हम हारे हैं। राजनारायण जी उठ कर चले गए और आडवाणी जी मौजूद हैं। मैं बताना चाहता हूं कि उत्तर प्रदेश में मुख्य मंत्री टी० एन० सिंह साहब थे। आडवाणी साहब की पार्टी भी उनके साथ थी, गुप्ता जी की पार्टी भी उनके साथ थी और राजनारायण जी का तो पता ही नहीं है उनकी क्या पार्टी है। आज का भारतीय लाठी दल और उस समय का भारतीय कांति दल वह भी टी० एन० सिंह साहब के साथ था। टी० एन० सिंह साहब मुख्य मंत्री थे और उनके पास में सारा एडमिनिस्ट्रेशन था। अगर चुनाव में गड़बड़ कर सकते तो टी० एन० सिंह साहब चुनाव न हारते। (*Interruption*).

उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं एक ही बात कहना चाहता हूं कि आज कुछ लोग जनतंत्र के नाम पर जनतंत्र को खाए जा रहे हैं, जनतंत्र के नाम पर जनतंत्र को अपमानित कर रहे हैं। जनतंत्र की दुहाई देने वाले ईमानदारी से अपने कलेजे पर हाथ रख कर सोचें कि अगर चुने हुए लोगों को असेम्बली के अन्दर नहीं जाने दिया जाए, चुने हुए लोगों को जनता की सेवा न करने दी जाए, अथवा चुने हुए लोगों को काम करने का मौका न दिया जाए तो ईमानदारी से बताएं कि क्या यह जनतंत्र जिन्दा रह सकेगा। मैं यह मानता हूं कि आडवाणी जी यहां बैठे हैं वह फैसला कर दें। लेकिन जब आडवाणी जी को इस पार्लियामेंट में आने से कोई रोके या उनको बाहर खड़ा कर दे और पार्लियामेंट में दाखिल न होने दे तो उनको पता लगेगा कि उनकी आत्मा पर क्या गुजरेगा।

जयप्रकाश जी बड़े इन्सान हैं। मैं अपने आप को उनसे नहीं जोड़ता। मैं उन पर कोई सीधा इल्जाम भी नहीं लगाता लेकिन मैं एक बात कहता हूं कि संसार में सौबत का भी असर होता है। जयप्रकाश जी बड़े इन्सान हैं लेकिन जनसंघ, आनन्द मार्गी, और फिरकापरस्ती के हाथों खेल रहे हैं। बड़े इन्सान अगर छोटों की सौबत में चले जाएं तो वह भी छोटा बन सकता है। जयप्रकाश जी का कद आज से साल, डेढ़ साल पहले जो था आज वह नहीं रहा। उनकी पर्सनेलिटी जो साल, डेढ़ साल पहले थी आज वह नहीं है। ताज्जुब होता है जनसंघी जो जयप्रकाश जी को शेखअब्दुल्ला का एजेंट कहते थे और जो कहते थे कि जयप्रकाश जी का रास्ता ठीक नहीं है आज वही जनसंघी कहते हैं कि जयप्रकाश जी बड़े देशभक्त हैं।

उनकी देश भक्ति पर चैलेंज नहीं करना चाहिए। उपसभापति महोदय मुझे एक शेर याद आता है जफर का। आज जयप्रकाश जी की स्थिति वही बन गई है।

बहकाने वाले आप के सब यार हो गए,
समझाने वाले मुफ्त गुनाहगार हो गए।
ऐसे यारों से रहो होशियार ए जफर,
अपने वे जमाने में अय्यार हो गए।।

आज ये जनसंघी जयप्रकाश जी को इन्स्ट्रूमेंट बना रहे हैं। यह इन्स्ट्रूमेंट बना रहे हैं इन्दिरा गांधी जी को गद्दी से हटाने का। मुझे ताज्जुब होता है कि एक नया दल बना है जयप्रकाश जी के नेतृत्व में। इसमें जनसंघ, कांग्रेस(ओ०), सोशलिस्ट, संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी, वाम मार्गी, आनन्द मार्गी और एक अखबार में खबर छपी है कि चम्बल घाटी के डाकू भी चले आ रहे हैं उनका साथ देने को। मुझे दुःख है कि कहां जयप्रकाश जी और कहां ये जनसंघी। कहां जयप्रकाश जी और कहां आनन्द मार्गी, कहां चम्बल घाटी के डाकू और कहां जयप्रकाश नारायण। अगर जयप्रकाश जी को इन हथियारों से लड़ना होगा तो मेरा कहना है कि वह लड़ाई तो हार चुके हैं। जनता जानती है, जनता खूब समझती है इन जनसंघियों को। इन्होंने बड़ा बवेला खड़ा किया था, बड़ा तूफान खड़ा किया था। इस हाउस में यह कहा जाता है कि इन्दिरा जी गद्दी से चिपके रहना चाहती हैं। मैं कहना चाहता हूं कि इंदिरा गांधी ने गद्दी टाइम से एक साल पहले छोड़ दी थी। उसका नतीजा यह देखने में आया कि बड़े-बड़े तीसमार खां देखने में नहीं आए। आज भी मैं चेलेंज के साथ कहना चाहता हूं और हमारा विश्वास है कि हिंदुस्तान की जनता इस बात को अच्छी तरह से जानती है कि उनका कौन हिमायती है। श्रीमती इंदिरा गांधी एक बार नहीं, दस बार नहीं, बारम्बार हिन्दुस्तान की जनता के लिए कुर्सी को ठोकर मार सकती हैं। जिस परिवार ने महलों को ठोकर मार दी, उसके लिए प्राइम मिनिस्टर की कुर्सी कोई बहुत बड़ी चीज नहीं है। लेकिन आपके अन्दर ईमानदारी नहीं है, आपकी आत्मा ईमानदार नहीं है। आप देश के अन्दर ईर्षा और द्वेष फैलाना चाहते हैं। विरोधी दल के लोगों ने इस बात पर कभी विचार नहीं किया कि इस आन्दोलन का रिजल्ट क्या होगा? आप इस देश की चुनाव प्रणाली को बदनाम कर रहे हैं और दूसरे देशों में भी इस देश की बदनामी हो रही है। नवजवान बच्चों के अन्दर जनतंत्र के प्रति घृणा पैदा कर रहे हैं। मैं सिर्फ इतना ही कहना चाहता हूं कि अब सिर्फ एक साल बाकी रह गया है और आप लोग भी मैदान में आएंगे और हम भी मैदान में आएंगे और उसके बाद फैसला हो जाएगा।

जहां तक अब्दुल गफ्फूर साहब का संबंध है, उनका सिर्फ एक कसूर है—अब तक श्री जयप्रकाश जी भी कहते रहे हैं और कई विरोधी दलों के लोग भी कहते रहे हैं कि वे ईमानदार आदमी हैं, लेकिन उनका एक कसूर है कि वे मुसलमान है

(*Interruption*)

जनसंघ लोगों की भावनाओं के साथ खेलना चाहता है, फिरकापरस्ती फैलाना चाहता है। इसलिए मैं कहना चाहता हूं कि आप इन सारी बातों पर विचार करिए और सन् 1976 में जो चुनाव होंगे, उनमें सारी स्थिति स्पष्ट हो जाएगी, इसमें कोई शक नहीं है।

DR. Z. A. AHMAD (Uttar Pradesh) : Mr. Vice-Chairman, Sir, I am going to oppose Mr. Advani because I think that the position that he has taken is fundamentally incorrect and not in the interest of the nation and I will call a spade a spade. I will not mince matters. I will try to expose the real character of the movement which has been generated by Shri Jayaprakash Narayan and which is sought to be supported

[Dr.Z. A. Ahmad]

by all parties whom we call 'parties of right reaction' or parties of vested interests'.

SHRI HARSH DEO MALAVIYA : What about C.P.M. ?

DR. Z. A. AHMAD : Now, I do not not underestimate, as some of my friends on the other side have done, the dangerous potentialities of this movement. This movement has created a stir in the country. There have been many mass movements, dharnas, gheraos, hartals, strikes and even armed conflicts. None of them has created such a stir or such political or emotional upsurges as this movements has done. Therefore, I vest this movement with the due importance that it merits. Now, why does this movement acquire such significance or importance ? It is because it imposes a line of thought and action for the solution of our national problems. But it is a line, a definite line of solution of all the national problems that we are facing. I consider that line to be fundamentally incorrect. 1 consider that line to be disruptive or national unity. 1 consider that line to be a line which throws the country at the feet of the vested interests, both national and international. None the less, it is a line of thought and action which is advocated by Mr. Jaya-prakash Narayan. Now, the first aspect of that line of thinking is that this democratic or parliamentary structure has become so rotten and weak to the core, as Mr. Advani has said this morning, that this parliamentary and democratic structure has to be pulled down, and pulled down not through normal channels of democratic changes but by force. You bring 100 thousand people to the street you *gherao* the Assembly and do not allow the Assemly Members to get into the House, or put black paint on their faces and put them on the donkeys.

SHRI O.P. TYAGI : This is the Communist theory.

DR. Z. A. AHMAD : Whatever it is, you are too ignorant to understand that. And then spread that movement from state to State. Ultimately they come to Parliament. Then *gherao* the houses of Ministers and do not allow the Members of Parliament to go. Then break down or pull down the entire structure of what they call this so-called corrupt, weak and rotten democratic set-up. That is the first aspect of their line of thinking and action that they advocate. The second aspect is that this Government is pursuing such fundamentally incorrect national and international policies that those policies have to be fundamentally, reversed. And when the whole corrupt democracy structure will be pulled down by the people in the streets, then they will sit down with partyless democracy to rc-organizc to revolutionise, as they say, the entire national, and international policies of the country.

Now, 1 submitt that, both aspects of this thinking and policy are not only in correct but as 1 said earlier are leading the country to a stage where we shall handover the entire country and the Governmen to reactionary, vested interests both national and international and allow them to play havoc with the democratic life of our country and the growing popular democratic movements in our country-Now, Sir, pulling down of the Bihar Assembly. Bihar Assembly may not be adequately representing the sentimets of the Bihar people. Well, 1 concede that. If there is .in election, there may be a change. r>ut surely you cannot allow/that Assembly to be pulled down or broken to bits by the methods advocated by Mr. Jayaprakash Narayan.

DR. RAMKRIPAL SINHA : As in Kerala.

DR. Z.A. AHMAD : Don't talk of Kerala. Kerala is a remote thing. We shall see about that later. Now, these arc the big advocates of democracy, including Mr Advani whose tirade was against us because he is bitter that the Communist Party has come into the field. It will come. You cannot escape. We shall come and we-shall come with a bang.

SHRI SUBRAMANIAN SWAMY (Uttar Pradesh): You will go out of the map..

DR. Z.A. AHMAD : May, be. We-shali see later. History will decide as to who will go and who will stay. But this great advocate of democracy says : What is wrong with the people coming into the streets and closing the doors of the Assembly ?" Then, close the doors of every Assembly and the Parliament. All get out. This is your democracy. And you accuse us by saving.

that these Communists have once upon a time called Mahatma Gandhi an agent of imperialism.

AN HON. MEMBER : Who said ? Mr. Advani ?

DR. Z.A. AHMAD : Whoever has said it, that is a different question. The question is that those who killed Mahatma Gandhi—Godse and his entire men—are today sitting with Mr. Jayaprakash Narayan. It is they who killed Mahatma Gandhi.

SHRI LAL K. ADVANI :

गांधी जी की हत्या के बारे में कोर्ट केस हुआ था और पचासों बार यह बतलाया गया कि यह बातें झूठ है ।

DR. Z.A. AHMAD: 1 did not interrupt you Sit down.

SHRI LAL K. ADVANI : When you speak like that, I cannot keep quiet.

DR. Z.A. AHMAD : I know the entire company of Godse. Now, Sir, this method of pulling down the Assemblies and Parliament shall not be allowed. This is a fascist method. We know how such methods have been resorted to and the ultimate result has been the establishment of military dictatorships or right fascist dictatorships and this is the direction in which these people want us to go. Then national policies and international policies have to go. Why ? I would like you, Sir, to look at the big lisl of people who arc standing behind Mr. Jayaprakash Narayan and advocating a fundamental change in national policies. Who are they ? Politically you know who they are, R.S.S.

SHRI SUBRAMANIAN SWAMY : R.S.S. is not a political force.

DR. Z.A. AHMAD : If it is not a political force, I do not know what it is. R.S.S. Jana Sangh, Cong (O) are there but apart from that the entire community of hoarders, blackmarketeers, profiteers and exploiters is also there and they gang up. It is not an ordinary gang up.

श्री लाल अडवाणी : हाजी मस्तान ने आपको पैसा दिया है और हमको नही दिया है ।

DR. Z.A. AHMAD : You should have the dignity of remaning patient. We were 7—645RSS/74 patient when you were attacking us and you should have the dignity of remaining patient now.

SHRI LAL K. ADVANI : 1 did not take recourse to slanderous language.

DR. Z.A. AHMAD : They are the people who will decide in that party less democracy as to in which direction the national and i international policies of the Governments are to be changed. We know the forces that are standing behind Mr. Jayaprakash Na rayan. I give no certificate, Mr. Vice-Chairman, to Mr. Jayaprakash Narayan. We are judging a person by what he does to day and not by what he did 20 or 30 or 40 years go. We judge him by what role he plays today and not by what he did 30 or 40 years back. -

Sir, I am one of those who, in the political filed, have been born along with almost the juniors of Jayaprakash Narayan but we have grown together. I know Mr. Jayaprakash Narayan much more than many of you because he was one of my close friends and I was sorry when for a period of 25 years he went out of the filed and said T retire from politics and I am out of politics' I know what feelings of hatred and antagonism he entertained towards Pandit Jawaharlal Nehru. That is no secret to those who were near to him. A frustrated man, Jayaprakash, had entertained feelings of extreme hatred towards Jawaharlal Nehru on the personal plane. 1 think those feelings of frustration or angeror antagonism have been transferred to Shrimati Indria Gandhi. There is a continuity in that. But, apart from that it is not a personal question or an emotional question, it is a political question today. Whatever may have been the role of Mr. Jayaprakash Narayan in the past, is playing the role of the leader , an organiger rnd a mobilise r of all the right wing reactionary forces which want India to go towards the establishment of a fascist dictatorship and abandon the policy of socialism which India has been pursuing during the last 27 or 28 years in a faltering and halting manner. Shrimati Indira Gandhi has been advocating many good measures in a certain direction. Those measures have not succeeded to the extent that they should have nor should they have been- implemented in the manner

[Dr. Z. A. Ahmed]

in which they have been. None the less, there is a reorientation and the vested interests of the country do not want that reorientation to be strengthened further. They think that the time has come to mobilise themselves with international support and where that international support comes from, we know. It is not hidden. We know where from that guidance, international inspiration, monetary help and all that comes. Now, these vested interests in the country feel that this is the time for them to mobilise themselves and hit out and create a moment for subverting the whole thing in the name of mobilising the people and taking advantage of the genuine discontent of the people against hunger, starvation, unemployment and alj that. If they do not do it, anytime now the day may come when they may be overwhelmed by the onward march of the progressive socialist democratic forces in the country and, therefore, it is a mov^mjnt directed clearly and consciously

Our Chodhury has said it, and many people go on appealing to Jayaprakash Narayan: Why are you in the company of the Jana Sangh ? Why are you in the company of RSS ? What is there in common between you and the RSS and so on ? Jayaprakash is not a child: he is a very conscious person; he has all along been a very conscious person; he is very calculated in his thinking and in his deeds. Do you think that by just placating him or flattering him you can take him away ? He is a very conscious man. Today he thinks that now the time has come to play his role. I submit, Sir, this outlook of his has not developed suddenly. It has been there during the last 10, 15 years of his frustration. He has gradually worked out international links, who blessed the forum for free Enterprise? Who created it ? He praised the basic democracy of Pakistan and said that it is a model of partyless democracy when Ayub Khan came to power. This is no secret. What has happened to Pakistan under Ayub Khan and that basic democracy ? When Yahya Khan succeeded Ayub Khan, with his dictatorship what did he do to the people of Pakistan ? The people of Bangladesh were crushed under the iron heel of his dictatorship. It is that pattern of Government which is certified by Jayaprakash Narayan as being a truly

{Interruption)

I submit, Sir, that Jayaprakash Narayan has come to this undertstanding not all of a sudden, not overnight, nor because of some upsurge in Bihar suddenly bursting out. No, no. He has been thinking about it, planning about it, he was waiting for an opportunity and he was forging his alliances. It is no secret I can tell you. One and a half years ago when I met Jayaprakash, I told him. There are so many problems facing this country; why can't we, with all the progressive forces, work together; you can play your role; you are an old man with good traditions and all that. He did not respond. His heart was not with me or with anybody. He started complaining about Indira Gandhi, this and that. He started the whole old story of Pandit Nehru having neglected him. I was his colleague and I appealed to him to come and help in solving our problems. Gradually—it is not sudden—he works out links. Somewhere it is the Shiv Sena, somewhere it is the RSS, somewhere it is the Anand Marg and somewhere it is gentlemen will all the prestige and halo of Jana Sangh. And there is Mr. Rajnarain going there with his loud tomtomming. So, that is not accidental. It is a deliberate, consciously worked out plan supported by international reaction and internal vested interests in order to subvert the present democratic set-up and ifl order to reverse the direction of our national and international policies.

DR. RAMKRIPAL SINHA : You are repeating yourself, by the way.

DR. Z.A. AHMAD : Anyway, thank you. I do not want to say much but it is very interesting to see how people like Shri Jayaprakash Narayan talk of Mao Tse-tung as a great leader.

AN HON. MEMBER : Guru.

DR. Z.A. AHMAD : I think he has said that and this gentleman also, now sitting here, the great Mr. Advani also has been admiring China so much. I remember at the time of our border conflict with China what these people used to say. The Jana Sangh people went to the extent of saying : the *chini* or the sugar that we use should be given up and we should take to *khancl.* To that extent they went. *{Interruption)* They are very soft toward

China which is the Land behind the scene which is pulling the strings of these puppets. H is quite obvious. I have heard you saying that we are the agents of Soviet Union. I may tell you that we are not the agents of anybody but we do think that in the complicated world of today the Soviet Union is a firmally of ours and a firm friend of ours, it has stood by us and it will stand by us. Can we depend on that country, the U.S.A. ? They are the friends of the U.S.A. and all the time they have been talking of Nixon's democracy. I want to know whether we can depend on that country ? Now it is obvious that we are on two sides of the barricade and we shall have to fight it out and 1 would appeal to my friends on the Congress benches : If you want to light then fight properly, fight properly and if you do not \vant to fight, then do not fight, do not fight at all. If you are determined to fight, well stand up, take a firm decision and do not give certificates to Shri Jayaprakash Narayan. Do not give him certificates. I have seen some of the Congress leaders again and again coming out and saying : He is a great democrat, patriot and all that. So what ? There have been so many patriots and democrats. We are patriots and democrats.

(Interruptions)

Now you are saying that Shrimati Indira Gandhi overthrew the Communist Government in 1959 in Kerala. You made out a lot of it. Whether it was my Ministry or not, I am not concerned with that. You are making such facile comparisons, absolutely unhistorical...

DR. RAMKRIPAL SINHA : He is rewriting history.

DR. Z. A. AHMAD : I am not-rewriting history. I am stating certain facts of history. Conditions have changed, circumstances have changed, correlation of forces in India has changed, the perspective has changed, everything has changed and now you are bringing in the question of 16 or 17 years ago. Why ? I am only responsible for what I do now and not what my father did 20 years ago or my grand father did 50 years ago. *(Interruptions)* Anyway I will not go into that.

Therefore, I want to submit that this pattern will go on and well, those who want I to placate Mr. Jayaprakash Narayan or I bring Mrs. Indira Gandhi and Mr. Jayaprakash Narayan on a common platform, I wish them well but I do not think they will succeed. I think Mr. Jayaprkaskash Narayan is as conscious as person as Shrimati Indira Gandhi is. Both have their own understanding and there cannot be any compromise. Till the time there is a proper democratic, socialistically oriented..

DR. RAMKRIPAL SINHA : That is not palatable to you.

DR. Z. A. AHMAD : Unless there is such a society or there is a facist-oriented government and administrative set Up in this country, there is not going to be any compromise between the two; and our country has come to that stage. Ultimately, many countries come to that stage when they stand at the cross roads. Twenty-five years of development in the Indian economic life has created unrest among the people but at the same time we cannot allow that unrest to be exploited. It cannot be allowed to be exploited by the facist forces and by the vested interests which are conspiring inside the country and also on the international level.

Therefore, we shall fight to the bitter end. It will be a war to the hilt. It cannot be in between. Either they stand or we stand. Either our ideology stands or their ideology stands. Therefore, Mr. Advani, do not try to appeal to Congressmen saying that the communists will swallow them. Communists will not swallow them. The Congress is too big. On many things we may have differences, but on certain fundamentals we shall stand together. We shall stand as comrades-in-arms against the conslaught of fascism. We shall stand as comrades-in-arms against the onslaught by these exploiters who are today talking of a partyless democracy and all that. They are hoarding, blackmarketing and looting the people ruthlessly. We shall fight them. I appeal to Congressmen not to be taken in by this glib talk. He talks with his conghe in his cheek. Therefore, I submit that so far as the communist party is concerned, we say that in Bihar some firm measures have to be taken in order to alloy Ihe discontent of the people. The Assembly should be called, whatever it may be. Whether they bring ten lakhs people or not we say the Assembly shall meet. We shall

IDr. Z. A. Ahmad]

meet in order to enact new laws in the interests of the people. The Assembly should meet. We demand that. *(Interruptions).* It is not a question of our party. It is not a question of anyone asserting. It should be a common demand. It should be a democratic lovement. Land reforms should be effectively and firmly implemented. We should have a de-hoarding campaign^on a big scale. The working-class and poorer sections of the people should be given food by a properly organised rationing system.

A public distribution machinery should be set up covering Adivasis and all. It should be a popular programme. It is not the communist party's programme. It can be as much yourprogrammeasitisour programme. In iact, it is stated to be your programme.^Your programme should be implemented properly through the Assembly. You fight those who are against it. A ruthless political battle should be carried on and the communist party gives its firm support to it.

SHRI SUBRAMANIAN SWAMY : He is threatening a civil war.

DR. Z. A. AHMAD : 1 am not threatening a civil war. The struggle and the political battle against these forces will be carried on and the communist party will shed its blood, will leave no stone unturned in order to defeat this onslaught and unite the progressive forces, unite the forces of socialism and the forces of national unity and democracy.

Thank you.

SHRI V. B. RAJU (Andhra Pradesh) : Mr. Vice-Chairman, Sir, I have carefully heard what Mr. Advani has said and also Mr. Rajnarain from the opposition. 1 have now heard Doctor Saheb also.

SHRI O. P. TYAGI : Defender of democracy.

SHRI V. B. RAJU : Now, Sir I would very much appeal to the Members of this hon. House not to personalise politics.

SHRI SUBRAMANIAN SWAMY : Nor to politicalise persons.

SHRI V. B. RAJU : I would appeal to my young friends there belonging to Jana Sangh not to interrupt every Member. Now, Sir, after twenty-seven years the people of this great country arc passing through some difficult times. Firstly, the global phenomenon which has enveloped this country also is the economic difficulty. It is a reality that the working people, the common people are experiencing hardship. To that extent there is grievance and there is dissatisfaction.

Now, what is happening with certain pseudc-political forces? They are trying to exploit the situation for certain ulterior purposes. This is a fact which cannot he denied. What is exactly happening in this country is that those political forces or those political parties which have not been able to present the case of these aggrieved people in the democratic institutions like Parliament and Assembly, to conceal their failure, to hide their actual weakness, they are trying to fan certain agitations in the streets. The emergence of the Bihar agitation or the reentry of Shri Jayaprakash Narayan into politics is—correctly I would put it—because of the failure of the opposition parties in this democratic country. I would like to be understood very correctly. Sir, in a democratic polity, in a free society, there is bound to be more than one opinion. There may be forces or people who may be disagreeing with the policies of the Government or with the actions of the administration. Now, those forces expect the opposition parties properly to attend to them and *to* carry conviction with the ruling party and to see that the grievances are set right. When the opposition parties have failed to do their job properly, the people have begun to look to some other forces. I think, by the passage of time—I am sure— the opposition parties will realise that this movement in Bihar is the death-knell of the political party system to which they belong, and it will be too late for them. Why should the cause of the people of this country or their political aspirations be reflected by Shri Jayaprakash Narayan who does not believe in the party system? In fact, this morning and this afternoon, we have heard two dissenting voices here—from Shri Advani, a moderate approach—that is, the meeting of minds and the meeting ground being found and a dialogue—and Shri Rajnarain has opposed it, if I have understood him correctly.

AN HON. MEMBER : But you should not take Shri Rajnarain seriously.

SHRI V. B. RAJU : It is not the point. I can appeal to my friend not ta personalise

things; let us not bring down the level of the debate. Let us appreciate the point correctly.

(Interruptions)

आप अभी नये है। इस प्रकार बारबार मदालखत नहीं करनी चाहिए।

Madam, let us understand clearly the point. We may agree or we may disagree. Let us understand each other. What does the movement stand for? What is the objective of this agitation ? What is it going to achieve? It is all right to take the name of the people. You know, sometimes an aircraft might be caught in bad weather or a ship might be caught in a stormy weather on the high seas. Sometimes even intelligent people get actually caught or trapped in a particular situation from which they cannot get out. And we call it people's voice. Sir, I would like to say this here. It was Victor Hugo who said : "Public opinion is formidable. Never confront it directly, but believe that it is slippery." I have got personal experience. I have passed through these movements. My friend, Shri Brahmananda Reddy, has passed through the movement. We have seen it. What is happening in Bihar is nothing as compared to what happened in Andhra Pradesh. For 15 days the trains did not run. There was no administration. No Minister could go. No person standing for a separate Andhra could stand the aggression of the people. But now, believe me, it is only six days ago I went there along with the Chief Minister. The same Vijayawada moved for reception to the Congress. I have addressed a meeting for half an hour, a very big public meeting, where there were 50,000 people, and presented the Congress policy there. There was pin drop silence.

You are 'alking of people's movement. We have seen people's movement. Let us know the people now. What are the political parties doing? How are we moulding public opinion for the last 27 years? What does Mr. Advani want? What does my senior friend, Tyagiji, want? How does he want to use this people's discontent or people's enthusiasm? To what purpose he will utilise it? Are you going to sabotage party democracy? Why do you not declare? Are you prepare! to agree with the thesis of Mr. lavanraknsh Naravan? It is not the person Narayan or the followers of Mr. Jayaprakash Narayan. Let us not drag the name of the Prime Minister. Let us not drag the name of anybody. It is not a question against the Prime Minister. It is a movement against the policies pursued or the programme actually taken up by the Congress Government and by the leader of the Congress Party, Shrimati Indira Gandhi. Now we have got to think on these lines. What is it that you want tci achieve from this agitation? It is said that the dissolution of the Assembly is the means. How can corruption, unemployment can be eradicated ? I want to ask, who does not want an honest society, an honest public life ? Is it for the first time that you are saying this ? No one disagrees with this. By dissolving the Assembly are you going to achieve it? Are you going to.get a more honest society thereby?

Mr. Advani has spoken about social corruption, corruption in public life, about election expenses and so on. By dissolving the Bihar Assembly can you get this thing? How many elections have not taken place in Bihar? On what issues do you want a verdict from the people? Let us understand. What verdict do you exactly want from tho public of Bihar? The issue must be placed before the public. It is a simple matter to dissolve the Assembly. But if the Assembly is dissolved it is the President's Rule, the Centre's rule. And then the same Congress Party rules. These is no difference of policy. Therefore, what is it that you wont? You must clarify, you must specify now. The people of Bihar are in distress. You must minimise their distress. You must help them. What issues are you going to place before them tomorrow after the Assembly is dissolved? Do you not want a new Assembly? Do you not want a People's Government? Do you want the Adviser to the Governor to rule there? Do you want the President's Rule to be there for three or five years? What is your programme that you want to place before the people?

1 have been very patiently hearing.....

SHRI SUBRAMANIAN SWAMY : Let me clarify the point.

SHRI V. B. RAJU : 1 do not want interruption from you. I want your leader to clarify. You are not the leader of your

[Shri V. P. Raju]

issues involved. Nothing has been said. Therefore, Sir, let us not confuse the people cf this country. Let us not confuse the people *ef* Bihar or let us not confuse ourselves and let us not personalise the issues. *1M* us not actually import acrimony in a debate like this. We have the press, the judiciary, the legislature and the executive. Who is suppressing them? I hear them say that there is free press only in America....

(Interruption by Shri Subramanian Swamy)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGDISH PRASAD MATHUR) : You go #n.

SHRI S. P. GOSWAMI (Assam) : Mr. Raju never interrupts anybody.

SHRI V. B. RAJU : You show the same consideration to me. Is not the press in India free? Take the national press. It is my charge that it is because of the press that this movement is sustained. And how many columns of news are being presented every day before us on the agitation? The national press is giving the maximum support to this movement, with a few exceptions. Who is interfering with the judiciary? The judiciary is releasing, is letting out, the smugglers who have been detained under the MISA. Who is interfering with the judiciary? What false accusations are being made against us? Then, what are the policies of the Congress against which this movement is being engineered? 1 can understand Doctor Ahmad saying that we have not fully nationalised the wholesale trade in foodgrains. He has a point to accuse. I do not know what the Jan Sangh has got to accuse us of. What did we do? Is it our friendship with Russia? Mr. Advani said this morning "We want friendship with Russia." He said "We want friendship with America also". That is very good. Very recently Kissenger had come here. Therefore, my point is, the issues are being confused here. There is nothing that the Congress has done in Bihar. In fact, I would go a step further and say that not a single accusation is made against the Chief Minister, Mr. Ghafoor. Why should Ghafoor resign? You are taking the parallel of Gujarat. You are taking the analogy of Gujarat. The Chief Minister resigned there and Government could not be formed. Here Mr. Ghafoor has not resigned. When a Congress Chief Minister resigns, you complain that the Central leadership has compelled him to resign. If he does not resign, you complain against the national leadership that it has not made him resign.

4 P. M.

SHRI O. P. TYAGI : That is a fact.

SHRI V. B. RAJU : The Congress is the majority party there. There is no accusation against the Chief Minister. There is no charge against the Chief Minister. He has the majority. If the Assembly is called to meet, the Government has the majority there. You say that these members are not representatives of the people. I know this has happened once in my State also. When you mislead the people, when you create such conditions where only terror works, at that time you demand those members who are within to get out so that those who are outside could get in. In that tense atmosphere you want elections. Mr. Rajnarain gave a warning and said "I will give you seven days' time, and in seven days elections must be held." You can understand it, because if more time is given, the tempo that they have built or the terror tactics that they have adopted there will fizzle out and the people will not be under their control. Can elections be held in such an atmosphere ? I am afraid some Opposition parties have been convinced that they cannot defeat the Congress in the normal way through the ballot box and so they are engineering this sort of situation where people are taken to the streets. It is because of the lack of confidence in the functioning of the institutions on the part of the Opposition parties that they are employing a new instrument and they have brought in a new dimension to the political situation, that is, taking the people to the streets. Is it actually the wish of the political parties that these great matters, big issues, must be resolved in the streets ? It can never be done. The Congress, in its struggle against the British for freedom, took those parties which came with it and marched ahead and secured freedom for the country. Today a situation has arisen where democracy must be saved in this country. As you know, many countries which became independent after the Second World War, though they had democratic polity, had to fall down and come under dictatorship. We have got the experience of Astsi isd Africa before us. We would not

allow this country to fall a victim to that. We are going to fight tooth and nail, whatever may be the consequences. To save democracy, we are going to take all friends with us. Let there be no misunderstanding about it. Whoever stands for the preservation of Parliamentary democracy in this country is our friend. There is nothing wrong about it. What is the use of accusing CPI for holding a big rally yesterday ? Definitely the Congress sympathy is with them. It has our support. We support those political forces in this country which subscribe to Parliamentary system. There is no mincing of matters here. I appeal to you not to personalise issues. After 27 years of freedom, big issues are in conflict.

Lastly, I want to ask : Where does Fascism come from. Fascism does not come from the skies. Fascism does not come as a product. Failure of democracy creates a vacuum and in that vacuum Fascism and dictatorship enter. These forces which subscribe to prevention of Fascist dictatorship in this country have our support. For that purpose all parties which support democracy should unite and face the situation in Bihar. I am definitely hopeful that if people of Bihar are given a respite and time to reconsider and rethink, they are sure to fall in line with these ideas. People of Bihar have made great contribution and sacrifices for securing freedom for this country and for building democracy in this country. In the past great personalities came up from that area. Given time, 1 am sure they will not fail to rise to the occasion. I would suggest that this debate should end with a call to the Bihar people to rethink and reconsider and realise the need of the hour which is to stand by democratic polity.

श्री बनारसी दास : अधिष्ठाता महोदय, पिछले सत्र में भी हमने बिहार के बारे में विचार-विमर्श किया था और इस सत्र में भी आज हम बिहार की स्थिति पर विचार कर रहे हैं।

श्री राजू जी ने अपना पक्ष प्रस्तुत करते हुए इस बात का दावा किया है कि बिहार के संघर्ष में कोई इशूज़ इनवाल्वड नहीं हैं, बिहार की गवर्नमेंट के खिलाफ, गफ्फूर मिनिस्ट्री के खिलाफ कोई आरोप नहीं है। डा० अहमद ने कहा कि वह आन्दोलन जनआन्दोलन नहीं है बल्कि श्री जयप्रकाश नारायण के फ्रस्ट्रेशन से यह आन्दोलन पैदा हुआ है, जयप्रकाश की सुसुप्त सत्ता लिप्सा आज एक अवसर पाकर एक संघर्ष के रूप में फिर से एक नदी की शक्ल में बह कर पैदा हो गई है। बिहार की स्थिति पर हमारे मतभेद हो सकते हैं, लेकिन इसके महत्व को सभी मानते हैं। मैं एक ही प्रश्न करता हूं कि 9 तारीख को आपका प्रदर्शन दिल्ली में हुआ और 16 तारीख को कांग्रेस का प्रदर्शन पटना में होने जा रहा है, कल का कम्युनिस्ट पार्टी का प्रदर्शन जयप्रकाश के आन्दोलन के विरोध में हुआ, तो आप बिहार के इशू पर जन-मत का आदर करना चाहते हैं या आपका भरोसा बार्डर फोर्स के ऊपर है या सेंट्रल रिजर्व फोर्स के ऊपर है? आपने 60 हजार बी०एस०एफ० और सैन्ट्रल सीक्यो-रिटी फोर्स के जवानों को इस्तेमाल किया, हवाई जहाजों का इस्तेमाल किया, लीफ-लैटर्स को बांटा, सारे बिहार में 150 मील तक बैरीकेड्स लगाए, टियरगैस का इस्ते-माल किया गया, जयप्रकाश नारायण पर लाठियों का प्रहार किया गया, मीसा का इस्तेमाल किया गया जबकि श्री के० सी० पन्त, तत्कालीन गृह मंत्री ने कहा था कि मीसा का प्रयोग किसी राजनैतिक आन्दोलन को दबाने के लिए नहीं किया जाएगा। डी० आई० आर० का प्रयोग राजनीतिक विरोधियों के खिलाफ नहीं किया जाएगा। बार्डर पुलिस बनी थी बार्डर की रक्षा के लिए। तो क्या 4 तारीख को बिहार के अन्दर बी०एस०एफ० के जवान बिहार के बार्डर की रक्षा कर रहे थे? यह जो सेंट्रल रिजर्व फोर्स है क्या वहां पर किसी शान्ति स्थापित करने करने के लिए थी? तो आपका यकीन किसमें है? अगर प्रदर्शन में है, अगर आप

[श्री बनारसी दास]

जनमत का कोई वर्डिक्ट मानना चाहते हैं तो शान्तिमय और वैध प्रदर्शनों पर आप क्यों प्रतिबन्ध लगाना चाहते हैं? 16 तारीख को आप प्रदर्शन करना चाहते हैं और कहना चाहते हैं कि बिहार की जनता जयप्रकाश नारायण के विरुद्ध है और बिहार की जनता पूरी तरह से गफ्फूर के साथ है। तो 16 तारीख के प्रदर्शन पर आपको यकीन है या पुलिस के डंडों पर यकीन है? अगर आपको यकीन जनमत के ऊपर है तो क्यों नहीं बिहार की जनता को जो कि उसका नैसर्गिक अधिकार है, जो कि हमारे कांस्टीट्यूशन की प्रियेम्बुल के अन्दर लिखा हुआ है, आप उसको व्यक्त करने का अधिकार देते। कल कम्युनिस्ट पार्टी का प्रदर्शन हुआ। जब 4 तारीख का प्रदर्शन हुआ तो 50 रेलगाड़ियां रद्द कर दी गईं? गंगा नदी में प्राइवेट बोट्स को डुबा दिया गया, बसों को रोक दिया गया, ट्रकों को रोक दिया गया और डेढ़ सौ मील तक ब्रेकिट्स लगाए गए।

(Interruption)

श्रीमन्, मैं ओम मेहता जी से कहूंगा जितने हम लोग बोलने वाले हैं उससे ज्यादा आपकी तरफ से बोलने वाले हैं। डा० जैड० ए० अहमद आपके वकील हैं। क्षमता रखिए सुनने की। तो श्रीमन्, मैं कह रहा था कि एक तरफ तो 4 तारीख को जयप्रकाश जी के निवास स्थान पर 400 लड़के-लड़कियों को गिरफ्तार करके ट्रक्स के अन्दर भेज दिया गया। 4 तारीख को हमारे संगठन के नेता सत्येन्द्र सिंह, एम०पी०, श्री दिग्विजय नारायण सिंह, श्री नाना जी देशमुख को मीसा के अन्दर बन्द कर दिया गया। तो आपका भरोसा जन प्रदर्शन पर नहीं है। आपका यकीन केवल पुलिस के ऊपर है।

अभी श्री हर्षदेव मालवीय जी ने बड़ी योग्यतापूर्वक यह साबित करने की कोशिश की कि एक्साइज ड्यूटी, सैल्स टैक्स रेवेन्यूज अब बढ़ गए हैं वहां पर। इसके माने ये हैं कि वहां कि गवर्नमेंट में अब गति लाने, एफिशिऐंसी लाने के लिए जयप्रकाश के आन्दोलन की जरूरत थी। अगर जयप्रकाश का आन्दोलन नहीं होता तो जो वहां पर जो आज कार्यक्षमता पैदा हुई है वह न होती।

अभी राजू साहब ने कहा कि गफ्फूर सरकार के खिलाफ क्या आरोप है? सबसे बड़ा आरोप उनके जो पोषक हैं, जैड० ए० अहमद, उनका है। उन्होंने कहा कि गफ्फूर मधुबनी के अन्दर जनता के मतों से नहीं जीते, भ्रष्टाचार और थैलियों के बल पर जीते। अभी राजू साहब ने कहा कि गुजरात के चीफ मिनिस्टर ने रिजाइन किया। गुजरात के चीफ मिनिस्टर ने रिजाइन नहीं किया उनको रिजाइन करने के लिए बाध्य हाई कमांड ने किया। बिहार के कांग्रेस दल का बहुमत पूरी तरह से गफूर के विरुद्ध था। हाईकमाण्ड ने उसको रोका और अभी हाल में श्री बरुआ चार्ज लेने के बाद वहां गए और कहा कि हमारी मैत्री सोवियत रशा और इस्टर्न कंट्रीज से है इसलिए हमारा धर्म है कि हम सी०बी०आई को अपना मित्र बना कर चलें तो वे अपना एक मित्र धर्म निभाने जा रहे हैं। जयप्रकाश जी के लिए डा० अहमद कहते हैं कि वह कभी कम्यूनिस्ट थे। वह भूदानी बने और कभी उन्होंने सीमित डैमोक्रैसी का प्रतिपादन किया। जयप्रकाश जी सत्य के साधक रहे हैं। गांधी जी पर भी इनकांसिसटैन्सीज का आरोप लगाते थे तो पंडित नेहरू ने स्वयं कहा कि गांधी जी की छटी इन्द्री इनट्यटिवली डिसीजन पर पहुंची थी। मैं जिनको गलत समझता था बाद में अनुभव ने

साबित किया कि गांधी जी ठीक रास्ते पर थे मैं गलत था। जयप्रकाश जी शुरू में कम्युनिस्ट हो सकते हैं, गांधी जी की आलोचना कर सकते हैं लेकिन वह एक सत्य की खोज में थे। गांधी जी ने स्वयं कहा है :

"I am not consistent with my qast. I am consistent with truth as I see it from minute to minute."

जो आदमी सत्य का साधक होगा वह कहीं बंद पानी की तरह से एक जगह नहीं रुकेगा। अब कहा जाता है कि बिहार की गवर्नमेंट को, जो विधिवत चुनी हुई है पुल डाउन कर दें तो क्या समस्याओं का हल हो जाएगा। वहां पर चुनाव होंगे फिर कांग्रेस पार्टी का बहुमत होगा क्या उससे कोई समस्या हल होगी तो मैं कहना चाहता हूं कि दो मत हैं, एक तरफ तो इलैक्टोरल वर्डिक्ट का पैराडोक्स के अनुसार कांग्रेस को 43 प्रतिशत के मत से शासन करने का अधिकार मिला है और दूसरी तरफ 57 प्रतिशत जनता का आक्रोश है और उस आक्रोश से दो चीजें पैदा होती हैं। एक तो हमारे मित्रों ने, श्री आडवाणी जी ने कहा कि प्रपोर्शनेट रिप्रजेंटेशन हो, अनुपातिक चुनाव हों तो उस समय सब जगह कांग्रेस अल्पमत में होगी।

श्रीमन्, मैं यह अर्ज कर रहा था कि यह जो इलैक्ट्रोरल पैराडोक्स है इससे दो विकल्प पैदा होते है। एक तो जैसा आडवाणी जी ने कहा प्रपोर्शनेट रिप्रजेंटेशन हो। प्रपोर्शनेट रिप्रजेंटेशन से पता चलेगा कि 57 फीसदी दूसरे दल होंगे और 43 प्रतिशत कांग्रेस का दल होगा। हमारे जैसे लोगों का मत है कि इससे राष्ट्रीय एकता, राष्ट्रीय सुरक्षा और देश की प्रगति को हानि होगी और जन आक्रोश जो है जनता का जो विरोध है उसका हल केवल जन-आन्दोलन होगा। महात्मा गांधी ने कहा था :

"The conception ofmyswaraj does not mean the acquisition of power into a few hands, but the capacity of the people to resist power, if misused. I want to educate the people to have the authority to regulate and control, the Government."

तो मैं श्री राजू से निवेदन करूंगा कि गांधी जी ने कहा था कि जनता में क्षमता है सरकार को रेगूलेट करने की और कंट्रोल करने की। जनता को शक्ति है टू रैसिस्ट पावर, इफ मिसयूज्ड। यह एक राजनतिक सत्य है और यह सही है कि आज आपका बहुमत है, मिलिटरी आपके हाथ में है, पुलिस आपके हाथ में है। आप कोई भी धमकी दे सकते हैं। लेकिन अगर आपका लोकमत में यकीन है तो आपके हरेक मिनिस्टर को महात्मा गांधी के इस कथन को अपने सामने रखना होगा। गांधी जी ने कहा था :

"The rule of others without the rule of onself is as self-deceptive as a painted mango fascinating to look at, but empty and hollow from within."

यह बात भी सही है कि जिस व्यक्ति के हाथ में सत्ता हो उसके दिमाग में सन्तुलन की आवश्यकता है। आज बिहार का आन्दोलन किसी अन्य कारण से पैदा नहीं हुआ है। यह जनता द्वारा उत्पन्न किया हुआ आन्दोलन है। वहां पर विद्यार्थियों का संघर्ष है। यह सवाल भी हमारे सामने आता है कि क्या श्री जयप्रकाश नारायण जी की कोई राजनीतिक महत्वाकांक्षाएं हैं? क्या वे किसी अन्य भावना से संचालित हैं? मुझे यह सुनकर आश्चर्य हुआ जब श्री जयप्रकाश नारायण जी को अमेरिका का स्टूज कहा गया।

If Jayaprakashji is the stooge of America, I am afraid there cannot be any patriot in this country. If it looks so, I cannot help it.

अगर श्री जयप्रकाश जी को सी० आई० ए० के एजेन्ट कहा जाय तो जो लोग ट्रेजरी बेंचेज

[श्री बनारसी दास]

पर बैठे हैं और जो हमारी प्राइम मिनिस्टर हैं उनको क्या कहा जाय ? श्री जयप्रकाश जी जब देवाली जेल से रिहा हुए थे तो गांधी जी पर यह आरोप लगाया गया था कि वह जयप्रकाश जी का पक्षपात करते हैं। इस पर गांधी जी ने कहा था कि जयप्रकाश वह जाज्वल्यमान हीरा है, जिसका मुकाबला विश्व भर में नहीं है । श्री जयप्रकाश अगर किसी अन्य देश में जन्मा होता तो उसको उस देश का वीर पुरुष कहा जाता और उसकी पूजा होती । जयप्रकाश जी को कांग्रेस कार्य समिति के अन्दर रखा गया । सन् 1935 में लखनऊ में जो कांग्रेस का अधिवेशन हुआ था, उस समय की यह बात है । पंडित जवाहर लाल नेहरू जी ने वैदेशिक विभाग का जयप्रकाश जी को इंचार्ज बनाया था । ऐसी स्थिति में यह कहना कि जयप्रकाश जी अन्य दलों द्वारा भ्रमित हो गये हैं जयप्रकाश जी की इंटीग्रेटी, उनकी कार्यकुशलता पर संदेह नहीं किया जा सकता है । डा० अहमद ने ठीक कहा कि वे भ्रमित होने वाले व्यक्ति नहीं हैं । लोकमान्य तिलक ने 'स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है' यह नारा दिया था । हर एक राजनीतिक शास्त्री इस बात को मानता है कि जनता का यह अधिकार है कि वह अपनी आवाज को अत्याचारों के खिलाफ उठायें । सरकार को बदलने के सिर्फ तीन ही रास्ते होते हैं और वे यह हैं कि या तो वह बैलट हो सकता है या बुलेट हो सकता है और या जनता का आन्दोलन हो सकता है । जहां तक बुलेट की बात है वह तो आउट आफ डेट हो चुका है । बैलट के बारे में विवाद चल रहा है कि उसमें किस प्रकार से परिवर्तन किया जाय । इस संबंध में भूतपूर्व राष्ट्रपति श्री गिरि कुछ बातें कह चुके हैं, उपराष्ट्रपति श्री पाठक ने भी इस बारे में कहा है और सुप्रीम कोर्ट का वरडिक्ट भी सामने आ चुका है । सुप्रीम कोर्ट में तो अब श्री रे० प्रगतिशील चीफ जस्टिस हैं । उनका कहना है कि चुनावों में पैसा का स्तेमाल इस देश से डेमोक्रेसी को खत्म कर देगा और आज स्वयं प्रधान मंत्री इस बात को स्वीकार करती हैं कि यह जो आर्डिनेन्स जारी किया गया है कि यह टेम्परेरी मेजर है और केवल पिछली बातों का प्रतिकार करने के लिए है । सब लोग जानते हैं कि सन् 1969 से पहले पोलिंग बूथवाइज वोटों की गिनती होती थी । इंगलैण्ड के अन्दर पोलिंग बूथ पर ही वोटों की गिनती होती है । विरोधी दल के लोग कहते हैं कि चुनावों में गड़बड़ी को रोकने के लिए आइडेंटिटी कार्ड दिये जायें । कितनी ही और भी तजवीजें दी गई हैं और अगर उनके अनुसार चुनाव हों तो उनको वास्तव में चुनाव कहा जा सकता है । तो उसके लिए एकमात्र मार्ग रह गया जनता के प्रदर्शन का और स्वयं आपने इसको मान लिया । 9 तारीख को आपका प्रदर्शन हुआ । अभी मेरे दोस्त सुलतान सिंह कहते थे कि किसान को फुर्सत नहीं, मजदूर को फुर्सत नहीं, ब्लैकमार्केटियर्स प्रदर्शन करते हैं । तो कल जो 11 तारीख का प्रदर्शन पटना में हुआ क्या यह ब्लैकमार्केटियर्स का था या सोवियत रशा के वालंटियर्स का था ? यह किस का प्रदर्शन था और 16 तारीख को जो प्रदर्शन होगा यह किनका होगा, क्या इसके लिए आपके जो यूथ्स हैं, उनकी ट्रेनिंग हो रही है । आप कहते हैं 5 लाख की मैसिव रैली होगी तो क्या वह मजदूरों की होगी या व्हाइट कालर वाले लोगों की ? (*Time bell rings*) मैं 5 मिनट में समाप्त करता हूं । श्रीमन्, आज यह कहना कि जयप्रकाश पार्टीलैस डेमोक्रेसी की बात करते हैं, तो जयप्रकाश जी ने स्वयं कहा यह उनका रिमोट ऐम है । मार्किस्ट्स भी कहते थ— State will whither away. तो क्या रशिया में स्टेटें विदर अवे हो गईं । गांधी जी कहते थे : Look upon every increase in power with great suspicion. गांधी जी भी अनार्किस्ट थे । गांधी जी ने कहा, मैं किसी राष्ट्र के अन्दर सेना का प्रतिपादन नहीं करता, लेकिन मैं कल्पना नहीं करता भारत की सरकार बिना सेना के चल सकेगी । तो इसलिए जो राजनैतिक

ए-बी-सी-डी है उसको भी नहीं समझ कर कहना और पार्टीलैस डेमोक्रेसी की बात करना, मैं समझता हूं जहां जनता स्व-शासन करेगी, जहां जनता में आन्तरिक नियंत्रण होगा, अपने आप वहां पार्टीलैस डेमोक्रेसी होगी। 1,000 साल में या 100 साल में यह कौन जान सकता है हम लोग पार्टीलैस डमोक्रेसी में यकीन करने वाले नहीं हैं ? तो आज-इश्यू क्या है। जैसा जगजीवन बाबू ने कहा है, अगर आज असेम्बली डिजाल्व होती है तो हम जीतेंगे तो आप यह बतलाइए तमाशा क्यों कर रहे हैं ? आप जैसा यह प्रदर्शन कर रहे हैं 16 तारीख को और जैसा 9 तारीख का आपने प्रदर्शन किया, उसके अन्दर निरोध की गोलियां, शराब की बोतलें आईं, आखिर इसकी क्या जरूरत थी। अरे भाई ? जब आपके पास साधन मौजूद हैं तो डिजाल्व क्यों नहीं करते ? गुजरात में आपने यह किया सुलतान सिंह जी ने कहा, हमारे यहां तो एक साल पहले लोक सभा भंग कर दी। जब एक साल में आपने पार्लियामेंट भंग कर दी तो असेम्बली को भंग करके वहां पर भी कम से कम आडवाणी साहब और जयप्रकाश जी को दिखा दो कि हम इतने डेमोक्रेट हैं, हमने तो असेम्बली भंग कर दी, अब बताओ जनता तुम्हारे साथ कहां तक है। इसलिए, श्रीमन्, मैं आपके द्वारा निवेदन करना चाहता हूं, यह जो आंदोलन है, यह आंदोलन जनता का आंदोलन है। जयप्रकाश जी ने तो जनता की और सरकार की सेवा की है, इसको हिंसा के मार्ग से बचाया है। आप देखिए कल ही का आंदोलन जो हुआ था, डा० अहमद की पार्टी वालों का आंदोलन था, उसमें कितने बे-गुनाहों के सर फूटे, कितने बे-गुनाहों का खून बहा, हथौड़ों के साथ, हांसी के साथ, लाठियों के साथ आए थे और वह भी गफूर सरकार के साथ में, तो क्या इसी प्रकार का आंदोलन 4 तारीख को हुआ था ? क्या उसमें किसी के हाथ में लाठी थी, किसी के हाथ में चाकू था ? तो इसलिए श्रीमन्, मैं आपके द्वारा निवेदन करना चाहता हूं, अंग्रेज भी यही कहा करते थे, चर्चिल भी यही कहा करता था कि गांधी नेकेड फकीर है। वे भी सत्ता के अभिमान में कहते थे। तो क्या जिस प्रकार से गफूर को सत्ता म बैठा रहे हैं, वह इस बात की चुनौती नहीं देता कि असेम्बली को फोर्सिबली कैप्चर कर लें। यह तो हिंसात्मक आंदोलन में, मिलटरी कू में होता है। अहिंसात्मक जन आंदोलन से सरकार का हृदय परिवर्तन होता है। हम चाहते हैं सरकार का हृदय परिवर्तन हो, सरकार ऐसा महसूस करे कि यह आंदोलन शुद्धि के लिए है, यह आंदोलन स्वयं उसका जीवन बनाने के लिए है। लेकिन कभी-कभी सत्ता के मद में सत्य नजर नहीं आता है। लार्ड लिनलिथगो ने कहा था

उपसभाध्यक्ष (श्री जगदीश प्रसाद माथुर): अब नहीं। जो टाइम आपने मांगा था वह भी समाप्त हो गया।

श्री बनारसी दास : उस समय श्री लिनलिथगो ने कहा था कि हम ब्रिटिश इतिहास में इतने कभी भी अप्रिय नहीं बने जितने कि आज हैं। आज मैं मुसलमानों पर भी भरोसा नहीं कर सकता हूं, मुसलमान मैं इस-लिये कह रहा हूं, क्योंकि डा० अहमद उनके समर्थक थे और मुस्लिम लीग अंग्रेजों के साथ थी। तो इस प्रकार का ज्ञान लिन-लिथगो को था कि ब्रिटिश सरकार भारत की जनता के हृदय से हट चुकी है। उसी तरह से आज जो सरकार बार्डर पुलिस के सहारे रह सकती है, लेकिन वह जनता के हृदय को जीत नहीं सकती है, क्योंकि वह जनता के हृदय से हट चुकी है। इस बात को सरकार को अच्छी तरह समझ लेना चाहिए।

श्री नन्द किशोर भट्ट (मध्य प्रदेश) : मान्यवर उपसभाध्यक्ष, पिछले तीन घंटों से हम बिहार की हलचल के सम्बन्ध में चर्चा कर रहे हैं और अनेक दली के वक्ताओं ने इस सम्बन्ध अपनेअपने विचार प्रकट किये।

[श्री नन्द किशोर भट्ट]

परन्तु प्रश्न यह उठता है कि आज हमारे और आपके सामने कौनसी चुनौती है, जिसका हमें सामना करना है और जो आज हमारे सामने आजादी के बाद उग्र रूप से उपस्थिति हुई है। हम लोगों ने आजादी के बाद संविधान बनाया और उस संविधान को बनाने में देश के बड़े-बड़े पंडित और सभी पार्टियों के प्रतिनिधियों ने उसमें हिस्सा लिया। उस संविधान के अनुसार देश का शासन तंत्र पिछले 26 सालों से चल रहा है। ऐसे कई मौके भी आये जब कि किसी न किसी दल की सरकार का शासन देश में चलता रहा है। चाहे उसका बहुमत थोड़ा ही क्यों न रहा हो। कभी भी ऐसा अवसर नहीं आया, जहां किसी दल को चाहे उसका थोड़ा ही बहुमत क्यों न रहा हो, शासन करने का अधिकार न दिया गया हो।

पिछले पांच सालों से हम यह देखते आ रहे हैं कि शायद ही कोई राजनीतिक दल बचा हो, जिसने इस देश में किसी न किसी राज्य में शासन न किया हो। शायद ही कोई दल बचा हो जिसने अपने ढंग से किसी न किसी राज्य में शासन न चलाया हो और उसको शासन चलाने का मौका न मिला हो। इस तरह की जो भी सरकारें बनीं, चाहे उन्होंने मिली जुली सरकार बनाई, जो भी सरकार उन्होंने बनाई उसने देश के राज्यों में शासन चलाया और कभी भी किसी दल की ओर से इस तरह की कोशिश नहीं की गई कि जो न्यायोचित सरकार बनी हुई है, उस सरकार को काम करने से रोका जाय।

मान्यवर, आज हमारे सामने प्रश्न क्या है? बिहार के सामने प्रश्न यह है कि वहां पर संविधान के अनुसार एक चुनी हुई सरकार बनी हुई है, लेकिन उसको अपने ढंग से काम करने का मौका नहीं दिया जा रहा है। वहां पर सरकार बनी हुई है, लेकिन कुछ पार्टियों की ओर से इस तरह का वातावरण तैयार किया जा रहा है कि वहां पर जो सरकार बनी हुई है वह काम न कर सके। मैं उन महा पंडितों से पूछना चाहता हूं, उन नेताओं से पूछना चाहता हूं जो बिहार विधान सभा को भंग करना चाहते हैं उनका इस समय मकसद क्या है? वे जिस प्रकार से जनता की समस्याओं को दूर करना चाहते हैं, क्या वे समस्याएं इस तरह के आंदोलनों से दूर हो सकती हैं? आज जिस तरह से जनसंघ, संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी, सी० पी० आई० (एम०) श्री जयप्रकाश नारायण को आन्दोलन में आगे करके अपना स्वार्थ सिद्ध करना चाहते हैं, उस प्रकार का आन्दोलन चला कर वे जनता की समस्याओं को दूर कर सकेंगे? इन पार्टियों के पास अभी तक न तो कोई आर्थिक कार्यक्रम है और न ही किसी तरह का प्रोग्राम है। आज बिहार आन्दोलन का जो असर पड़ने वाला है, उसका असर सारे देश पर पड़ेगा और इसका असर हमारे सारे लोकतंत्र पर पड़ने वाला है,। वहां पर सरकार ने जनता को जो वादे किये थे, हो सकता है उसने पूरे नहीं किये लेकिन क्या इस प्रकार के आन्दोलन करके जनता को दिये गये वादों को पूरा किरा जा सकता है? इसके साथ ही साथ जो विधिवत सरकार वहां पर है उसको उखाड़ फेंकने के लिए आन्दोलन करना क्यों उचित है। इस सम्बन्ध में बहुत बातें कही जा चुकी हैं और अगर मैं विस्तार में जाऊंगा तो उसका अन्त नहीं हो सकता है। बिहार में विद्यार्थियों ने अपना एक मांग-पत्र रखा था और उस मांग-पत्र में जो मांगें उन्होंने मांग रखी थीं, उन्हें बहुत हद तक पूरा किया जा चुका है। उनकी एक मांग थी कि बढ़ती हुई महंगाई के जमाने में जो उन्हें स्कालर-शिप दिया जाता है उसकी मात्रा बढ़ाई जानी चाहिए और वह मात्रा बढ़ा दी गई है। स्कालरशिप की संख्या भी बढ़ाई गई है। मैडिकल एग्जामिनेशन के लिए जो उनकी मांग थी वह भी पूरी की गई। जहां तक एक्सेसाइज नुक्स का सवाल है न केवल बिहार में बल्कि सभी जगह

कागज मंहगा हुआ है, पर जहां तक बिहार का संबंध है वहां की सरकार ने पेपर सब्सीडाइज्ड कीमत पर लेकर बुक-सेलर्स को दिया और उसके परिणाम-स्वरूप वहां सस्ती कापियां मिलने लगीं। होस्टल ज्यादा बनाए गए। विद्यार्थियों की मांग थी कि शिक्षा की प्रणाली उचित नहीं है उसकी ठीक करने के लिए सरकार को कदम उठाना चाहिए। गफ्फूर सरकार ने एक कमेटी बनाई है जो इस प्रश्न की विस्तार से जांच कर रही है खाद्यान्न के बारे में डिहोर्डिंग की कैम्पेन चल रही है, सरकार सस्ता अनाज देने का प्रयत्न कर रही है। विद्यार्थियों की मांग थी कि यूनिवर्सिटीज के मामले में उनका सहयोग लिया जाए। इसके लिए एक बिल भी इन्ट्रोड्यूस किया जा रहा है। कहने का तात्पर्य यह है कि हमारे आज के विद्यार्थी कल के नेता हैं और उनकी कठिनाइयों पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करना चाहिए और इसीलिए बिहार सरकार ने जो भी कदम लिए जा सकते थे वे लिए।

यहां पर एक पाइंट इलैक्टोरल रिफार्म्स के बारे में कहा गया। न केवल जो आन्दोलनकारी हैं उनके सामने ही दिक्कतें हैं बल्कि हम लोग जो कांग्रेस में हैं जो चुनाव लड़ते हैं उनके सामने भी कठिनाइयां उपस्थित होती हैं। चुनाव में जो खर्च होता है उसकी कठिनाई हर साधारण मनुष्य के सामने आती है। इसके लिए श्रीमती इन्दिरा गांधी ने बराबर कहा है कि इसके बारे में बैठ कर विचार करना चाहिए। बात यह है कि इलैक्टोरल रिफार्म्स की आड़ में मांग की जाती है असैम्बली को डिस्साल्व किया जाए, मांग की जाती है प्रपोर्शनेट रिप्रेजेंटेशन का सिद्धांत लगाया जाय। असैम्बली क्यों डिसाल्व की जाय? कहा जाता है कि गुजरात में ऐसा हुआ। गुजरात में असैम्बली के बहुत से विधायकों ने त्याग-पत्र दे दिये थे, वहां ऐसी स्थिति हो गई थी कि विधान सभा भंग करने के अतिरिक्त कोई चारा गवर्नर के पास नहीं था, परन्तु आज बिहार में बहुमत की सरकार बराबर बैठी हुई है। ऐसी स्थिति में वहां की विधान सभा भंग की जाती है तो विकल्प क्या है। कहना बड़ा आसान है, पर व्यवहार में वैसा संभव नहीं हो सकता। श्री आडवाणी जी ने कहा कि अल्पमत की सरकार चल रही है। जिसको ज्यादा वोट मिलता है और जो दल बहुमत में होता है उसी को सरकार चलानी होती है। जहां तक एकाउन्टेबिलिटी की बात है कि सरकार ने यह नही किया, वह नहीं किया, यह कहना अभी उचित नहीं है। जब तक विधान सभा का कार्यकाल है उसको चलने दिया जाए, फिर हम भी मैदान में जाएंगे, आप भी मैदान में जाएंगे, जो भी होगा जनता के सामने होगा।

जनता लोकतंत्र की मालिक होती है और जनता ही निर्णय कर सकती है। जिस प्रकार का आन्दोलन चल रहा है उसके विषय में मैं अधिक नहीं कहना चाहता, सिर्फ इतना ही कहना चाहता हूं कि जो कुछ किया जा रहा है उस पर ठंडे दिल से विचार किया जाए कि हम लोग किस ओर जा रहे हैं। पौलिटिकल डेमोक्रेसी का कोई मतलब नहीं होगा अगर हम इकोनोमिक डेमोक्रेसी की ओर न जाएं। जो गाय की आड़ लेकर हिन्दु धर्म की रक्षा करना चाहते थे जब सब प्रकार के उनके प्रयोग असफल हुए तो उन्होंने जय प्रकाश बूबा की आड़ में अपने स्वार्थ सिद्धि के लिए इस प्रकार का आन्दोलन प्रारम्भ किया है। मैं बड़े नम्र शब्दों में कहना चाहता हूं कि जिस ढंग की चीजें चल रही हैं उससे न केवल

[श्री नन्द किशोर भट्ट]

बिहार बल्कि समग्र देश के लोग सोच रहे हैं कि जो लोग इस आन्दोलन के पीछे हैं उनको सफलता नहीं मिल सकती। मैं उनसे पूछना चाहता हूं कि जो उन्होंने अपने सामने उद्देश्य रखा है क्या वह प्राप्त हो सकता है?

कहा जाता है राइट टु रिकाल होना चाहिए। वह अधिकार सोशलिस्ट कन्ट्रीज में है, स्विटजरलैंड में भी है। छोटे से देश में यह सम्भव हो, पर हमारे देश में जहां 60 करोड़ लोग रहते हैं इस प्रकार की कोई चीज सम्भव नहीं हो सकेगी। अगर सम्भव हो भी सकेगा तो क्या हम बैठ कर बात चीत कर सकेंगे? यह करना होगा, इस बारे में कोई भी निर्णय लेना होगा तो किसी नाते से जो जनता की आर्थिक कठिनाइयां हैं उनको बढ़ाकर इस प्रकार की चीजों का कोई हल निकल नहीं सकता है। इसका हल निकल सकता है बैठकर चर्चा करने से। राइट टू रिकाल का प्रवाधान हमारे संविधान में नहीं है। श्रीमन् आज सब जानते हैं कि लोकतंत्र जहां जहां सफल हो चुका है वह बड़े ही ठोस आधारों पर, ठोस सिद्धांतों पर सफल हुआ है। संविधान के प्रवर्तकों ने केवल आंख मूंद-कर हमारे संविधान को नहीं बनाया, मात्र कंस्टीट्युयेंट ऐसेम्बली में बैठकर नहीं बनाया था, बल्कि उनके सामने संसार के कितने बड़े बड़े देश हैं उनके यहां लोकतंत्र की जो प्रणाली है उनका अध्ययन किया था। वह चाहते तो रिकाल की व्यवस्था कर सकते थे। स्वाभाविक है कि जब रिकाल की व्यवस्था हमारे संविधान में नहीं है तो उसके कई कारण हैं। फ्रांस में कितनी सरकारें आती हैं, कितनी जाती है, लेकिन उससे जनता का काम नहीं रुकता। लेकिन बराबर ऐक्सपरिमेंट्स इन फ्यूटिलिटी चलते रहते हैं। अगर यह चीज हमारे देश में कायम हो गई तो निश्चित रूप से जिस गरीबी को, जिस सामाजिक अन्याय को हम मिटाना चाहते हैं, गरीबी और अमीरी के भेद को मिटाना चाहते हैं वह कदापि सम्भव नहीं हो सकता है।

श्रीमन् आज बिहार में कोई कारखाना बंद नहीं है—क्या इस लिए बंद नहीं है कि वर्किंग क्लास की ग्रिवेंसेज नहीं है, अवश्य हैं, लेकिन हम जानते हैं देश को गरीबी से मुक्ति दिलानी है, देश को समृद्ध बनाना है तो वह आन्दोलन से नहीं होगा। उसके लिए जम कर काम करना पड़ेगा। आप वर्कर्स को बहकाना चाहते हैं? इन 27 सालों में इस देश का नागरिक चाहे वह मजदूर हो, चाहे वह किसान हो, यह समझ चुका है कि देश में सामाजिक परिवर्तन लाना है तो वह तभी हो सकता है जब देश की सम्पत्ति बढ़े। इसलिए यह आन्दोलन जो वहां चल रहा है उसका वहां के किसानों और मजदूरों पर कोई असर नहीं हुआ है। यह स्पष्ट बताता है कि यह आन्दोलन कुछ ऐसे तत्वों का है जो अपनी तानाशाही को स्थापित करने के लिए, अपनी मनमानी सरकार की स्थापना करने के लिए यह प्रयत्न करते जा रहे हैं। इससे इनके ये सपने पूरे होने वाले नहीं हैं क्योंकि आज विद्यार्थी वर्ग, मजदूर वर्ग एवं किसान वर्ग यह सब समझने लगा है।

अभी उस तरफ के एक माननीय सदस्य ने कहा था कि आज के युग में लोगों की इच्छा पूरी करने के लिए बुलेट्स, बैलेट्स या डंडे किसी एक का सहारा लेना पड़ता है। बुलेट्स की बात इस देश में नहीं आती। बुलेट्स की वहां पर जरूरत होती है जहां जनता की

बात को नहीं सुना जाता है। यहां तो हर 4-5 साल में हर एक राजनीतिक दल जनता के सामने जाता है और अपना कार्यक्रम रखता है। इस प्रकार के कई चुनाव हो चुके हैं और इन चुनावों में वोट कभी किसी पार्टी को मिले हैं, कहीं किसी पार्टी को। इसलिए बुलेट्स वाली बात का यहां स्थान नहीं है।

बैलेट्स के आधार पर आपने यह साफ कर दिया कि भारतवर्ष में लोकतंत्र काफी दृढ़ है। संसार के सोशलिस्ट कंट्रीज या दूसरे कंट्रीज बराबर इस बात को मानते हैं कि भारतीय लोकतंत्र की जडे इतनी मजबूत हो चूकी है कि किसी एक प्रदर्शन में किसी की ऐसी ताकत नहीं है कि जो इस देश की जनता को विचलित कर सकता हो। महात्मा गांधी और जवाहरलाल जी की भूमि में कोई इस प्रकार के भुलावे में नहीं आ सकता है। यह निर्विवाद सत्य है कि जयप्रकाश बाबू देश के तपस्वी नेताओं में रहेहैं जिन्होंने भारत को स्वराज्य दिलाया। उनकी आड़ लेकर जो कुछ किया जा रहा है, जिस प्रकार से अपनी तानाशाह को स्थापित करने के लिए उनकी आड़ ली जा रही है और जयप्रकाश जी की जैसी स्थिति आज हो गई है मैं उनके बारे में कुछ नहीं कहना चाहूंगा। मैं इतना जरूर कहता हूं कि उनके प्रति हमारे मन में भी उतनी ही इज्जत है जितनी, आज जो नये लोग आए हैं और उनकी दुहाई देना चाहते हैं। समय बदल गया है, समय की रफ्तार बदल चुकी है और जिस रफ्तार से हमारे देश की प्रगति हुई है उस प्रगति से आज संसार के सभी देश किसी न किसी तरह से हतप्रभ हैं। यह सत्य है कि आर्थिक क्षेत्र में जितनी प्रगति होनी चाहिए थी वह नहीं हुई। जो देश में लोकतंत्र की स्थापना बनाए रखना चाहते हैं, लोक तंत्र की रक्षा करना चाहते हैं वे आगे आएं। हमारे देश के सामने बड़े-बड़े मुद्रा-स्फीति, मंहगाई व बेरोजगारी के प्रश्न हैं उन प्रश्नों को हल करने में हमारी मदद करें।

मुद्रा-स्फीति के बारे में सरकार ने सक्षम कदम उठाए हैं उसके परिणाम-स्वरूप ही आज कीमतों में गिरावट का असर पड़ने लगा है। क्यों नहीं आप लोग आकर जिनके पास ज्यादा रुपया है, कालाबाजारी का रुपया है उसको पकड़ने में सरकार के हाथ मजबूत करते? जिससे जो पैसा दबा हुआ है वह बाहर आ सके। इसी प्रकार से जो डि-होर्डिग के बारे में बार-बार सरकार कह चुकी है और हम जानते हैं कि हमारे देश में गल्ले की कमी नहीं है। जब गल्ले की कमी नहीं है और नकली वातावरण बना हुआ है तो उसको दूर करने के लिए सब लोग साथ आएं। क्योंकि हरेक जानता है कि किस-किस ने और कहां-कहां गल्ला दबा रखा है और उस गल्ले को निकालने के लिए, डि-होर्डिग का मुकाबला करने के लिए कार्रवाही करने की आवश्यकता है जिसके लिए हम सब लोग मिल कर काम करें। जो दिक्कतें जनता के सामने हैं उनको दूर करें। हमारे मित्र जिस प्रकार का वातावरण पैदा कर रहे हैं उससे उन समस्याओं का हल नहीं निकल सकता है। मैं इतना ही कहना चाहूंगा कि जो कुछ हो रहा है वह ठीक नहीं हो रहा है उससे देश की रक्षा नहीं हो रही है, लोकतंत्र की रक्षा नहीं हो रही है। इस लिए अब इस झूठी बातों में पड़ने के बजाए हमें आवश्यकता है सद्बुद्धि की। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि आज का विद्यार्थी कल का नेता है और इस बात को भी भली प्रकार समझ लें कि आने वाली पीढ़ी इस बात को क्षमा नहीं करेगी कि देश उन्नति के रास्ते पर जा रहा था उसे उन्नति के रास्ते पर जाने

[श्री नन्द किशोर भट्ट]

से रोका गया और उसके लिए जो जिम्मेदार थे उनको वे कभी माफ नहीं करेंगे। मैं पुनः उन सब साथियों को जो लोकतंत्र की रक्षा के लिए आज अपना सब कुछ त्याग कर रहे हैं धन्यवाद देता हूं, बधाई देता हूं। जो लोग लोकतंत्र के रथ को रोकने की कोशिश कर रहे हैं, डैमोक्रेसी को बड़ी कठिनाई से प्राप्त किया है उसको नष्ट करने की कोशिश कर रहे हैं मैं उनसे कहना चाहता हूं कि वे इन सब को समझते हैं और इनका हल भी समझते हैं। श्रीमती गांधी ने आर्थिक कार्यक्रम रखा है, कांग्रेस ने जो कार्यक्रम रखे हैं उसके अनुरूप चल कर ही हम अपनी समस्याओं को हल कर सकते हैं।

यह कहना कि जयप्रकाश जी पर लाठी चली उचित नहीं है। पुलिस का काम लाठी मारना नहीं है रक्षा करना है। जो फोटोस्टेट कापी दिखाई गई है उसको अलग-अलग ढंग से इन्टरप्रेट किया जा सकता है लेकिन सच यह कि है पुलिस की बराबर यह कोशिश रही है कि किसी प्रदर्शनकारी को चोट न आए। आज सब लोगों की कलाई खुल चुकी है यह सब जनता अच्छी तरह से जानती है। मैं अधिक नहीं कहना चाहता। अब समय आ गया है कि हम जनता के पैसे को, समय को बर्बाद होने से रोकें और उसका सदुपयोग करने की दिशा में सोचें तभी हमारे देश का कल्याण हो सकेगा।

SHRI NIREN GHOSH : First of all, let there be no doubt that we will participate in a movement to counteract the sinister so called counter-offencive of the Congress—CPI combine against democracy and the people to perpetuate terrorism in India.

[The Vice-Chairman (Shri V. B. Raju) in the Chair]. Who is, 1 would like to ask, in practice the butcher of democracy in India ? It is the Central Governmett and the Congress Party. Dr. Ahmad raised the issue of Kerala. Mr. Advani put it in another way. But let me call a spade a spade. It was at the initiative of Shrimati Indira Gandhi that that Government was summarily dismissed though they were in majority, the so-called majority. The same Shrimati Indira Gandhi says that the government did not have the people's backing . Am 1 to believe her ? Perhaps the only crime of that Communist—led government was that it did not utilise the C. R. P., the B.S.F. or the police to smash a inovcmentwhich was no comparison to the preasent movement in Bihar.

Mr. Feroze Gandhi, husband of Shrimati Indira Gandhi a Member of Parliament then, told Mr. .lyotirmoy Basu on that day that democracy in India had been murdered. So who are the murderers ? They are the murderers. For twenty years there was no democracy in Kashmir. Why did their party keep silent ? Why did the C. P. I. keep silent ? For twenty years democracy was murdered and you kept silent. In fifty constituencies in West Bengal no votes could be cast and whatever votes were cast were cast under the C. R. P. protection. Ballot boxes in fifty constituencies were tampered with. There was huge rigging. I say that our C. P. I. friend —I do not call them reactionaries-are misled. They were a party to that. They know every detail of it. They have not condemned it. Parliamentary democracy has come to an end in West Bengal and in future also it will be like that. There will be no democracy in the country. Democracy has been butchered.

The Bihar's people's movement is a genuine people's movement, far exceeding the following of the parties. Vast masses of non-committed people are involved in it. So it is a genuine people's movement. Sir we have not joined any Jana Sangh committee, it is true. Our party policy is clear because we cannot associate with all parties or any party. We take the Jana Sangh to a be reactionary parly. They may dub *us* in another way. But with our little strength we are trying to organise the workers and peasants and wc are trying to get them together. We are trying to get together democratic forces in order to create a bigger movement than even the Bihar movement.

Therefore, let them be clear about us. The bogey of right reaction is being raised by the Congress leadership. I say the Central Congress Government is right reactionary. Is it not a fact that an overwhelming number of monopolists, landlords, blackmarketcers, smugglers and speculators, which is the source of right reaction, are supporting the Congress and the Congress is their leader, Shrimati Indira Gandhi is their leader ? So this government is the right reactionary government. There may be another right reaction. But this right reaction is solidly entrenched in Delhi. They are not fighting against right reaction. Regrettably enough I have got to say let the C. P. I. revise their ways and means if they want to save democracy in India.

Mr. Jayaprakash Narayan has raised it valid point, namely, will there be free and fair elections in Bihar ? I know that in the next round there will be no free and fair election in West Bengal because this Government has said that under no circumstances will the left be allowed to come to power in West Bengal and in Bihar also. So there will not be any free or fair election. So where is democracy. Sir, from the perusal of a speech made by the Prime Minister at the Congress Parliamentary Party meeting I have come to the firm conclusion that she is not concerned with democracy, with the survival of democracy in India. She is concerned only with one-party dictatorship and her personal rule. She is not sincere about fighting corruption because all those cur-ti.pt people are the source of Congress finances. Has not Mr. Krishan Kant said that from top to bottom the Congress i8 in the grip of black money ? And we know, as a matter of fact, it is so. So, that « the source. So she is not concerned with that. She is concerned with only her personal rule, and murdering democracy wherever the Congress cannot rule even under this unrepresentative system of election-large-scale rigging, role of black money and what not. Not only that, I question the right of Shrimati Indira Gandhi to govern India because she ha-b no mandate from the majority of the people. It is a mandate from only a 43 per cent of the votes cast, not even 50 per cent of the votes cast. She has no S—645RSS *m* mandate. If she is ruling, she is ruling by brute force. Bihar has become a vast prison camp guarded by the BSF, the CRP and the Army. What happened on November 4 ? I did not go into details but this much know that two Bihar policemen wanted to save Jayaprakash Narayan. Nanaji Deshmukh was also there. When the two Bihar pocemen wanted to save Jayaprakash Narayan from the rain of lathi blows, they received innumerable strikes by the lathi. Tney said they were policemen. The BSF got their identity card and threw it away and rained lathi blows. That is what took place on November 4. That is how Jayaprakash Narayan was hurt. That is a fact. The two Bihar policemen, because they also belong to that State, perhaps wanted to save Jayaprakash Narayan. But the BSF which comes from another State beat them up. That was the policy of the British. During the Telengana agitation, Congress MPs had come to me in tears and told me "The CRP men do not know our language and customs. They are raping our women." Mr. Vice-Chairman, MPs from your State have told me this. I say again, she has no intention to fight corruption because she thrives on corruption. The Congress thrives on corruption and black money.

SHRI OM MEHTA : Question.

SHRI NIREN GHOSH : She has no intention to enter into any serious dialogue with the Opposition. I do maintain that a Government which has not got even 50 per cent of the votes cast has no democratic right to rule. It is utterly antidemocratic. And what about Ghafoot ? Even the CPI has said that it ig a fraud. Congress MPs have told me in private that the people are with Jayaprakash Narayan.

SHRI OM MEHTA : Give their names.

SHRI NIREN GHOSH : I would not name them, but I can give tens of names. That is the position in Bihar. Not only is it minority rule, but the Congress wants to perpetuate the rule of the minority over the majority under the present system. That is why when she talks of electoral reforms, she brushes aside proportional representation. So minority rule is being sought to be perpetuated. Is it democracy ? The very system is undemo-

[Shr i Niren Ghosh]

cretic. And what about the Election Commission ? It is subservient; it Is not an independent machinery. All those riggings have taken place with the connivance of the Chief Election Commissoner because he is appointed under the advice of the executive. Unless the Chief Election Commissioner is appointed on the basis of consensus of parties, there is no chan at all for any free and fair poll in any State where the Congress will b; ousted even under this system. What happened in West Bengal in 5 P.M. 1972 7 Had there been free and fair elections, the Congress would have been routed in 1972. Ask your Research and Analysis Wing or C.B.I. They will tell you this in private. Tai? beiig tli; position, how can the Assembly in Bikar go on ? It must have been dbjplvsd. What hippjned in Gujarat? WJ pbtied that election should be held within three months. Similarly we want dissolution of the Bihar Assembly and reaction within a period of a month or two. Nothing can be worse than the present Bihir Government. They talk of right reactionary movement. You are the worst right reactionaty. In West Bengal they are ruling. Your leadership is the most right reactionary. This Congress is the chief menace and destroyer of the future democracy in India. Such Congress has got to be fought tooth and nail. The solidary movemjnt in Bihar should be built up throughout the length and breadth of the country so that the entire people of India come into the picture. Bihar movement should bs given a new dimension by fulfilling the radical demands of peasents and workers. The entire repressive machinery of the Central Government was used in patna to suppress this movement. The CPI has some base in Bihar. I admit it. Ws have no base and therefore we do not matter much in Bihar. The CPI could have mobilised forces and seized lands and given them to the tillers. They can do so now. In Bihar there are zamidars who hold 20,000 to 30,000 ares of land, evading ceiling laws. The CPI could have mobilised workers and opposed the wage freeze laws. Here was an opportunity for them to do these things when the repressive machinery was busy. There is no question of upholding democracy. They are on a ompletely wrong track. Congress is the butcher of democracy. *(Time bell rings)* I have not spoken for even 12 minutes.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V.B. RAJU) : You have already said that there is not much for you to say. We should not sit very late.

SHRI NIREN GHOSH : All the questions involved in Bihar movement have assumed crucial importance becuase it is simply not a question of dissolution of the Bihar Assembly which must come as a matter of fact before anything can be clinched. But the Bihar movement has raised all the cardinal, political problems and issues agitating the minds of the people, such as unemployment, corruption, land to the tiller, workers'rights, end to the monopoly and end to foreign domination in economic field, and change in the electoral system which is undemocratic totally. And, Sir, they have been utilised like that. Even the question of the institution of Governor should come into the picture. The institution of Governor has been utilised in a way, not envisaged or enshrined even in their so-called Constitution, as a handy instrument to suppress the Opposition parties and topple Opposition Governments wherever it is possible to do so and this has been debated again and again in this House. So, that also should come into the picture. There should not be any such thing because they will do any. thing at will with the help of these things.

Now, Sir, I should utter a note of warning to the Congressmen also about utilising the BSF in this manner : Are there not ordinary people who have joined the ranks of the BSF or the army or people coming from amongst the peasants and the poor people of the country ? Will they be even Immune to the democratic urges of the people ? The Border Security Force is there and these people are supposed to defend and take care of the security of borders of the country and you are utilising that force. It is a paramilitary organisation and it is a parallel militaty force that is being bulit up as the personal domain the Prime Minister. If there be ny division in the army, this is the organisation with which she proposes to deal with it. This BSF has come into play and we are told that money is sanctioned for that anil

we do not know from where and it is sanctioned not under any kind of scrutiny whatsoever and there is a huge amount there for this ! Such things are being experimented with which nobody knows, which not even men of competence in the army know. This parallel military force is being built up by the Central Government, Central Congress Government, in order to suppress the people, in order to suppress the democratic movement and choke the democratic movement just to maintain their rule. So, this has become in a sense the cardinal point which has raised all the fundamental questions. No longer will the people submit to a Government which has been arbitrarily formed, which does not enjoy the confidence of the majority of the people and which does not even enjoy the majority of the votes cast! This undemocratic system, this unrepresentative system, flouting every single elementary concept of democracy, cannot be allowed to continue and it has to be challenged at this base and routed whatever be the consequences. From that angle, in that light, our party will view this and we are in a dialogue with the other leftist democratic forces in order to give a radical orientation to the entire Bihar movement and give it a new and *proper* dimension. So, all these questions should be taken up. *(Time bell rings)...* All these questions should be taken up on and India-wide scale, in all the States of India and let the people's movements bs unleashed in all the States of India, embracing all those basic and fundamental issues that have been thrown by the Bihar movement and let there be the challenge of the entire people to this, I say, semi-fascist, fascist, right teactionary Government which is entrenched and which is r jling there on the basis of mere brute force and nothing else.
SHRI BHUPESH GUPTA: Mr. Advanl, have you been oriented.

SHRI R. K. MISHRA: Mr. Vrcs-Chairman, Sir, the debate on the Bihar situation today, expect for a few speeches *[rom* the opposition benches, especially of Mr. Lai K. Advani and Dr. Z. A. Ahmad ___

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. B. RAJU) : Why don't you come" near the mike?

SHRI R. K. MISHRA : Mr. Vtce-Chairman, Sir, the debate today on the Bihar situation, except for the two speeches from the benches of the opposition, one by Shri Lai K. Advani and the other by Dr. Z. A. Ahmad, has been totally irrelevant as far as the issues which this agitation has ! thrown up are concerned.

Sir, the speech which the honourable CPM leader, Shri Niren Ghosh has delivered is an exposition of his party's point of view in regard to the present system and every one of us knows that he does not believe that the system will do anything-that he does not believe in the Election Commission...

SHRI NIREN GHOSH : You are absolutely wrong. You and your party and your leadership do not believe in the parliamentary system. I have demonstrated in practice to show who have put their faith in the democratic system and I have given instances after instances.

SHRI R. K. MISHRA : I would, therefore, deal with the issues which Shri Advani raised in the course of his speech and which I think are very pertinent to the present situation prevailing in the country. At the conclusion of his speech, he said that there was no question of talk on the demand of dissolution of Bihar Assembly. I agree with him. This is one point on which there can be no dialogue. So far as the other issues are concerned, the Prime Minister herself has made it clear that there can be a dialogue. On the question of corruption, educational reforms, elec toral reforms, inflation, rising prices and unemployment, it is possible and necessary to have a dialogue; These are problems which are not party problems. These are national problems which have emerged out of the distortions in our economy during the last 25 years because of the influences of value systems shich arc not related to the Indian These problems have we did not change our educati *m* I administrative systems when we bee,;p.ie independent and it is possible and necessary to have a dialogue and a discussion on all these questions and to evolve a national consensus. Mr. Vice-Chairman, Sir, when Shri Advani replies to the debate, I would like to ask

[SHRI R. K. MISHRA]

him whether Mr. Jayaprakash Narayan or his other supporters have been able lo put forward any viable alternative on all these issues during the last nine months of his movement. Have they been able to evolve a consensus on the question of electoral reforms ? In this House itself, we have heard viewpoints for and against proportional representation. We have heard different viewpoints from the opposition benches themselves. When we go into the details of these problems, we will come across many obstacles which will have to be surmounted. The Prime Minister and the Law Minister have made it clear that we are prepared to have a dialouge and discussion on this question of electoral reforms.

Mr. Vicc-Chainnan, Sir, there is a lot of talk on the question of corruption. I am very sorry that Shri Jayaprakash Narayan is in the company of people who arc the most corrupt in the country today. There are many in this House like me and there are others also who did raise the slogan of 'Jayaprakash Zindabad' in their youth and impressionable age. That does not meen that we should allow our emotionalism and sentimcntalism to blur our vision about what is he doing today. This is the basic question and it is more so in the case of Shri Jayaprakash Narayan because he is an example of permanent and total inconsistency and not revolution. Since 1943, as a small school student, I have been observing sometimes very closely and sometimes from u distance, the wide fluctuations in his political opinions. Shri Niren Ghosh and others have talked of Mr. Ghalbor and they have criticised him. What did Mr, Jayaprakash Narayan say about Mr. Ghafoor on that so-called historic day, i. e. March, 30, 1974 ? What did he say ? He said, "From all accounts Mr. Abdul Ghafoor is an honourable man with no excessive fondness for office." From March to November, Mr. Ghafoor, from an honourable man has bcome a completely dishonourable man. 1 am not at all surprised because, as (told you, Mr. Vice-Chairman, Sir, Mr. jayaprakash Narayan is an example of permanent, perpetual inconsistency. That is why I say, let us not refer to his past. It is difficult to go into the past of any man because a man is a growing being, and in the case of Mr. Jayaprakash Narayan, he has been growing and moving left and right. Mr. Jayaprakash of the past—Jayaprakash who was a Communist, Jayprakash who was a Congress Socialist, Jayaprakash who was a Sarvodaya leader. Therefore, let us not go into the past. And there is also no point iu referring to corruption under the various institutions with which he has been connected. 1 do not want to go into that. I want to point out to that on this question of corruption, today, is it a fact or not that a leading industrialist, a leading chain-newspaper-owner of this counlry___

DR. Z. A. AHMED : Goenka.

SHRI R. K. MISHRA: ..against whom there are CB1 cases, against whom there are charges of misappropriation of funds of shareholders, against whom there are charges of blackmarketing is one of the closest persons of Mr. Jayaprakash Narayan '? I am not referring to the past ___

SHRI SUBR1MAN1AN SWAMY :

I As you were.

SHRI R. K. MISHRA : I am asking : Is I it a fact or not that the Ministers of Punjab j against whom the Chungani Commission i is enquiring into the charges of con uption..

SHRI SUBRAMANIAN SWAMY : What about Bansi Lai ?

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI j V. B. RAJU) : No running commentary please.

I

SHRI SUBRAMANIAN SWAMY : I am helping him.

SHRI R. K. MISHRA : Therefore, is it not a fact that these Ministers against whom the charges of corruption are pending before a Commission of Inquiry were th£ people who accompanied Mr. Jayaprakash Narayan in the course of bis visit to Punjab ? That is why I am saying it is very easy to preach sermons to Others. It is very difficult even for a manlike Mr. Jayaprakash Narayan to practise. Corruption has become all-pervasive. It is a product i f the acquisitive society in which we are

living ; it is a product of the value system which has been imposed upon our people; it is a product of administrative malpractices to which all of us, belonging to all sections of the country, are a party— all the teachers, traders, shop-keepers and others. Are they not part of it ? So, it has to be fought unitedly ; and we rise above party considerations, we look to the problem in the national perspective, and we try to create a climate in which not only the Congress Party—the Congress Party being the largest party in the country must set norms so that corrupt people are not givsn any social respect—but also the Opposition parties, specially those leaders who claim to be fighting corruption should set the standards. And the Opposition leaders who claim to be fighting corruption, when they do not set these standards, they do not have the moral authority to speak about corruption.

(Time bell rings.)

I would also like to submit that I accept, I concede there are impefections in our present system. There is no doubt about it . But it is a fact or not that this imperfect system hai enabled the poor people of this country to mo.e forward ? Is it a fact or not that in ^pite •of its imperfections, we have been able to preserve democracy in this country when democracy has gone as under in other countries ? Is it not a fact that in spite of imperfections political consciousness has grown and spread in this country ? While we have to improve this system and identify the deficiencies, it does not mean that we throw the baby with the bath water. Therefore, Mr. Vice-Chairman, Iwould like to point out to you that I heard very carefully Shri Advani's reference to press and his veiled attack on the Prime Minister. Now, I-remember that when Shri Krishna Ballabh Sahay was the Chief Minister of Bihar, Shri T. J. S. George, Editor of the Searchlight was arrested without any rhyme or reason, many of us, journalists, went to Shri Jaya-prakash Narayan and begged of him to arrange for the release of Shri T.J.S. George who had been arrested and put into jail but he refused. Not only that, Sir, I would like to point out to you, Mr. Vicc-Chairman, what he said when Dr. Ram Manohar Lohia was arrested in 1965 an when Shri Krishna Ballabh Sahay was the Chief Minister of Bihar. This I am quoting from Mr. Mandal, who was the former Chief Miniseter of Bihar and he says:

1965 में बिहार में जब श्री कृष्ण बल्लभ सहाय की सरकार थी और स्व० डाक्टर राममनोहर लोहिया गिरफ्तार हुए थे तब जयप्रकाश बाबू ने कहा था कि डा० लोहिया उलझाव और अराजकता पैदा कर रहे हैं। लेकिन आज विधायक को छाती पर छुरा दिखाकर जो इस्तीफा नहीं दें उसके मुंह पर कालिख लगा कर त्याग-पत्र लेना क्या उलझाव-अराजकता पैदा करना नहीं है। आज बिहार में यह कौन फैला रहा है?

It is not a fact that in spite of imperfections political consciousness has grown and spread in this country ? White we have to improve this system and identify the deficiencies, it does not meafl that we throw the baby with the bath water. Therefore, Mr. Vice-Chairman, I would like to point out to you that I heard very carefully Shri Advani's refrence to press and his veiled attack on the Prime Minister. Now, I remember that when Shri Krishna Ballabh Sahay was the Chief Minister of Bihar, Shri T. J. S. George, Editor of the Searchlight was arrested without any rhyme *or* reason, many of us, journalists, went to Shri Jayaprakash Narayan and begged of him to arrange for the release of Shri T. J. S. George who had been arrested and put into jail but he refused. Not only that, Sir. I would also like to point out to you, Mr. Vice-Chairman, what he said when Dr. Ram Manohar Lohia was arrested tin 1965 and when Shri Krishna Ballabh Sahay was the Chief Minister of Bihar. This I am quoting from Mr. Mandal, who was the former Chief Minister of Bihar and he says :

It is true, Mr. Vice-Chairman, that the educational system in our country butlers from many inadequacies and many distortions but it is a fact that millions of poor people in our country, children of harijans, adivasis and others, for the first time have got an opportunity to learn the three R's.

[SHRI R. K. MISHRA] Shri Jayaprakash Narayan has called upon the students in Bihar, especially the poor students to boycott the schools but I am happy that they have refused to respond to this call. By doing so, he is only trying to make backward people more backward. In conclusion, I would say that on all the four counts this movement has not proved to be a popular movement. *(Time bell liags)* His call to the ML.As. to resign from the Assembly did not meet with any favourable response and only 34 Members out of 319 have resigned. On the question of his call to students to boycott their studies for one year, the students have refused to respond positively. On the question of his call to the people not to pay taxes, the people have not only not responded, but they have come forward with greater eagerness to pay taxes and as Shri Malaviyaji pointed out on all these three counts people have refused to respond to his call. If the game of numbers is any proof, then you cannot say that when Congress organises a rally or C.P.I, organises a rally, it is done because of State protection and vrith State support and all those things, and when you organise a rally, it has got the popular support. *(Time bell rings)* If the game of numbers is any proof that also has been proved, is being proved and will definitely be proved. The people of Bihar are not with this agitation and they regard it as an attack on democracy and as some of the earlier speakers have pointed out, the people of this country will fight for the defence of democracy because this is the surest guarantee that we will move towards our goal.

SHRI LAL K. ADVANI : Sir, I want to rise on a point of personal explanation. There was a reference to me saying that when I reply to the whole debate, I may clarify some points. Perhaps under the Rules I am not allowed to reply. It was said that there should be no talk on the question of dissolution. My point is that there is no scope for that because we believe that the people of Bihar want the dissolution of the Assembly. If your stand is that they do not want the dissolution of the Assembly, I challenge that. In that case you accept an opinion poll and we will see whether they want to dissolve the Assembly or not. If the people decide that they want dissolution, dissolve it.

SHRI N. G. GORAY (Maharashtra) : Sir, listening to the debate today, one has *to* conclude that no consensus so far as *the* Bihar issue is concerned is possible. Last time when we discussed Bihar in this very House, I had some hope that efforts would be made to bridge the gap between the position that the Government has taken and the position that thas been taken by Jayaprakash Narayan. But today, Sir, the scenario seems to have changed completely. The postures have become very rigid and the *bona fide*s of Shri Jayaprakash Narayan are in question. Sir, I do not know whether there is anybody in this House who knows Jayaprakash Narayan more closely then I because, Sir, right from 1932 when we were together in the Nasik jail and we conceived the idea of starting the Congress Socialist Party, we have been together. There have been occasions when we differed and parted company. But, whatever the fluctuations, whatever the differences, my respect for Jayaprakash Narayan has never lessened. I have always considered him as a noble-minded man, a fearless man, a patriot without parallel. But, today I do not want to bring in Jayaprakash as a central piece of this debate. A lot of time was wasted either in showering praise on Jayaprakash or in condemning him but, Sir, I do not want to do either. I would only like to analyse what J.P. is trying to evolve and I would like to say it is for this House to consider whether the aims and objectives of Jayaprakash Narayan are in conflict with our ideas and values of democracy.

Sir, while speaking from the floor, you, raised this very question : What is the objective of this movement ? That was a very pertinent question and I would like to say something about it. But, before that I would like to say that I am not going to make a grievance that Jayaprakash was assaulted or was hurt. I am not going to make any grievance that he was not being treated as he should have been. After all, he is leading a rebellion, a revolt. I do not want to mince words so far as the objective or intentions of Jayaprakash Narayan are concerned : He is leading a revolt. Now, a man who is leading a revolt must be ready to suffer for it. Just as when the armies come to a clash, even the generals get killed, maimed or disabled,

nobody can make a grievance of that. And when on one side the entire might of the Government has been mobilised and on the other side Jayaprakash and the people he represents are mobilised and they meet in confrontation and when the Government has decided to put down this movement—just as Dr. Ahmad wanted the Government to do—I do not see why we should have a grievance when a man Itke Jayaprakash gets hurt.

Sir, when I visited Bihar I came across a case of two young school boys who had just emerged out of a hotel and with a single bullet were shot dead on the spot. They were the followers of Jayaprakash. If the followers suffer like that, why should we have a grievance when the leader is hit ? Jt does not matter at all. And I hope Jayaprakash Narayan will be the last person to pick a row over this incident. If he wants to march forward, he must be ready for this sort of treatment. But, Sir, what I wanted to place before this House is, what are the issues. The central issue is that in spite of all the talk about agreement and consensus on various issues like electoral roll, eradication of corruption, etc., to be very frank, Shri Jayaprakash Narayan and we who are with him do not believe that the Ghafoor Government in Bihar or the Indiraji's Government here is the instrument of the change that you and we desire. Let us be very frank about it. Sir, when the Communist Party during the freedom days condemned the Congress movement led by people like Gandhiji, Subhas and Jawaharlal Nehru, who were much taller than the present leadership, as a bourgeois party, as a bourgeois movement, what were they considering ? Were they considering the character of Subhas Bose or Gandhiji or Jawaharlal Nehru or Jayaprakash Narayan in 1942 ? No, they thought that if these people succeeded, there will be a bourgeois government and it may be the bourgeoisie which will prosper under their rule. That is why as Communists they opposed it, opposed it tooth and nail, went to the extent of saying, as Mr. Dange said in Bombay that if the Quit India people come to you and ask you to go on strike, slap them in the face because they are telling you something which may appear to be anti-British, bot which is really anti-demociratic. So,I was not surprised when Dr. Ahmad asked you to take a firm attitude and derl with Shri Jayaprakash Narayan in a firm manner and when he said that Shri Jayaprakash Narayan is a man who has far-reaching designs. I have never known Shri Jayaprakash Narayan like that but I knew Dr. Ahmad when he joined the CSP, the Congress Socialist Party that he had far-reaching designs of his own.

DR. Z. A. AHMAD : All of yon were there. Mr. Masani was there and all of you had far-reaching designs.

SHRI N. G. GORAY : But I am not just now talking about Mr. Masani. I am talking about you. Now look here. So, now I am surprised that Dr. Ahmad has read so much into the heart of Shri Jayaprakash Narayan. In his opinion he has been designing right from 1952, also his hatred for Shri Jawaharlal Nehru has now got transformed into hatred for Indiraji and that is why he is taking advantage of it; taking advantage of what ? Again and again in this House it has been said, Sir, even you also said it, that because of the economic circumstances, because of the hardships of the people, these people are trying to take advantage. Now what are the political parties for ? If you look at it from one side it is taking advantage, if you look at it from the other side it is giving tongue to the miseries and the hunger of the people. So, it will depend on how you look at it. What did you do in 1967 or in 1971 when you raised that noble slogan *'garibi hatao'* ? Were you not trying to take advantage of the poverty that has been the curse of this country for centuries together ? How did you get that massive vote of 43 per cent or 48 per cent ? You got it because yon made the people believe that it is your party which is going to deliver them out of poverty and now after five years you find that the poverty is not diminishing but it is growing . Shri Krishan Kant has been saying that, Shri Chandra Shekhar has been saying that, Shri Dharia has been saying that and so many people from this side and from thct side have been saying that. More and more people are being pushed down the poverty line because the prices are going up and up. Prices going up means more and more people are being

[Shri N. G. Goray]

pressed down the poverty line. And perhaps that Is why the Prime Minister, a few days back, said: Yes, we gave the slogan of *Garibi Hatao,* but people are expecting so much out of us. Pray, I would like to ask her, what are the people expecting ? Have not the people the right to expect two square meals a day ? What more are they expecting ? Today in the papers you must have read that the Assam Government ultimately had to admit that there had been starvation deaths. Hundreds of people in that State had died of starvation. They had to admit it. After some time the Chief Minister of West Bengal will have to admit that there have been starvation deaths. In Madhya Pradesh in the eastern Madhya Pradesh area, people have been in exodus because they have nothing to eat there. In Bombay people are on the footpath, in Poona people are on the footpath from the Marathwada side because they have nothing to eat. Now, these are the forces from which this movement is springing up. It is not Jayaprakash Narayan. It is not his designs. It is not his machinations. It is not his ambition. It is these basic forces which are trying to assert themselves. What do you want in this country ? Do you expect that the entire superstructure of our society and the walls of that superstructure should have till eternity the murals of misery and the panels of poverty ? I want people to speak out even if they curse me. I want these frozen people to have legs, so that they can walk. I want them to develop hands, so that they can also destroy if they like, but let them be men and women. Let them not be dumb-driven cattle so that if they get some little food they survive and if they do not get it they die. When you accuse Jayaprakash jl, all that it amounts to is those people who die of hunger have no right to say : We are dying of hunger and we will not die. This is what you want to say in effect and this is exactly what Jayaprakashji wants to oppose. Why *is* he against Mr. Ghafoor ? It is not a personal issue at all. Now.my hon. friend has pointed out what J.P. has said that Mr. Ghafoor is an honourable man, but what does it mean ? What do you expect from Jayaprakashji ? Jayaprakashji is a man who will not condemn any one like that. He will not say that you are a corrupt man. He will not say that you are a *Badmash.* He will only say that your Government is not delivering tho goods. This is the basic question in Bihar It is going to be the basic question unj binr. and everywhere else. One point you have not mentioned. How many times has Mr. Bhupesh Gupta accused the Government of not delivering the goods ? And there I suppose the Communist Party cannot take any objection to J. P.

DR. Z. A. AHMAD : He is referring to the forces behind him.

SHRI N. G. GORAY : I am coming to that. Now, what did he do ? He is approaching the people. He is not approaching any parties. Let us be very frank. He never came to the Socialist Party. He never went to the Jana Sangh. He did not go to any party. It is we who went to him because the people are with him. We found that we could not make the people rise. We could not make the people rise which was our dream and the dream of the communist party also. We perhaps proved too small and perhaps we could not move with confidence among the people, but here was a man who has never dabbled in politics in the last twenty years. May be he could not carry conviction to you, but to the people he has carried conviction that he was above suspicion and above ambition. That is why people flock to him. Everybody is saying he has failed everywhere, the students are not listening to him, the workers are not with him and the peasants are not with him. Then, why is it that in Bihar there is no room for Satyagrahis in the Jails ? Why is it that In Bihar even middle schools have been taken over and turned into jails ? *Why* is it on the 4th November Satyagrahis were taken from one jail to another ? The jailers said they had no room and, therefore, they had to put them in a botanical garden and they fenced it around ? Therefore what I am saying is that you must try to rise above your own narrow considerations and try to find out what is the miracle that J. P. has brought about. In fact it is no miracle. The simple thing is that the people wanted a leader whom they conld trust, and they thought that

Jayaprakash Narayan was the man who could fulfil the need. Just now my friend in a very eloquent speech said that these are issues which we should solve together. What does it mean ? That means that that so far as those issues are concerned, you become partyless. That is exactly what Jayaprakash Narayan is saying, that this country is confronted with certain crises which cannot be solved by any party, even by the Congress Party—and this need not be told to them by Jayaprakash Narayan. They themselves admit that they have not been able to solve them. Then Jayaprakash Narayan says, all right, if you cannot solve them alone, you solve them coming together ; let us come together and solve them, unnecessarily saying—I was surprised to hear that—Jayaprakash Narayan is talking of a partyless democracy." ? Did not Marx talk about a partyless government or a society without a government ? Does it mean that Marx here and now wanted a society without a government ? Why are these learned Marxists trying to confuse the issues ? Jayaprakash Narayan has again and again said, "I am not asking for a partyless government here and now." He has again and again said, "I know that there will be parties." but he wants to create a sort of a watch-dog public opinion in every village. If he succeeds in that, then all this waywardness of the MLAs and the MPs and the panchayat chiefs and all these self seeking people will be stopped. You have no machinery to do it. You know how the MLAs and MPs and other people behave. What is the sanction that could stop them from doing all these things, prevent them from indulging in these things ? Jayaprakash Narayan says that the only sanction is to awaken the electorate, and that is what he is trying to build up. Therefore, I fail to understand why it is that people again and again are saying that no, there are no bridges between Jayaprakash Narayan and ourselves. Innumerable bridges are there, innumerable links are there.

The last point that I would like to urge upon is , can this country afford at this juncture to enter into a sort of fratricidal war 7 I ask you this question in all seriousness. What is our state of affairs ? The agricultural growth has come almost to nil. Sir, a country like Israel has maintained 7 -5 per cent of agricultural growth every year during the last five years. And what is our state of affairs ? What is happening on the industrial front ? What is happening to our Plans ? No Plans. My friend, Shri Dhar, has no work at all. He comes to the House and he goes back. There is no Plan. What can the Planning Minister do ? It seems that nobody in this House is concern*.! about it. I feel very much concerned. What will this country come to ?

So, I am again saying, though I have very little hope, that it seems that a decision has been taken to crush out Jayaprakash Narayan and his movement. Well, if that is so, he will be crushed. I do not know. May be he will not be crushed. May be he himself may be crushed but the movement will grow. It is quite possible. I warn you. Don't try to underestimate what he is doing. It has already reached Punjab. And I tell you, there are ominous signs. When he went to Ludhiana, in the massive rally of five lakhs or more....

SHRI J. S. ANAND (Punjab): Not five lakhs, fifty thousand.

SHRI N. G. GORAY : All right , fifty thousand. I accept that figure. All right. Let us accept this figure. Yours in Bihar yesterday was five lakhs and that was fifty thousand. Therefore, what I am saying is that there is the most sinister sign or something that could serve as a warning that there are hundreds and thousands of ex-servicemen joining the movement __

SHRI J. S. ANAND : Only 155 ex-servicemen.

SHRI N. G. GORAY : All right. If there are 155 ex-servicemen, I am telling you this is a sufficient warning to a Government which wants to keep democracy in this country alive.

Only one last word. I am again appealing to the Congress not to go by the advice that has been tendered by my friend, Mr. Z. A. Ahmad. He wants a showdown. He wants a comfrontation. He wants complete elimination of whatever

[Shri N. G. Goray]

Mr. Jayaprakash Narayan and his followers are asking for. It is for you to judge whether Mr. Jayaprakash Narayan is a true and genuine friend of democracy in this country or whether it is Dr. Z. A. Ahmad and Mr. Bhupesh Gupta. In the entire world wherever the Communist Party is in power there is nodemocracy and where they are in a minority there is democracy. Therefore, they are not the defenders of democracy. Their game is very clear. It is for the Government to decide.

SHRI BHUPESH GUPTA : One thing. May I know why Mr. Jayaprakash Narayan does not say anything against monopolies by name or even mentions the word monopolists, hoarders and profiteers ? Why he is not doing that ? How is it they are supporting them through their journals ? How do you explain that ? Fight by all means the Government when it goes undemocratic, when it is responsible for soaring price or when it stands for the exploiting classes. But Mr. Jayaprakash Narayan up to now—I Save been very careful in reading his speeches — has not uttered even a word.

श्रीमती प्रतिभा सिंह (बिहार) : उप-सभाध्यक्ष महोदय, बिहार से संबंधित और श्री जयप्रकाश जी से संबंधित आज विवाद चल रहा है। मैं बिहार की होने के नाते इस बहस में कहीं-कहीं पर थोड़ी सी इमोशनल हो सकती हूं। उपसभाध्यक्ष महोदय, जयप्रकाश जी सर्वोदय के नेता हैं, भूदान के नेता हैं और बहुत सम्मानीय नेता हैं बिहार के। बिहार के लोगों की उन पर आस्था है इसलिए जो कुछ इस समय हो रहा है उससे बिहार से संबंधित एक पक्ष बहुत दुखी है और उसका कारण उपसभाध्यक्ष महोदय, आपके माध्यम से सरकार और सदन के सामने रखना चाहती हूं। इस समय का आन्दोलन क्या है? इस समय का आन्दोलन इस बात पर है कि बिहार की विधान सभा को भंग करो। क्यों भंग करो? क्योंकि उस का कहना है कि बिहार विधान सभा भंग करने से बिहार से भ्रष्टाचार मिट जाएगा। आज बहस के सिलसिले में कुछ माननीय सदस्यों ने गुजरात की बात भी उठाई और विरोधी दल के कुछ सदस्यों ने कहा कि कांग्रेस के पक्ष के लोग कहते हैं कि गुजरात की विधान सभा जब तोड़ दी गई तो कहां वहां से भ्रष्टाचार मिटा, कहां वहां शिक्षा का सुधार हुआ, कहां वहां से मंहगाई कम हुई। लेकिन बिहार की परिस्थिति दूसरी है। यह विरोधी दल के लोगों ने कहा है कि कांग्रेस वाले इस बात को उठाते हैं। मैं कहना चाहती हूं कि हां कांग्रेस वाले जरूर इस बात को उठाएंगे क्योंकि आप जब एक बात को कहते हैं और खासकर प्रधानमंत्री जी का नाम लेकर कहते हैं उनकी सरकार तोड़ो, बिहार में सरकार तोड़ो तो मैं उनको कहना चाहती हूं कि जब एक जगह माननीया इन्दिरा जी ने उनकी बात मान ली और उसमें कोई सुधार नजर नहीं आया तो बिहार में कैसे समझ लें कि सुधार होगा?

ऐसी स्थिति में अगर बिहार की एसेम्बली को भंग कर दिया जाय तो क्या भ्रष्टाचार खत्म हो जाएगा। मैं आपके माध्यम से यह कहना चाहती हूं कि पहले यह कहा गया कि चुनाव नई पद्धति से कराए जाएं जिनमें खर्चे की आवश्यकता न हो। इसमें कोई संदेह नहीं है कि इस प्रकार की पद्धति से चुनाव कराने पर कांग्रेस को भी फायदा होगा क्योंकि कांग्रेस के पास पैसों की कोई झड़ी नहीं लगती है। अगर खर्चा कम हो जाय तो जिस तरह से विरोधी दल के माननीय सदस्यों को आसानी होगी उसी प्रकार से हमको भी आसानी होगी। बिहार के अन्दर सन् 1967 में विरोधी दल में बैठ चुके हैं। और इससे नहीं घबराते हैं।

इसके अलावा तीसरी बात यह कही जाती है कि शिक्षा प्रणाली में सुधार हो,

लेकिन सुधार के लिए ब्ल्यू प्रिण्ट नहीं देते हैं। उन्होंने सिर्फ यह कहा है कि विद्यार्थी पढ़ाई छोड़ दें। वैसे ही बिहार पहले से ही पढ़ाई में पंडित है, वहां के विद्यार्थी आई० सी०एस० और आई०ए०एस० की परीक्षाओं में कभी भी काफी संख्या में नहीं निकलते हैं और अब इस प्रकार से उनको पढ़ाई छोड़ने के लिए कहा जाएगा तो उस राज्य की क्या स्थिति होगी, यह विचारने की बात है। वहां की जनता वैसे ही बहुत पिछड़ी हुई है। बिहार की गरीब, पिछड़े वर्ग की माताएं अपने बच्चों को किसी प्रकार से जमीन बन्धक रखकर भी पढ़ाना चाहती थी कि वे कालेजों में जाकर पढ़ें, लेकिन उनसे कहा जा रहा है कि पढ़ाई छोड़ दो। ऐसी स्थिति में उस मां से पूछिए जिसने अपने बच्चों को बड़ी मुश्किल से अब तक पढ़ाया है। मैं कल लोक सभा में श्री श्याम नन्दन मिश्र जी का भाषण सुन रही थी। उन्होंने कहा —

सच कहना अगर बगावत है तो समझो हम भी बागी हैं। नई उम्र के लड़के लड़कियों को स्लोगन बहुत ही जोश में लाता है। वे आगे पीछे की नहीं सोचते। जब हिंदुस्तान में आजादी का आन्दोलन चला था तो भारत की जनता ने ब्रिटिश राज के खिलाफ बगावत की थी। लेकिन आज बगावत किसके खिलाफ की जा रही है? मैंने बिहार में लड़के से पूछा जो इस आन्दोलन में शरीक था कि तुम्हारी पढ़ाई में तुम्हारे पिता जी को कितने पैसे खर्च करने पड़ते हैं तो उसने बताया कि 300 रु० खर्च करने पड़ते हैं और मैंने पूछा कि तुम्हारे पिता जी की कितनी तनख्वाह है तो उसने बताया कि 600 रु० और छः मेरे भाई-बहन हैं। ऐसी स्थिति में आप अन्दाजा लगा सकते हैं कि वहां पर किस प्रकार की स्थिति है। तो जरूरत इस बात की है कि हर आदमी अपने घर से सफाई आरम्भ करे।

उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं यह मानती हूं कि श्री जयप्रकाश जी एक सम्मानित व्यक्ति हैं और एक महान व्यक्ति हैं। इस देश के महान नेताओं में उनकी गिनती है। इस देश के नहीं, बल्कि सारे संसार के महान नेताओं में हैं। वे सर्वोदय नेता हैं। हमारी उन पर आस्था थी तभी तो जब उन्होंने ग्रामदान की बात कही तो हमने ग्रामदान किया, और उन्होंने जिला दान करने की बात कही तो हमने जिला किया। उन्होंने प्रदेश दान के लिए कहा तो हमने बिहार का भी दान कर दिया। मैं पूछना चाहती हूं कि इतना सब करने के बाद हमारे प्रदेश में कौन-सी प्रगति हुई, कौन-सा आर्थिक विकास हुआ, उन्होंने कौन-सी शिक्षा प्रणाली में सुधार किया। हर गांव में सर्वोदय और भूदान की संस्था थी। गांवों के पंचायतों के अन्दर श्री जयप्रकाश जी के भी आदमी थे। वहां पर उन्होंने किसी प्रकार से कोई परिवर्तन किया है? उनकी जो कल्पना थी और जिस काल्पनिक आकाश में वे पहुंचना चाहते थे और इस देश की जनता को पहुंचाना चाहते थे, उसमें उन्होंने कहां तक सफलता पाई? ये सब बातें ऐसी हैं जिन पर गहराई से विचार करने की जरूरत है। मैं किसी के कैरेक्टर एसेसिनिशन की बात नहीं कहती हूं। मैं यह भी नहीं कहती हूं कि उनमें ईमानदारी नहीं है। ईमानदारी थी और है। उपसभाध्यक्ष महोदय, इस देश में ईमानदार लोगों की कमी नहीं है, हमारे देश में एक से एक भले आदमियों की भी कमी नहीं है, हमारे देश में, इज्जतदार आदमियों की भी कमी नहीं है, हमारे देश में ऐसे त्यागी लोगों की भी कमी नहीं है जिन्होंने अपना सब कुछ गवा दिया लेकिन परदे पर कभी नहीं आए, जिनको दुनिया ने कभी नहीं जाना। जयप्रकाशजी को तो जाना। उनमें आस्था थी, गांव-गांव में उनको थैली मिली, उनके पास कार्यकर्ता थे, उनके पास समय था, देश-विदेश से सामान मिला।

[श्री मती प्रतिभा सिंह]

उन्होंने उसका क्या किया ? मैं पूछना चाहती हूं, उन्होंने बिहार के लोगों का, उस गरीब प्रदेश का क्या हित किया जो आज इस उम्र में वयोवृद्ध नेता आगे बढ़े हैं बच्चों को भड़काने के लिए । कहा जाता है कि जनमत की पुकार सुन रहे हैं, कहा जाता है कि देश में आग लग रही है। मैं यह कहूं, जैसा किसी कवि ने कहा था कि : हम लोग आग लगाने आए हैं हम आग बुझाना क्या जानें? क्या जयप्रकाशजी के पास समय है कि इस आग का जो परिणाम होगा उससे देश को संभाल सकेंगे ? आज है क्या उनके पास इतना समय ? जो लोग उनके पास उनके दल में हैं आन्दोलन में पंक्ति बांध कर प्रोसेशन में आगे आगे चलते हैं, शिक्षा के सुधार की बात कहते हैं, उनमें से कितने लोग हैं जो मुख्य मंत्री बन चुके, जो शिक्षा मंत्री बन चुके और जिस वक्त वे लोग बिहार में मुख्य मंत्री और शिक्षा मंत्री थे उस समय क्या हुआ, रिकार्ड मंगा कर देखें। यह इन्दिरा गांधी की सरकार है जो विरोधी पक्ष की इन असफलताओं के आंकड़े नहीं देखती है क्योंकि जनतंत्र में विश्वास है। इन लोगों के शिक्षा मंत्रित्व काल में वहां लोअर कोर्ट में, हाई कोर्ट में और सुप्रीम कोर्ट में भी हर स्कूल की मैनेजिंग कमेटी को लेकर, हर कालेज की मैनेजिंग कमेटी को लेकर हजारों मुकद्दमें पड़े हुए हैं। स्कूल और कालेजों में जातिवाद को लेकर झगड़े हुए, एक जात के लड़कों ने दूसरी जात वाले का खून किया और वही लोग आज जयप्रकाश जी के कंधे पर चढ़ कर कहते हैं इन्दिरा जी शिक्षा में सुधार क्यों नहीं करती है ? इन्दिरा जी सुधार करना चाहती हैं। इन्दिरा जी में अगर जनमत की बात सुनने की खवाहिश नहीं होती तो इन्दिरा जी जयप्रकाश जी को बुला कर 90 मिनट बात करतीं क्या ? उपसभाध्यक्ष महोदय, कांग्रेस की सदस्या होते हुए भी मैं कहती हूं, हम लोगों को भी पुलिस के घेरे को देख कर कोई दिल में खुशी नहीं होती, हमारा दिल खुशी से बल्लियों नहीं उछलता। हमें भी तकलीफ होती है। हम नहीं चाहते इस प्रकार के दृश्य को देखना लेकिन करें क्या ? सरकार की अपनी कुछ जिम्मेदारी भी तो होती है। किन्तु 18 मार्च की घटनाएं इसी स्थिति को उत्पन्न करती हैं । उस दिन पटना शहर में जिस प्रकार की घटनाएं हुई उसके बाद सरकार के पास क्या उपाय थे। जिस प्रकार आग लगी, भले लोगों के घरों पर हमला हुआ उसके बाद रास्ता क्या बचा ? जिस समय कर्पूरी ठाकुर मुख्य मंत्री थे, जिस समय स्कूल टीचरों ने स्ट्राइक किया था, तब शिक्षा मंत्री कौन थे ? मिडल स्कूल के और हाई स्कूल ...

डा० रामकपाल सिंह : एकदम गलत बयानी है। दरोगा राय मुख्य मंत्री थे। आप समय का ध्यान रखिए कब हुई थी।

श्रीमती प्रतिभा सिंह : दारोगा राय का मुझे ध्यान है । उपसभाध्यक्ष महोदय, विद्यार्थियों में असंतोष है यह सही बात है है। उस असंतोष के बहुत से कारण हैं। उन्हें नौकरी नहीं मिलती, उनको पढ़ने की किताबें नहीं मिलतीं, उनके मैस की व्यवस्था ठीक नहीं है। उनको बहुत सी जरूरत की चीजें नहीं मिलती हैं तो क्या आज जयप्रकाश जी जैसे वयोवृद्ध नेता उस असंतोष का फायदा उठा कर आग लगाएं ?

उपसभाध्यक्ष (श्री बी० बी० राजू) : अब समाप्त कीजिए।

श्रीमती प्रतिभा सिंह : 5 मिनट दे दीजिए। ज्यादा मैं नहीं कहूंगी। बिहार

से और कोई बोले भी नहीं है, अकेले सिर्फ मैं ही बोल रही हूं।

यहां चुनाव में सुधार की जो बात कही गई है, तो जैसा मैंने पहले भी कहा था कि हम भी चाहते हैं सस्ते चुनाव हों। लेकिन विरोधी दल के लोग मिल कर नया चुनाव क्या कराना चाहते हैं? उसकी भी तो कुछ बात सोचनी होगी। उन्होंने भी बख्शी नाम के एक पुराने आई०सी०एस० आफिसर को निर्धारित किया है कि वह नई चुनाव की पद्धति को निकालें। लेकिन मैं यह कहना चाहती हूं कि जब 6 P.M. सर्वोदय ग्रामों में पंचायतों का चुनाव कराया था तो आपने इस तरह की निलोब पेश क्यों नहीं की, इस तरह के चुनाव करवाये जिसमें खर्च में कमी हो सके? 1967, 1969 और 1972 में बिहार में चुनाव हुए थे। बिहार में दो साल पहिले भी चुनाव हुए थे और आप आज जो कुछ कह रहे हैं उनको क्यों नहीं अजमाया। कम से कम एक कांस्टीट्युएंसी में तो अजमा लेते जिससे यह मालूम हो जाता कि चुनाव में खर्चा नहीं होता है। आपने इस तरह की कोई बात नहीं की जबकि 319 कांस्टीट्युएन्सी में चुनाव हुए थे। माननीय जयप्रकाश जी बिहार में ही थे और उनके पास समय था, कार्यकर्ता थे और साधन थे।

आपने कहा कि सरकार की तरफ से ज्यादती हुई है। उपसभाध्यक्ष महोदय, सही पूछा जाय तो यही सरकार है जिसने पिछले 9 महीनों से बिहार में इस तरह के आन्दोलन के चलने में कोई बाधा उत्पन्न नहीं की है और उसी की वजह से आज भी वहां पर आन्दोलन चल रहा है। *(Interruptions)*. मैं बोलूंगी और श्री रामकृपाल सिंह जी मैं जानती हूं और जनसंघ के चुनावों को देख चुकी हूं।

एक माननीय सदस्य : ये कहां के हैं।

श्रीमती प्रतिभा सिंह : हमारे जिले के हैं। यहां पर प्रत्येक सदस्य ने जनमत की बात उठाई है और यह कहा है कि इन्दिरा जी जनमत की बात को नहीं मानती हैं। मैं एक सवाल पूछना चाहती हूं कि इन्दिरा जी कौन से जनमत की बात को मानें? श्री जयप्रकाश जी के साथ जो लोग हैं उनके जनमत को मानें या फिर सी०पी० आई० ने कल जो जलूस निकाला था, उन लोगों के जनमत को मानें? या जिस जनता ने अपने प्रतिनिधि चुनकर विधान सभा और लोक सभा में भेजा, उस जनता का जनमत मानें? तो मैं यह बात जानना चाहती हूं कि इन्दिरा जी किस जनमत को मानें, यह बात तो स्पष्ट हो? जब चुनाव होते हैं, जब चुनाव का मौका आता है और कांग्रेस के लोग जीत जाते हैं और ये लोग हार जाते हैं, तो कहते हैं कि चुनाव में गड़बड़ी है। (Election rigged हुए हैं। जब इनकी सभा में कोई आदमी नहीं आता है, तो फिर ये आरोप लगाते हैं कि सरकार की तरफ से लोगों को सभा में आने से रोका जाता है। अगर रोक लगाने से लोग रुकते तो 11 तारीख को सी०पी०आई० की सभा में इतने लोग कैसे इक्ट्ठे होते? कोई किसी को किसी भी दल में या सभा में जाने से रोक नहीं सकता है। ये बातें अपने विश्वास और Conviction पर निर्भर करती हैं।

जहां तक बिहार की दुखी जनता का सम्बन्ध है, उनके आंसू पोंछने के लिए आज सभी विरोधी दल के नेता आतुर हैं। किन्तु अब वहां के लोगों पर इसका असर नहीं होगा। आज उसका कलेजा पत्थर का हो गया है। वहां का जो गरीब किसान

[श्रीमती प्रतिभा सिंह]

है, वह जानता है कि अगर फर्टिलाइजर नहीं मिलता है, तो विरोधी दल की सरकार के लोग भी आकर नहीं दे सकते हैं क्योंकि फर्टिलाइजर के जो दाम बढ़े हैं वे विदेशों में क्रूड के दाम बढ़ने की वजह से बढ़े हैं। इसलिए किसान अब सोच रहा है कि वह खेती के नये तरीके अख्तियार करे (green manure) से फायदा उठावे।

जो मजदूर है वह जानता है कि कांग्रेस ने उसको डिगनिटी आफ लेबर दी है और उसके स्थान को और महत्व को स्वीकार किया है। अगर विरोधी दल की सरकार के लोग आ जायेंगे तो यह नहीं दे पाएंगे बल्कि उसमें कमी ही कर सकते हैं, बढ़ोतरी नहीं कर सकते हैं।

उपसभाध्यक्ष महोदय, इन लोगों को दुख है और ये लोग जानते हैं कि चुनाव होने पर ये लोग फिर चुनाव में न आ सकेंगे क्योंकि जनता इन्हें नहीं भेजेगी और ये लोग फिर श्री जयप्रकाश नारायण जी के भी विरोधी बनेंगे। जब श्री जयप्रकाश नारायण की असफलता और विफलता के बारे में कहा जाता है तो इन लोगों को बुरा लगता है और ये लोग कहते हैं कि कांग्रेस वाले जो इस तरह की बात कह रहे हैं, वह नासमझी से कह रहे हैं। ये लोग नहीं जानते हैं कि जिस तरह से इनके दिल में श्री जयप्रकाश जी को भगवान बनाने की इच्छा है (deity) करना चाहते हैं, उसी तरह से हमारे दिल में भी इंदिरा जी के प्रति श्रद्धा और विश्वास की भावनाएं हैं। जब इन्दिरा जी के बारे में ये बोलते हैं, तो उस समय क्या हमारे दिल में चोट नहीं लगती है? क्या हम नहीं बोल सकते हैं कि सर्वोदय और भूदान की बड़ी कल्पना थी किन्तु Implementation असफल रहा है। Idealism और Implementation में बहुत भेद होता है, उपसभाध्यक्ष महोदय, इसलिए श्रीमन् चार बातों को लेकर श्री जयप्रकाश नारायण ने अपना आन्दोलन आरम्भ किया। (1) विधान सभा तोड़ो, (2) चुनाव नया हो, (3) शिक्षा की पद्धति बदलो और चौथी बात उन्होंने कही है कि अगर आप चुनाव नहीं कराएंगे, विधान सभा भंग नहीं करेंगे तो हम गांधी मैदान में बैठ कर नई विधान सभा करेंगे। उपसभाध्यक्ष महोदय, उस विधान सभा के कौन से सदस्य होंगे, वे कहां से आएंगे, उसकी कौनसी तस्वीर होगी, जनसंघ के मुताबिक सरकार की पद्धति होगी या सी०पी०एम० के मुताबिक विचारधारा होगी, कैसे रिप्रेजेंटेशन होगा, इसका कोई ब्लूप्रिंट तो देंगे। या सिर्फ सभी कुछ तोड़ दो बाद की बात सोचने की जरूरत नहीं है। मकान तोड़ना आसान है बनाना कठिन है। उपसभाध्यक्ष महोदय, जयप्रकाश जी बहुत ऊंचे आदमी हैं।

He is a big man. We cannot go near him. He is a towering personality. But the question is that Bihar does not want a towering personality with idealism which cannot be implemented today. It wants food. It wants irrigation. It wants industry.

RE. STATEMENT ON THE RESULTSOF C.B.I. INQUIRY INTO THELICENCE ISSUE

SHRI BHUPESH GUPTA (West Bengal): 1 understand that the House is adjourning for two days. I understand that a statement is being made in the Lot Sabha on the licence matter in pursuance of the promise to this House and to the other House. If the statement is being made in the other House in regard to a matter which is common, I think the same statement should be made in this House also.

SHRI SUBRAMANIAN SWAMY (Uttar Pradesh) : I fully support it.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. B. RAJU) : This debate itself will take some time.

SHRI BHUPESH GUPTA : The point is that he announced there that a statement would be made at 5 -30 P.M. The Government should tell us also so that those who